मूल्य केवल ।) आना

देहली षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री० एच० एस० वात्स्यायन, एम० ए०
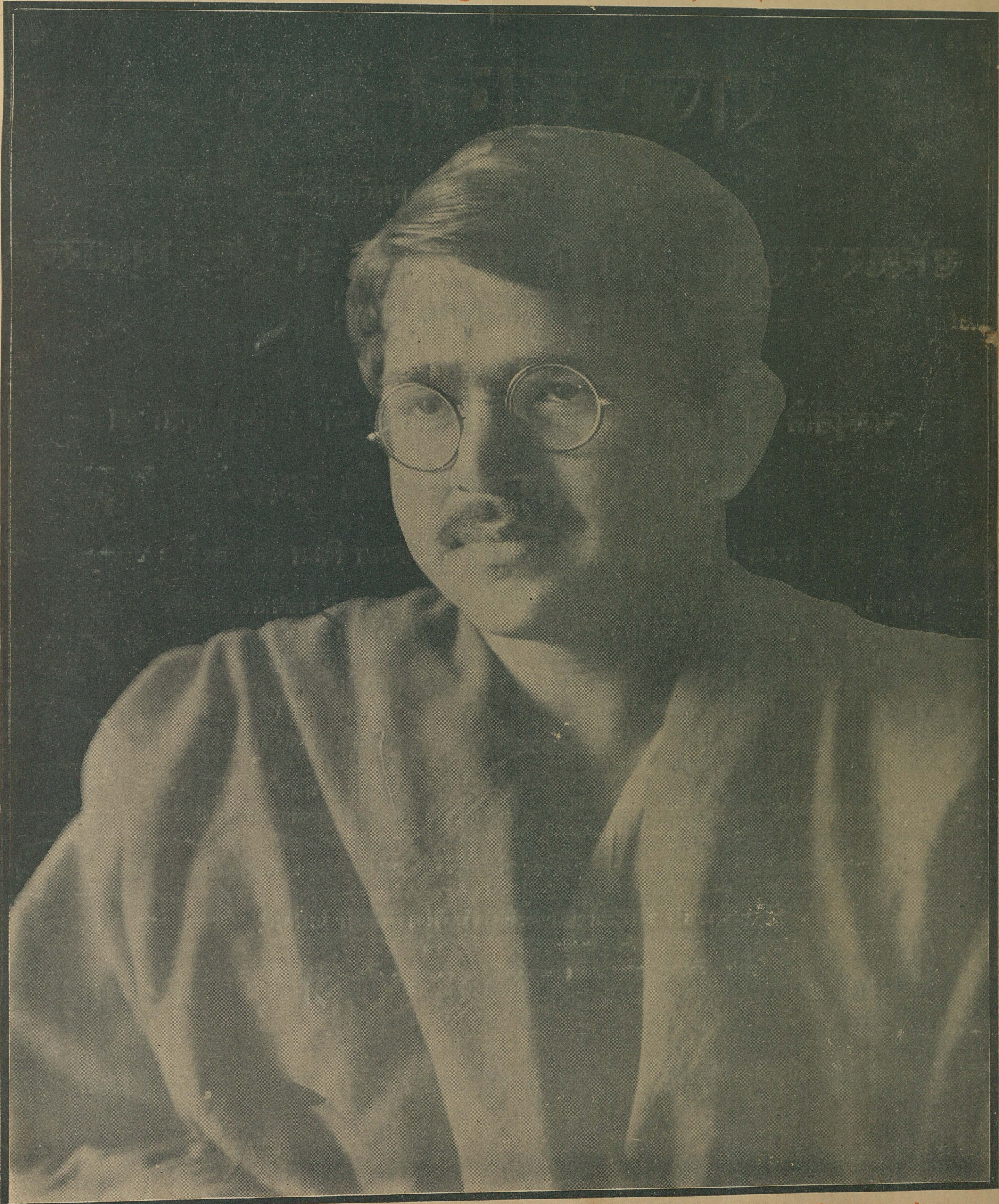
(गिरफ़्तार होने के पूर्व बिना लाइसेन्स के हथियार रखने के अपराध में भी आपको २ वर्ष का कठिन कारावास-दण्ड दिया जा चुका है)

दीवाली का अनूठा उपहार

का
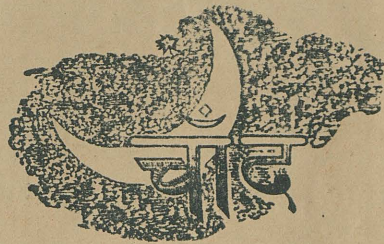
राजपूताना-अङ्क

"भविष्य" और "चाँद" के विद्वान् लेखक—

डॉक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी-लिट्, विशारद

के सम्पादकत्व में प्रकाशित होगा !

इसकी विशेषताएँ :—

राजपूताने की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक दशा का

सच्चा चित्र और सुधार के उपाय

इसमें निम्न-लिखित लेख प्रकाशित करने का उद्योग किया जा रहा है :—

वर्तमान राजपूत कौन हैं—हूण या आर्य ?
मेवाड़—प्रताप से पूर्व और पीछे (सचित्र)
राजपूताने के प्रसिद्ध युद्ध
राजपूताने के प्रसिद्ध क़िले (सचित्र)
जौहर और भीषण आत्मोत्सर्ग (सचित्र)
मुग़ल-कालीन राजपूताना (सचित्र)
राजपूताने की रियासतों से अङ्गरेज़ी सरकार की सन्धियाँ ।
राजपूताना और मराठे
राजपूतों के अन्तःपुर
रियासतों का राज-प्रबन्ध

राजपूताने में राजनैतिक असन्तोष
बीजोलिया और बूँदी
ग़ुलाम और बेगार
राजपूताने के कर
मारवाड़ी व्यापारी
राजपूताने के अङ्गरेज़ी अफ़सर
डिङ्गलकाव्य
मीराबाई के भजन
जयपुर का अजायबघर
राजपूत चित्र-कला
इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि ।

शीघ्र ही ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद
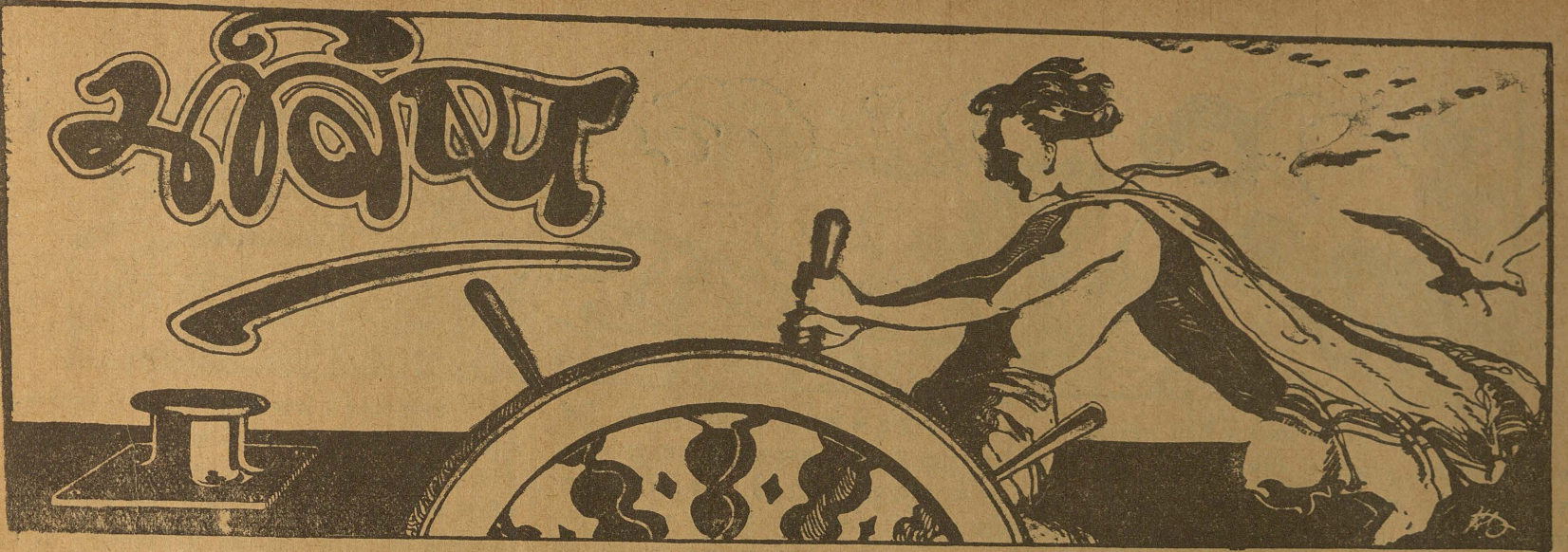
वर्ष २, खण्ड १। | इलाहाबाद—सोमवार ; ६ नवम्बर, १९३१ | संख्या ६, पूर्ण संख्या ५६

"गोलमेज़ का जनाज़ा शीघ्र ही निकलने वाला है"

कॉङ्ग्रेस किसानों की रक्षा के लिए सत्याग्रह-संग्राम आरम्भ करेगी

मोती-पार्क की सभा में पं० जवाहरलाल नेहरू की गर्जना

६ नवम्बर की शाम को इलाहाबाद के मोती-पार्क की एक सार्वजनिक सभा में श्री० जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि—"मैं हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न का कुछ अर्थ ही नहीं समझता। उनकी समझ में ऐसे किसी प्रश्न का अस्तित्व ही नहीं है, और राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स ने इस बात का भेद अच्छी तरह खोल दिया है कि इस तरह का प्रश्न क्यों उठाया जाता है। यह उन लोगों का पैदा किया एक बहाना मात्र है, जो भारत की स्वाधीनता के अधिकार के विरोधी हैं और इसलिए कॉङ्ग्रेस की माँगों का विरोध करते हैं।"

आगे चल कर पण्डित जी ने कहा कि—"राउण्ड-टेबिल कॉन्फ्रेन्स से कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। थोड़े ही दिनों में राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स का जनाज़ा निकलने वाला है और तब हमको फिर से अपना स्वाधीनता-संग्राम आरम्भ करना पड़ेगा। दरअसल सत्याग्रह आरम्भ करने का प्रश्न तो किसानों की दुर्दशा के कारण हमारे सामने अभी मौजूद है। कॉङ्ग्रेस इस सम्बन्ध में समझौता करने की हर तरह से चेष्टा कर रही है, पर यदि उसकी इन सब चेष्टाओं से भी किसानों की विपत्ति का अन्त न हुआ, तो उसे सहन कर सकना उसके लिए असम्भव होगा।

—ढाका की पुलिस ने ४ नवम्बर की रात को रेलवे स्टेशन पर श्री० सुरेन्द्रकुमार चक्रवर्ती नामक कॉलेज के विद्यार्थी को गिरफ़्तार किया। गिरफ़्तारी मि० डुर्नो पर किए गए आक्रमण के सम्बन्ध में हुई है। इसी सम्बन्ध में श्री० सुधांशुकुमार बोस को, जो विन्ध्याचल में गिरफ़्तार किए गए थे, ढाका लाए गए हैं।

—बङ्गाल-सरकार ने श्री० ललितचन्द्र राहा के मुक़दमे की सुनवाई के लिए एक विशेष अदालत नियुक्त की है। इन पर २१ अगस्त को रङ्गाइल में ढाका कमिश्नर मि० कैसल्स पर गोली चलाने का अभियोग लगाया गया है। इसी अदालत में अठाराबाड़ी में १९ सितम्बर को डाक पर डाका डालने के सम्बन्ध में श्री० हेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती, गोपालचन्द्र आचार्य और श्री० शचीन्द्रनाथ बोस पर मुक़दमा चलाया जायगा।

—नारायणगञ्ज में जयगोविन्द राय की दुकान की डकैती के सम्बन्ध में पुलिस ने चार नवयुवकों को गिरफ़्तार किया है। इनमें से एक श्री० चाँदमियाँ नामक मुसलमान विद्यार्थी भी है।

—मैमनसिंह में श्री० अशोकचन्द्र राय, कुवेन्द्रचन्द्र गुहराय और क्षितीशचन्द्र सेन नाम के तीन व्यक्ति षड्यन्त्रकारी होने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—सीवान (सारन, बिहार) में दो ज़मींदारों में सदलबल दङ्गा हो गया। छः आदमियों को छर्रा लगा है, जिनमें से तीन की हालत चिन्ताजनक है।

—ढाका के कमिश्नर मि० कैसल्स, जो ५ ता० को अस्पताल से लौटे हैं, उसी दिन इङ्गलैण्ड को रवाना हो गए। आप पर रङ्गाइल में गोली चलाई गई थी।

—लन्दन का ६ नवम्बर का समाचार है कि जापान की सेनाओं और चीन के ५,००० सिपाहियों में खुल्लम-खुल्ला युद्ध शुरू हो गया है। इस घटना की गम्भीरता इस कारण और भी बढ़ जाती है चूँकि घटनास्थल से सोवियट रूस का प्रभाव-क्षेत्र बिल्कुल पास है। यह युद्ध बराबर २४ घण्टे तक जारी रहा। पहले जापानियों को हटना पड़ा, पर बाद में सहायता मिल जाने पर उन्होंने चीनी फ़ौजों को भगा दिया। ख़बर है चीन वालों के एक सौ आदमी मारे गए। चीन के दूत ने लीग ऑफ़ नेशन्स से इस मामले में हस्तक्षेप करने की प्रार्थनाकीहै।

—५ ता० को महात्मा गाँधी इङ्गलैण्ड के पोस्ट-मैनों के यूनियन के कार्यकर्ताओं से मिले। आपने भारत के डाकख़ाने वालों की योग्यता की बहुत प्रशंसा की, पर कहा कि वे राजनीतिक कार्यकर्ताओं की चिट्ठियों को छुप के खोल लेते हैं। काश्मीर के उपद्रव के सम्बन्ध में महात्मा जी ने कहा कि चाहे इस घटना से यह सिद्ध होता हो कि हिन्दू और मुसलमान मिल कर प्रेमपूर्वक नहीं रह सकते, पर इसकी ज़िम्मेदारी अङ्गरेज़ी सरकार पर है। उसने देशी नरेशों को इस बात की स्वाधीनता नहीं दी है कि समय पर अपनी प्रजा की कठिनाइयों को उचित रीति से हल कर सकें।

—श्रीमती मीराबाई ने लन्दन से सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती को एक पत्र भेजा है, जो १६ अक्टूबर का लिखा है। इसमें कहा गया है कि म० गान्धी कॉन्फ़्रेन्स से छुटकारा पाने के बाद एक महीने तक यूरोप के देशों का भ्रमण करेंगे। इसमें से दस दिन वे रोमाँरोलाँ के निवास-स्थान पर बिताएँगे।

—यू० पी० सरकार ने ५ नवम्बर को एक कम्यूनिक प्रकाशित करके घोषणा की है कि अनाज का भाव सस्ता हो जाने से लगान में से १ करोड़ ९ लाख ४१ हज़ार रुपया किसानों के लिए माफ़ कर दिया जायगा।

—काश्मीर की दुर्घटना के सम्बन्ध में नवीन समाचारों से विदित होता है कि ३ नवम्बर के दङ्गे में ४ मुसलमान और २ हिन्दू मारे गए थे। अब शहर में गोरी सेना का पहरा है और किसी तरह का उपद्रव नहीं हुआ। झेलम से एक गोरी रेजिमेण्ट मीरपुर भेजी गई है। ५ ता० को स्यालकोट से १००० हज़ार वालण्टियरों का एक जत्था काश्मीर को रवाना हुआ है। स्यालकोट के गाँवों में जो नए जत्थे बन रहे थे, वे जम्मू में गोरी सेना के पहुँचने की ख़बर सुन कर तितर-बितर हो गए। गिरफ़्तार स्वयंसेवकों के प्रबन्ध के लिए सरकार ने एक अनुभवी मुसलमान अफ़सर को नियुक्त किया है और वालण्टियरों को कम्बल आदि आवश्यक चीज़ें भी दे दी गई हैं।

—एसेम्बली के ५ सिक्ख सदस्यों ने महाराज काश्मीर को तार-द्वारा सूचित किया है कि वे उनकी सेवा और सहायता के लिए हर तरह से तैयार हैं।

—६नवम्बर को सुबह बम्बई की गिरनी कामगार (लाल झण्डा) यूनियन के प्रेज़िडेण्ट श्री० जी० एल० खण्डालकर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—नासिक के अछूतों का मन्दिर-सत्याग्रह ५ ता० को आरम्भ हुआ और उसी दिन समाप्त हो गया। मैजिस्ट्रेट ने उपद्रव की आशङ्का से नगर में दफ़ा १४४ लगा कर लाठी आदि लेकर निकलना रोक दिया था। अछूतों का एक जुलूस मन्दिर तक गया और भीतर जाने का रास्ता बन्द पाकर लौट आया। अब वे मेले के समय, जो जनवरी में होता है, सत्याग्रह करेंगे।

—पटना का ५ ता० का समाचार है कि हेमन्त-कुमार चक्रवर्ती और प्रबोधकुमार राय नाम के दो नवयुवक हाईकोर्ट में रात के समय फिरते पाए गए। सन्देह में उनको कोतवाली ले जाया गया, जहाँ से वे पूछताछ करके छोड़ दिए गए।

—विज़गापट्टम का समाचार है कि हाल में यहाँ जो भारी बाढ़ आई थी, उससे सैकड़ों जगह मिट्टी कट कर गिरी है, और आने-जाने के रास्ते बिल्कुल बन्द हो गए हैं। सब मिला कर २०० मनुष्यों के मरने की सूचना मिली है।

—दरभङ्गा के महाराज कामेश्वरसिंह, जो आजकल राउण्डटेबल कॉन्फ़्रेन्स में भाग लेने के लिए लन्दन गए हुए हैं, के दस हज़ार पौण्ड के जवाहरात चोरी चले गए।

—मद्रास-सरकार ने अपने प्रान्त में अनाज के भाव की जाँच के लिए एक कमीशन नियत किया है।
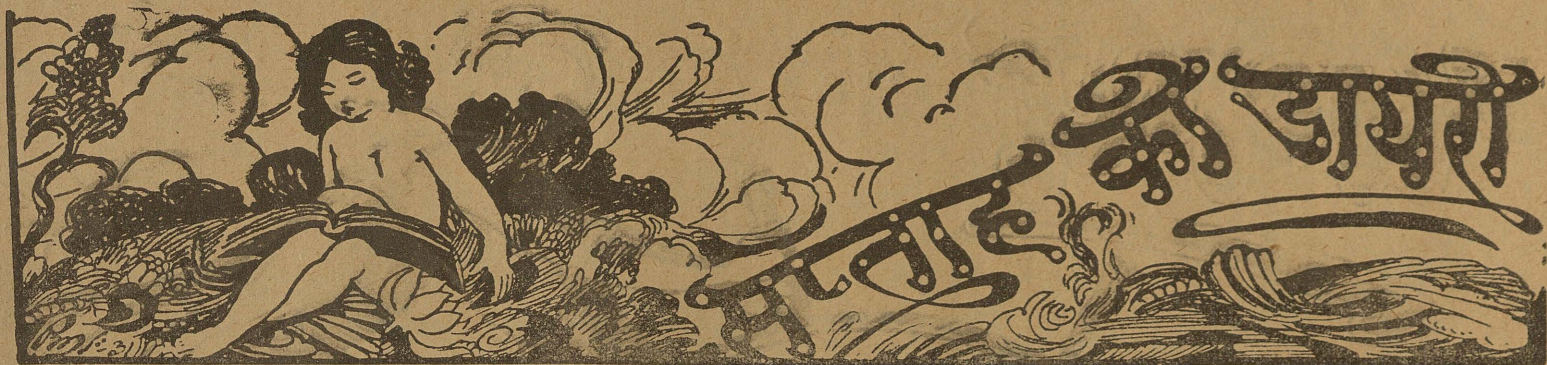
—पूना का १ नवम्बर का समाचार है कि महाराष्ट्र प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्री० वापट डमरगाँव (ज़िला थाना) में दफ़ा ३०२ और ११७ में गिरफ़्तार कर लिए गए। आप मुल्शीपेठा सत्याग्रह के प्रधान सञ्चालक थे, और पिछले मई मास में सात वर्ष की सख़्त सज़ा काट कर छूटे थे।

—गत २६ अक्टूबर को कुमिल्ला (बङ्गाल) के बौरा नामक गाँव में पुलिस ने धावा किया, जिसके फल से कितने ही लोगों को चोट लगने की ख़बर है। एक मुसलमान बुढ़िया चोट के कारण मर गई। इस घटना से समस्त गाँव में बड़ा असन्तोष फैला है। कॉङ्ग्रेस की तरफ़ से मामले की जाँच के लिए एक कमिटी नियुक्त की गई है।

—नारायणगञ्ज (ढाका) में २ नवम्बर की रात को बाबू जयगोविन्द राव की दुकान में सशस्त्र डाका पड़ा। दो नवयुवक एकाएक दुकान के भीतर घुस गए और लोगों को पिस्तौल से धमका कर ५००) रु० लेकर भाग गए।

—उन्नाव ज़िले में २५ अक्टूबर को एक डाका पड़ा था। उसकी जाँच करके पुलिस ने उन्नाव और कानपुर ज़िलों में नौ व्यक्तियों को पकड़ा है। कहा जाता है कि डकैती में बम, बन्दूक़ें और पिस्तौलें चलाई गई थीं। एक गाँव वाले ने बड़ी कठिनाई से और लड़ाई के बाद एक डाकू को पकड़ा। दूसरा गाँव वाला उसी झगड़े में मारा गया।

—श्री० एम० एन० रॉय का मुक़दमा ३ नवम्बर को कानपुर डिस्ट्रिक्ट जेल में पेश हुआ। श्री० रॉय ने अदालत के सामने आने से इनकार किया। इस पर वे बलपूर्वक अपने कमरे से लाए गए। उन्होंने कहा कि यह अदालत नियमानुकूल नहीं है और मैं इसे नहीं मान सकता, इसके सिवाय उन्होंने हाईकोर्ट में जूरी द्वारा सुनवाई होने की अर्ज़ी दी है। मुक़दमा १२ नवम्बर तक स्थगित कर दिया गया। १२ और १३ ता० को बहस होगी और १६ से गवाहियाँ ली जायँगी।

—कानपुर यूथ-लीग के वाइस प्रेज़िडेण्ट श्री० गोपीनाथसिंह और सेक्रेटरी श्री० प्रकाशनारायण सक्सेना को दफ़ा १०८ में नेकचलनी के लिए ५०० रु० का मुचलका और एक-एक हज़ार की दो ज़मानतें देने की आज्ञा दी गई थी। इसकी अपील एडीशनल सेशन्स जज की अदालत में की गई थी जो २ नवम्बर को ख़ारिज कर दी गई।

—देहली कॉन्सपिरेसी केस बार-बार मुल्तवी हो रहा है; क्योंकि अभियुक्तों को स्पेशल अदालत के जजों पर विश्वास नहीं है और वे हाईकोर्ट में मुक़दमे को दूसरी अदालत में बदलवाने की दरख़्वास्त देना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में श्री० विद्याभूषण की दरख़्वास्त ३ नवम्बर को नामञ्जूर कर दी गई। पर वात्सायन की दरख़्वास्त पर मुक़दमा १३ नवम्बर तक मुल्तवी कर दिया गया।

—पूना के फ़र्गुसन कॉलेज के होस्टल का अधिक अच्छी तरह से निरीक्षण किए जाने के सम्बन्ध में सरकार ने कुछ प्रस्ताव किए थे। कॉलेज के प्रबन्धकों ने होस्टल में रहने वाले विद्यार्थियों की संख्या नियमित करने और कॉलेज की फ़ीस बढ़ाने के सिवाय अन्य प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि बम्बई के गवर्नर सर हॉटसन पर गोली चलाने वाला विद्यार्थी श्री० गोगटे इसी होस्टल में रहता था।

—बर्मा-विद्रोह के नेता श्री० सायासान ने, जिसे फाँसी की सज़ा दी गई है, वायसरॉय से दया-प्रार्थना की थी। पर वह नामञ्ज़ूर कर दी गई। अब प्रिवी कौन्सिल में अपील करने की चेष्टा की जा रही है और इसलिए बर्मा-सरकार ने फाँसी २४ नवम्बर तक स्थगित कर दी है।

—'लिबर्टी' के सम्वाददाता ने मालूम किया है कि मि० डुर्नो की हालत बराबर सुधरती जाती है, और डॉक्टरों ने कह दिया है कि अब उनके प्राणों के लिए किसी तरह का ख़तरा नहीं है। मि० विलियर्स अच्छे होकर अस्पताल से चले आए।

—हाल में ढाका के बड़े डाकख़ाने में जो सशस्त्र डाका पड़ा था और जिसके सम्बन्ध में बङ्गेश्वर राय तथा विनय बोस नामक दो नवयुवक पकड़े गए थे, उनके पास मिली हुई दोनों पिस्तौलों की शनाख़्त हो गई है। उनमें से एक ढाका पुलिस के सारजैण्ट सैक्सटन की है और दूसरी ढाका के मेडिकल स्कूल के शिक्षक श्री० बी० बोस की। ये दोनों कुछ दिनों पहले चोरी गई थीं।

पुरी-कॉङ्ग्रेस में क्या होगा ?

लन्दन में एक सम्वाददाता से श्री० विट्ठलभाई पटेल ने कहा है कि यद्यपि कॉङ्ग्रेस में गाँधी जी का असीम प्रभाव है, पर यदि उन्होंने वैदेशिक मामलों, सेना और अर्थ-व्यवस्था आदि के अधिकारों में कमी करना स्वीकार किया तो पुरी-कॉङ्ग्रेस में भारी फूट पड़ जायगी और मैं श्री० सुभाष बोस आदि गर्म दल वालों से मिल जाऊँगा।

—मिदनापुर सेण्ट्रल जेल में तीसरी श्रेणी के राजनीतिक क़ैदियों के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया जा रहा है। ख़बर है कि उनको नियम-विरुद्ध २४ घण्टे काल-कोठरियों में बन्द रक्खा जाता है और खाना भी मामूली क़ैदियों का दिया जाता है।

—पेशावर के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने दफ़ा १४४ द्वारा सब प्रकार के जुलूसों का सार्वजनिक रास्तों में निकलना और सभाओं का बाज़ारों में होना दो महीने के लिए रोक दिया है। क्योंकि इन दिनों में सीमाप्रान्त के निवासी पेशावर में आते हैं और उपद्रव हो सकने की बहुत-कुछ सम्भावना रहती है।

—हिन्दुस्तान के पोस्टमैनों और छोटे कर्मचारियों की यूनियन ने निश्चय किया है कि वे लोग आर० एम० एस० वालों के साथ मिल कर सरकार की नौकरों की संख्या घटाने की योजना का विरोध करेंगे।

—लखनऊ में संयुक्त प्रान्तीय महिला-राजनीतिक कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन श्रीमती कमला नेहरू की अध्यक्षता में हुआ। आपने एक ज़ोरदार अभिभाषण दिया, जिसमें आगामी स्वाधीनता-संग्राम के लिए स्त्रियों को तैयार रहने का आदेश दिया और कहा कि उनको सिवाय खद्दर के दूसरा कपड़ा छूना भी न चाहिए।

—अब यह निश्चय रूप से मालूम हो चुका है कि निज़ाम हैदराबाद के युवराज की शादी टर्की के भूतपूर्व सुलतान की इकलौती लड़की से होने वाली है। शादी की रस्म नीस नामक स्थान में १२ तारीख़ को अदा होगी। उसी समय निज़ाम के दूसरे लड़के शाहज़ादे मुअज़्ज़म जाह की शादी सुलतान की एक रिश्तेदार शाहज़ादी नीलूफर से होगी।

—ढाका का ४ नवम्बर का समाचार है कि हिन्दू-मुस्लिम दङ्गे की गर्म अफ़वाहों के कारण बहुत से लोग घर-बार सहित शहर छोड़ कर भागे जा रहे हैं। शान्ति-कमिटी के प्रेज़िडेण्ट ढाका के नवाब ने एक घोषणापत्र निकाला है कि लोग इन अफ़वाहों पर विश्वास न करें।

—३१ अक्टूबर को 'मज़दूर-दिवस' मनाने के लिए कलकत्ता के बी० एन० रेलवे हाउस में एक बड़ी सभा की गई। सभा में श्रोता बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे और उत्साह भी ख़ूब फैला हुआ था। सभा में कई प्रस्ताव पास किए गए, जिनमें सरकार की ख़र्च घटाने की नीति और नए टैक्सों की निन्दा की गई। इन दोनों का असर मज़दूरों पर बड़ा घातक पड़ता है।

—५ तारीख़ को प्रातःकाल डॉ० अन्सारी ने स्वराज्य-भवन, प्रयाग के स्वदेशी मेले का उद्घाटन किया। डॉक्टर साहब ने कहा कि वर्तमान विनिमय की नीति के कारण यह और भी आवश्यक हो गया है कि लोग स्वदेशी चीज़ों के व्यवहार पर विशेष ध्यान दें। इससे भारत के कार-बार की वृद्धि ही न होगी, वरन् रुपए की दर गिर जाने से विदेशी माल लेने में जो आर्थिक हानि होती है, उससे भी देश बच जायगा। इसके बाद उन्होंने पं० मोतीलाल की मूर्ति का उद्घाटन किया, जिसे उन्होंने स्वयं स्वराज्य-भवन के लिए प्रदान किया है।

—इलाहाबाद ज़िले के ग्रामों में लगान के सम्बन्ध में अनेक सभाएँ हो रही हैं। एक सभा मन्झनपुर में ४ तारीख़ को हुई, जिसमें श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन और श्री० वेङ्कटेशनारायण तिवारी के भाषण हुए।

—सप्लीमेण्टरी फ़ायनेन्स बिल पर विचार करने के लिए एसेम्बली का विशेष अधिवेशन ४ नवम्बर से आरम्भ हुआ। सर जॉर्ज शुस्टर ने बतलाया कि सरकारी नौकरों की तनख़्वाह में से १० प्रति सैकड़ा कमी करने से, रेलवे और सेना-विभाग को छोड़ कर, एक करोड़ २८ लाख वार्षिक की बचत हुई है।

—दार्जिलिङ्ग की महिलाओं ने एक सभा करके शारदा-एक्ट का समर्थन किया है और वायसरॉय से प्रार्थना की है कि उसके किसी अंश को रद्द न किया जाय, वरन् उसे और भी प्रभावशाली बनाया जाय।

—कानपुर की पुलिस ने रोटी गोदाम मुहल्ले में बीस जुआरियों को गिरफ़्तार किया। उनके पास एक करौली भी पाई गई।

—लाहौर में २२ जुआरी १,२०० रु०, २ सोने की घड़ियों और खेलने के ताशों के साथ पकड़े गए हैं।

—लाहौर की देवदयाल डिस्ट्रीब्यूटरी से एक सिक्ख की मृत-देह मिली है। डॉक्टरी जाँच से मालूम हुआ कि उसकी गर्दन की एक नस किसी तेज़ हथियार से काटी गई है।

—कुरला स्वदेशी मिल (बम्बई) के हड़तालियों और नए मज़दूरों में ३ नवम्बर को मार-पीट हो गई है। इस पर वहाँ के मैजिस्ट्रेट ने दफ़ा १४४ द्वारा सब प्रकार की सभाओं, जुलूसों और पाँच आदमियों के एक जगह इकट्ठे होने का निषेध कर दिया है।

—अवध के तालुक़ेदारों की एसोसिएशन की बैठक २ नवम्बर को लखनऊ में हुई, जिसमें कुर्री सुदौली के राजा रामपालसिंह उसके प्रेज़िडेण्ट चुने गए।

—ढाका के मेडिकल स्कूल की हड़ताल समाप्त हो गई। गवर्नमेण्ट ने विद्यार्थियों की शिकायतों की जाँच करना स्वीकार कर लिया है।

—ख़बर है कि भारत-सरकार की तरफ़ से एक डेप्युटेशन १६ दिसम्बर को दक्षिण अफ़्रिका के लिए रवाना होगा, जो 'केप-टाउन' के समझौते का संशोधन कराएगा।

—श्री० भूपतसिंह एम० एल० ए० ने बड़ी व्यवस्थापिका के आगामी अधिवेशन में पूछने के लिए नीचे लिखे प्रश्न का नोटिस भेजा है :—

"क्या अधिकारी-वर्ग भारतीय चित्रकारों को इतनी नफ़रत की निगाह से देखते हैं कि उनको रेलवे पब्लिसिटी ब्यूरो से कुछ भी काम नहीं दिया जाता ?"

—बिहार के शाहाबाद ज़िले में कुलपाल-छपरा नामक गाँव एक रुपए में बिक गया। जब दो बार नीलाम किए जाने पर भी किसी ने उसके लिए बोली न बोली तो सरकार ने स्वयम् उसे ख़रीद लिया।

—बेलगाम (बम्बई प्रान्त) का समाचार है कि एक मोटर-लॉरी रास्ते में खड़ी भैंस से बचने की चेष्टा करते हुए पेड़ से टकरा गई। लॉरी में बैठे हुए तमाम स्त्री-पुरुषों को, जिनकी संख्या १२ थी, चोट आई।

—इलाहाबाद के रेलवे मैजिस्ट्रेट ने पी० आर० कॉकसेज नामक ऐंग्लो इण्डियन को बिना टिकिट सफ़र करने के अभियोग में १० रु० जुर्माना या १५ दिन की क़ैद की सज़ा दी है।

—मैमनसिंह का समाचार है कि नासिम सरकार नामक बोहरा, जब कि वह अपने घर में बीबी और बच्चों के साथ सो रहा था, जान से मार डाला गया।

—लाहौर का समाचार है कि जी० मस्कैल नामक गोरे सिपाही ने पिस्तौल से गोली मार कर आत्म-हत्या कर ली।

—काँकर बाग़ (पटना) के ख़ून के मामले में पुलिस ने श्यामकृष्ण लाल और भोला कहार को गिरफ़्तार किया है। इनमें से पहला अभियुक्त पटना हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री० बनवारीलाल का पुत्र है।

—सिकन्दराबाद में राव साहब सेठ रामलाल के पुत्र सेठ लक्ष्मीनिवास ३,००० रु० की अफ़ीम और गाँजा बिना लायसेन्स के रखने के क़सूर में गिरफ़्तार किए गए हैं।

—इन्दौर के सेठ हुकुमचन्द ने बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी में एक दिगम्बर-जैन होस्टल बनाने के लिए २७ हज़ार रुपया दान किया है।

—कुष्ठिया (बङ्गाल) में एक सँपेरा साँप का खेल दिखला रहा था। साँप नया था और उसने एकाएक सँपेरे को काट खाया। उसे बचाने की बहुत कोशिश की गई, पर कोई फल न निकला।

—छपरा के अछूतों ने डॉ० अम्बेडकर में अविश्वास का प्रस्ताव पास किया है।

—कालाकाँकर (प्रतापगढ़) के और आस-पास के गाँवों के बहुत से अछूतों की एक सभा कालाकाँकर में श्री० दीनदयाल मेहतर की अध्यक्षता में हुई। सभा में म० गाँधी में पूर्ण विश्वास प्रकट किया गया और कहा गया कि डॉ० अम्बेडकर का नाम भी हम लोग इसके पहले नहीं जानते थे और वे हमारे प्रतिनिधि नहीं हो सकते।

—कुरवापुर (मद्रास) में श्रीकृष्ण के मन्दिर के सामने सत्याग्रह किया जाय कि उसमें अछूतों को भी दर्शन करने की इजाज़त दी जाय। सत्याग्रह का सञ्चालन केरल प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमिटी कर रही है, इसमें भाग लेने वाले स्वयंसेवकों को शिक्षा देने के लिए टेलीचेरी में एक आश्रम खोला गया है। मन्दिर वालों ने २०० गज़ के फ़ासले पर एक बाड़ा बाँध दिया है जिसके भीतर सत्याग्रही नहीं घुस सकते। मन्दिर में जाने वालों में से प्रत्येक की जाति और उद्देश्य पहले पूछ लिया जाता है।

राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स

४ नवम्बर को महात्मा गाँधी ने गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के क़रीब १५ प्रतिनिधियों की एक प्राइवेट मीटिङ्ग की, जिसमें उनके प्रधान-मन्त्री, मि० बाल्डविन और भारत-मन्त्री की बातचीत का सारांश बतलाया गया। महात्मा जी ने अपने साथियों से पूछा कि यदि राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स में कोई सारयुक्त निर्णय न हो तो वे क्या करेंगे? क्या वे प्रान्तीय अधिकारों से सन्तुष्ट हो जायँगे और केन्द्रीय सरकार के अधिकारों को भविष्य के लिए छोड़ देंगे? प्रतिनिधियों की सम्मति के अनुसार ऐसा होने से शासन-यन्त्र की पेचीदगी बहुत अधिक बढ़ जायगी और सच्ची उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार की सम्भावना दिन पर दिन दूर होती चली जायगी।

—५ नवम्बर को महात्मा गाँधी सम्राट से भेंट करने बकिङ्घम पैलेस गए। वे नङ्गे सर, लँगोटी बाँधे और एक चादर ओढ़े थे। इनके साथ में श्रीमती सरोजिनी नायडू और श्री० महादेव देसाई थे। महात्मा जी को देखने के लिए घण्टों से लोगों की भीड़ पैलेस के पास खड़ी थी। जब गाड़ी महल के बड़े फाटक में घुसी तो पुलिस के सिपाही ने महात्मा जी को सलामी दी, जिससे उनके मुख पर एक क्षण के लिए मुस्कराहट का भाव आ गया। महात्मा जी ने बादशाह से हाथ मिलाया और उसके पश्चात् वे दूसरे कमरे में जाकर अन्य प्रतिनिधियों से बातें करने लगे।

भारत-सरकार की चिन्ता

लन्दन से 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के निज सम्वाददाता ने ख़बर भेजी है कि भारत-सरकार ने विलायत के अधिकारियों के पास एक डिस्पैच भेजा है, जिसमें कहा गया कि भारत की राजनीतिक दशा दिन-दिन ख़राब होती जा रही है और कॉङ्ग्रेस के साथ कोई सन्तोषजनक समझौता करना आवश्यक है।

—ख़बर है कि श्री० तेजबहादुर सप्रू और श्री० जयकर ने १३ नवम्बर को भारत के लिए रवाना होना स्थगित कर दिया है। अब वे २० या २७ ता० को रवाना होने वाले जहाज़ से आएँगे।

—४ नवम्बर का समाचार है कि मौलाना शौकत-अली उस दिन दोपहर के समय भारत-मन्त्री से भेंट करने वाले थे।

—४ ता० को लॉर्ड इर्विन ने राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधियों को एक भोज दिया, जिसमें प्रायः सब प्रतिनिधि उपस्थित थे।

—इङ्गलैण्ड की एक कोयले की खान में भयङ्कर धड़ाका हुआ जिसके फल-स्वरूप दस मज़दूर मर गए।

—लन्दन की ३१ अक्टूबर की ख़बर है कि ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी के लेबर-क्लब हॉल की सभा में कितने ही रङ्गीन पोस्टर लगाए गए थे। एक विद्यार्थी ने यह कह कर एतराज़ किया कि उनमें रूसी भाषा में ऐसे शब्द लिखे हैं जो धर्म की निन्दा करते हैं और अङ्गरेज़ी क़ानून के विरुद्ध है, उसने उन्हें फाड़ डाला, जिस पर दूसरे लोग उससे मार-पीट करने लगे और बड़ी देर तक सभा में गड़बड़ी मची रही।

—इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट के चुनाव के अन्तिम समाचारों के अनुसार विभिन्न दलों के सदस्यों की संख्या इस प्रकार है:—कन्ज़रवेटिव ४७३; नेशनल लेबर १३, सायमन लिबरल ३५; सैमुअल लिबरल ३३। ये ५५४ नई सरकार के पक्ष में हैं। सरकार के विरोध में मज़दूर-दल के ५० और लायड जॉर्ज के अनुयायी तथा स्वतन्त्र ४ लिबरल सदस्य हैं। अन्य स्वतन्त्र सदस्यों की संख्या ७ है।

—इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट के मन्त्रि-मण्डल का सङ्गठन हो गया। प्रधान-मन्त्री मि० मैकडॉनल्ड के सिवाय सर जॉन सायमन वैदेशिक सचिव और मि० बाल्डविन लॉर्ड प्रेज़िडेण्ट ऑफ़ कौन्सिल नियुक्त हुए हैं।

—लन्दन के म्युनिसिपल चुनाव में कन्ज़रवेटिव दल के ३३८ उम्मेदवार चुने गए। मज़दूर दल के उम्मेदवारों की संख्या ४१६ कम रही।

—साइप्रस टापू में 'करफ़्यू' ऑर्डर जारी है। गवर्नर ने हुक्म निकाला है कि दङ्गे में जितनी हानि की गई है उसका हर्जाना यूनानियों और ईसाइयों से लिया जायगा; मुसलमानों और तुर्कों को हर्जाना न देना पड़ेगा।

—न्यूयार्क का समाचार है कि मञ्चूरिया में जापान और रूस का सहयोग हो जाने और रूसी फ़ौजों के इकट्ठे होने के समाचारों की सचाई की जाँच करने के लिए अमेरिका ने अपना एक नीरीक्षक मञ्चूरिया भेजने का निश्चय किया है।

—ग्रीस के ४५ सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की एक कमिटी ने इङ्गलैण्ड के नाम एक मैनीफ़ेस्टो प्रकाशित किया गया है, जिसमें कहा गया है कि—"हम अपने महान संरक्षक इङ्गलैण्ड के अहसानों को भुलाना नहीं चाहते, पर हम उदार और श्रेष्ठ अङ्गरेज़ जाति का ध्यान साइप्रस निवासियों के ग्रीस के साथ संयुक्त हो सकने के अधिकार की तरफ़ आकर्षित करना चाहते हैं।

—इङ्गलैण्ड की कोयले की खानों के नेता मि० ए० जे० कुक का देहान्त हो गया।

—भारत-मन्त्री सर सैमुअल होर कॉन्फ़्रेन्स के प्रतिनिधियों को एक भोज १२ ता० को कैडगन गार्डन में देने वाले हैं।

—पेरिस में रहने वाली एक ७१ वर्ष की आयरिश बुढ़िया मिस मिनी गोमन को एक वकील द्वारा सूचना मिली कि उसका कोई सम्बन्धी उसके लिए ८ हज़ार पौण्ड उत्तराधिकार में छोड़ गया है। इस ख़ुशी की ख़बर को पढ़ कर बेचारी बुढ़िया उसी दम चल बसी। उसने अपना तमाम जीवन बड़ी ग़रीबी में बिताया था और तीस साल तक एक दर्ज़ी की दुकान में नौकरी करती रही।

—ऑस्ट्रेलिया की मिसेज़ नेली कोले नामक स्त्री बड़े दिन में अपने बच्चों से मिलने के लिए एक हज़ार मील की यात्रा पैदल कर रही है। वह कई महीने पहिले व्यापार के लिए मेलबोर्न से ब्रिसबेन नामक क़स्बे को गई थी। पर उसे व्यापार में घाटा हुआ और पास में कुछ भी न बचा। पर बच्चों की मुहब्बत से उसे वहाँ चैन न पड़ी और पैदल ही रवाना हो गई। वह ३० मील रोज़ चलती है और उसे आशा है कि वह १५ दिसम्बर तक घर पहुँच जायगी।

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आख़िर काश्मीर के सम्बन्ध में वायसरॉय को ऑर्डिनेन्स पास करना ही पड़ा। चलिए मुसलमान भी लहू लगा कर शहीदों में दाख़िल हो गए। कॉङ्ग्रेस और कॉङ्ग्रेसवादियों के लिए तो ऑर्डिनेन्सों की झड़ी लग गई थी। अब एक ऑर्डिनेन्स साम्प्रदायिकतावादी मुसलमानों के लिए भी पास हो गया, यह अच्छा हुआ। अब मुसलमान भाई भी गर्व से सिर उठा कर कह सकेंगे कि हम भी पाँचवें सवारों में हैं। हमने भी देश-सेवा की है। जिनके लिए वायसरॉय को ऑर्डिनेन्स का निर्माण करना पड़े, वे देश-भक्त न होंगे तो फिर कौन होगा ! मुसलमानों ने देखा कि देशभक्ति का सारा श्रेय हिन्दू लोग लूटे लिए जा रहे हैं और हम फिसड्डी ही रहे जाते हैं, इसलिए .खूब सोच-समझ कर हाथ-पैर बचाते हुए काश्मीर को ताका। सोचा कि भारत-सरकार तो अपनी है। क्योंकि भारत-सरकार तथा ब्रिटिश जाति की जो सेवा मुसलमानों ने की है वह कोई भकुआ इस भू-मण्डल पर कर ही नहीं सकता। आन्दोलन में हिन्दुओं का साथ नहीं दिया, राष्ट्रीय मुसलमानों को जाति बाहर कर दिया, खद्दर तथा स्वदेशी कपड़े से उसी प्रकार घृणा की जैसे घृत से मक्खी घृणा करती है, विलायती कपड़े पर ऐसे गिरे जैसे मुर्ग़ी खखार पर—केवल इतना ही नहीं, लङ्काशायर वालों की निस्स्वार्थ सेवा करने के लिए एक कम्पनी भी खोल दी। इन सब सेवाओं के बल पर उनको यह अभिमान था कि हमारे सैय्याँ तो कोतवाल ही हैं अब डर काहे का। एक-एक करके जितने हिन्दू राज्य हैं सब पर अर्द्धचन्द्र का झण्डा फहरा दो। काश्मीर तो बिहिश्त समझा ही जाता है। सोचा सब से पहले बिहिश्त पर ही क़ब्ज़ा जमाओ। वल्लाह अगर बिहिश्त हाथ आ गया तो फिर क्या है—क़यामत का इन्तज़ार करने से पिण्ड छूट जायगा, अल्लाह मियाँ के एहसान से मुक्त हो जायँगे। यह सोच कर पहले तो काश्मीर के मुसलमानों को भड़काया कि यदि पकी-पकाई हँड़िया मिल जाय तो क्या बेजा है। काश्मीर के मुसलमान पहले तो हज़रत आदम की तरह बहक गए, परन्तु जब देखा कि ऐसा करने से आदम की ही तरह निकाल बाहर किए जाएँगे तो कुछ समझ आई। इधर जब पञ्जाब के मुसलमानों ने देखा कि सारा गुड़ गोबर हुआ जाता है तो अपने दिल ही दिल में महात्मा जी का स्मरण करके जत्थे भेजने पर कमर बाँधी। परन्तु इसी शर्त पर कि भारत-सरकार तो अपनी चहेती है जत्थे तो क्या, यदि फ़ौज भी ले जायँ तब भी चूँ न करेगी। फ़िलहाल जत्थों से आरम्भ किया जाय और मौक़ा पाकर वे ही जत्थे फ़ौज बन जायँ। भारत-सरकार ने भी पहले अपने लाडलों के इस कृत्य को प्यार भरी दृष्टि से देखा। सोचा चलो अच्छा है, अपने हितैषी और अपने प्यारों का जी बहलता है, अपना क्या हर्ज है। यदि इन्होंने इस खेल ही खेल में बिहिश्त को हथिया लिया तो लेकर जायँगे कहाँ, आख़िर हमारे ही बाल-बच्चों के काम आएगा। प्रथम तो राजभक्त मुसलमान स्वयम् ही उसे हमारे अर्पण कर देंगे और यदि .खुशी से न किया तो थोड़ा कर्ण-मर्दन करने से तो निश्चय ही दे देंगे; समझदार हैं—हिन्दुओं की तरह औंधी खोपड़ी के नहीं हैं। परन्तु जब देखा कि इस तरह तो बदनामी भी हो जायगी और लाभ कुछ भी न होगा तो झट ऑर्डिनेन्स निकाला। ठीक भी है—रण्डी किसकी जोड़ और भड़वा किसका साला ! हालाँकि अपने राम कभी भी यह विश्वास करने को तैयार नहीं हो सकते कि यह ऑर्डिनेन्स मजबूरी से निकाला गया है। अपने राम का तो यह मत है कि भारत-सरकार पहले यह देखती रही कि कश्मीर-राज्य यथेष्ट शक्तिशाली है, अपना प्रबन्ध स्वयम् करेगा—हम हस्तक्षेप क्यों करें। परन्तु जब बाहर के मुसलमान भी कश्मीर की ज़ियारत करने को तैयार हुए तब उसने उन्हें रोकने के लिए यह इन्तज़ाम किया है। ठीक भी है, इसके अतिरिक्त बेचारी भारत-सरकार और कर ही क्या सकती है ? अब देखना है कि ब्रिटिश भारत के मुसलमान जत्थे भेजते हैं या नहीं। फ़िलहाल तो उन्हें इस ऑर्डिनेन्स पर बड़ा ही आश्चर्य हुआ होगा और होने की बात भी है ! जिसकी उन्होंने इतनी सेवा की, जिसके लिए बदनामी सही, देशद्रोही बने, उसकी ओर से यह पुरस्कार ! शिव ! शिव !! भारत-सरकार को उचित तो यह था कि इस कार्य में मुसलमानों की सहायता करती। जत्थों के लिए मार्ग में स्थान-स्थान पर सबीलें और बावर्चीख़ाने खुलवा देती। यदि रेल पर जाते तो मुफ़्त में रेल देती। सबसे अच्छी बात तो यह थी कि जत्थों की रक्षा के लिए एक फ़ौजी दस्ता साथ कर देती। सो तो किया नहीं—उलटा ऑर्डिनेन्स पास कर दिया—वाह भई वाह ! .खूब क़द्रदानी की। वाक़ई यह कहावत ठीक है कि नेकी का ज़माना फ़िलहाल इधर दो-चार दिनों से नहीं रहा। रहता तो मुसलमानों के साथ ऐसा व्यवहार कभी हो सकता था ? अजी अल्ला-अल्ला कीजिए ! इस बात का क़लक़ और अफ़सोस मुसलमानों को कम से कम क़यामत तक तो रहेगी ही। क़यामत होने के पश्चात् जब अल्लाह मियाँ न्याय की तराज़ू उठाएँगे तो सब धान बाइस पसेरी हो जाएँगे। क़यामत के पहले तो न्याय किसी प्रकार हो ही नहीं सकता वरनः अभी मज़ा चखा दिया जा सकता। अभी तो सब मामला अन्याय पर चल रहा है। इसीलिए बेचारे मुसलमान मजबूर होकर रह जाते हैं। वाक़ई मजबूरी सब कुछ करा लेती है। मगर कुछ भी हो, मुसलमान भाई बड़े जीवट के आदमी हैं। यदि सरकार ने किसी मुसलमान को गिरफ़्तार करके जेल न भेजा तो जत्थे बराबर नाक की सीध चले ही जाएँगे। वहाँ तक पहुँचें या न पहुँचें। और अगर .खुदा न ख़्वास्ता स्वेच्छा से कहीं पञ्जाब सरकार ने जत्थों के मार्ग में खाई-ख़न्दक खुदवा दिए, काँटे बिछवा दिए अथवा जेल बनवा दिए तो फिर देखिएगा, क्या मज़ा आता है। एक भी मुसलमान यदि गर्मी के दिनों में काश्मीर के बाहर रहना पसन्द करे तो अपने राम इस बात की क़सम खा लेंगे कि इस जीवन में कभी काश्मीर का मुँह न देखेंगे। परन्तु मुसलमान भाई हैं आवश्यकता से अधिक बुद्धिमान ! इस अवसर पर यदि कलाबाज़ी खा जायँ तो कोई आश्चर्य नहीं। और है भी ठीक ! चौबे जी चले थे छब्बे होने सो अपने राम की तरह दुबे ही रह गए। मुसलमान भाई चले थे बिहिश्त को, परन्तु यदि पहुँच गए जेल में तो सारा मज़ा ही किरकिरा हो जायगा। वल्लाह क्या सोचा था और क्या हो गया। वाक़ई बात यह है कि "सब यार हैं अपने मतलब के, दुनिया में किसी का कोई नहीं।" जिस पर भरोसा किया, जिसके सम्बन्ध में सोचा था कि आड़े वक़्त पर काम आएगा, जब वही ऐन मौक़े पर दग़ा दे रहा है तो यह कहना ही पड़ता है कि यह संसार असार है—बस जो कुछ है मौला का नाम है, उसी से लौ लगाना ठीक है। इन्सान इन्सान की मदद नहीं कर सकता, मदद करने वाला वह मालिक है जिसने यह ज़मीनो-आसमान और चाँद और सूरज बनाया है।

अपने राम को महाराज-काश्मीर की बुद्धि पर भी थोड़ी दया आती है। बहुत दिनों राज्य कर लिया, बहुत दिनों सुख भोग लिया। व्यर्थ में क्यों मुसलमान भाइयों का दिल दुखाते हैं। यदि महाराज-काश्मीर अपने राम से और इस प्रान्त के दो-एक उन नेताओं से जो मुसलमानों के प्रति उदारता में महात्मा जी से भी बाज़ी मार ले जाने का दिल रखते हैं, सलाह लें और उस सलाह को मानें तो उन्हें अपना राज्य मुसलमानों को सौंप कर वन में तपस्या करने चला जाना चाहिए। देखिए, कानपुर वालों ने मुसलमान भाइयों की ख़ातिर साइनबोर्ड उतार दिया—क्यों ? इसलिए कि उनका नन्हा सा दिल न दुखे और झगड़ा शान्त हो जाय ! अतएव यदि महाराज-काश्मीर भी झगड़ा शान्त करने के लिए तथा मुसलमानों के दिल का दुख दूर करने के लिए अपना राज्य उनके हवाले कर दें तो हिन्दू-मुस्लिम झगड़े का अन्त सदैव के लिए हो जाय ! अथवा महाराज-काश्मीर एक ऐसा कमीशन नियुक्त करें जो इस बात पर विचार करे कि उन्हें अपना राज्य मुसलमानों को सौंप देना चाहिए या नहीं तो इस झगड़े का निबटारा क्षण भर में हो जाय। परन्तु शर्त यह है कि उस कमीशन में अपने राम अवश्य रक्खे जायँ और वे दो-एक नेता जिनका उल्लेख अपने राम ऊपर कर चुके हैं। सो अपने राम तो इसी समय कह रहे हैं कि जाँच करने से यह उचित मालूम होता है कि महाराज-काश्मीर अब बहुत दिन राज्य कर चुके, अब उन्हें अपना राज्य मुसलमानों को सौंप देना चाहिए। नेता लोग भी ऐसा ही कहेंगे, क्योंकि आदत ही ऐसी पड़ी हुई है कि मुसलमानों को ज़रा भी दुखी नहीं देख सकते। उनका दुख देखते ही आँखों से अश्रु-धारा फूट निकलती है, हृदय विदीर्ण होने लगता है। कुछ भी हो, परन्तु मुसलमान अपने भाई ही हैं। उनको प्रसन्न रखना प्राणि-मात्र का कर्तव्य है। इसलिए महाराज-काश्मीर को उनके प्रति उदारता का—नहीं, बिल्कुल ग़लत—अपने कर्तव्य का पालन अवश्य करना चाहिए। जब तक वह ऐसा नहीं करेंगे तब तक सच्चे राजा कहलाने के अधिकारी इस असार संसार में हो ही नहीं सकते।

सम्पादक जी, आप भी इस सम्बन्ध में .खूब आन्दोलन कीजिए और अपने पत्र द्वारा महाराज-काश्मीर को उनके कर्तव्य का स्मरण दिला ही दीजिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो देश की ठसाठस ठोस सेवा होगी।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

❀ ❀ ❀

मनोरञ्जन और शिक्षा

प्राचीन काल में घुड़दौड़

मैसोपोटेमियाँ में कुछ ऐसे प्राचीन लेख ज़मीन के भीतर से मिले हैं, जिनसे साबित होता है कि प्राचीन काल के राजा भी आजकल के समान घुड़दौड़ के खेल के शौक़ीन थे। ये लेख ३,००० वर्ष पुराने हैं और इनमें बड़ी घुड़दौड़ों के लिए घोड़े को किस प्रकार सिखलाया जाय, लिखा है। प्रो० होज़्नो, जिन्होंने इन लेखों का अर्थ निकाला है, कहते हैं कि उस पुराने ज़माने के शिक्षकों की चतुराई और घोड़ों को सिखलाने की नियमबद्ध रीति आश्चर्यजनक थी। पहले घोड़ों को ख़ास तरह का खाना देकर उनकी तमाम बढ़ी हुई चर्बी निकाल दी जाती थी। इसके सिवाय लेखों में घोड़ों के विशेष स्नानों का भी वर्णन है। चाल की तेज़ी और दम पहले दुलकी और फिर सरपट दौड़ा कर क्रमशः बढ़ाई जाती थी। शिक्षा-काल की अवधि प्रायः छः महीने की होती थी। इस सम्बन्ध में विशेषज्ञों ने और भी कितनी ही खोजें की हैं और उनसे सिद्ध होता है कि घुड़दौड़ का खेल कम से कम ९ हज़ार वर्ष पुराना है।

साँप के काटने की दवा

स्याम देश में बहुत अधिक ज़हरीले साँप पाए जाते हैं, जिनके काटने से आदमी का बचना प्रायः असम्भव होता है। उनके कारण वहाँ प्रति वर्ष हज़ारों मनुष्य काल के गाल में चले जाते हैं। इन लोगों की प्राण-रक्षा के लिए क़रीब दस वर्ष से वहाँ एक प्रयोगशाला स्थापित की गई है, जिसमें क़रीब ५०० ख़ूब ज़हरीले साँप पले हुए हैं। उनका रखवाला 'नेलिग्राम' नाम का एक क़ुली है जो बड़े से बड़े और साक्षात काल-स्वरूप काले नाग को भी एक क्षण में पकड़ लेता है और उसके मुँह में लकड़ी घुसा कर उसका ज़हर निकाल लेता है। वह इस तरह हर रोज़ सैकड़ों साँपों को इसी तरह पकड़ता है। इस ज़हर को पिचकारी द्वारा थोड़ा-थोड़ा करके प्रति दिन घोड़ों के शरीर में डाला जाता है। क़रीब साल भर बाद उन घोड़ों का ख़ून ऐसा हो जाता है कि उन पर ज़हर का असर ही नहीं होता। तब उन घोड़ों के बदन में से ख़ून निकाल कर दवा बनाई जाती है जिसकी पिचकारी देने से साँप का काटा आदमी प्रायः अच्छा हो जाता है। पिछले वर्ष केवल बैङ्कॉक (स्याम की राजधानी) में इस दवा द्वारा ९३४ व्यक्तियों की जानें बचाई गई थीं।

समुद्री लताओं का काग़ज़

आजकल एक बड़ी समस्या यह उठ खड़ी हुई है कि काग़ज़ बनाने के लिए कौन सी नई चीज़ इस्तेमाल की जाय। अब तक अधिकांश काग़ज़ लकड़ी का बनता है। पर शिक्षा-प्रचार और राजनीतिक आन्दोलन के कारण काग़ज़ का ख़र्च आजकल जैसा बेहद बढ़ता जाता है, उससे आशङ्का है कि संसार के लकड़ी के जङ्गल कुछ दिनों में बहुत घट जायँगे। अब रूस के एक इञ्जीनियर ने, जिसका नाम वेलीनैक है, समुद्री लताओं से काग़ज़ बनाने की तरकीब निकाली है, जो बड़ी जल्दी बन जाता है और सस्ता भी पड़ता है। इस काम के लिए साइबेरिया में एक बड़ी समुद्री झील के किनारे एक कारख़ाना तैयार किया गया है जो हर साल एक टन काग़ज़ समुद्री लताओं से तैयार करेगा। उसमें ऐसी नई-नई मैशीनें लगाई गई हैं जो आध घण्टे में समुद्री लताओं को काग़ज़ की शक्ल में बदल देती हैं। इन लताओं से १६ तरह का काग़ज़ और कार्डबोर्ड तथा चिपकाने का मसाला बनाया जाता है। जो मैल बचता है उसकी ईंटें बनाई जाती हैं, जो कि आग में नहीं जल सकतीं।

हवाई जहाज़ों से पेड़ों की रक्षा

दुनिया के कितने ही भागों में कुहरा के कारण कोमल फलों की फ़स्ल और खेती मारी जाती है। यह देखा जाता है कि जिस रात को आसमान में बादल रहते हैं उस रोज़ कुहरा नहीं पड़ता। बादल पर्दे का काम करते हैं और ज़मीन की गर्मी को बाहर जाने से रोकते हैं। इसी उसूल पर यूरोप और अमेरिका के ठण्डे स्थानों में जिस रात को बदली नहीं होती और कुहरा की आशङ्का होती है, किसान और बग़ीचों के रखवाले ख़ूब धुँआ करते हैं, जो आसमान में छा जाता है और कुहरे से पेड़ों और पौदों की रक्षा करता है। अब प्रयोग द्वारा यह पता लगाया गया है कि इस काम को हवाई जहाज़ बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं। वे बग़ीचों के ऊपर इधर से उधर उड़ते फिरते हैं और ख़ूब धुँआ छोड़ते हैं, जिससे नीचे गर्मी बनी रहती है।

कितनी ही बार आग लगने से बड़े-बड़े जङ्गल जल जाते हैं। उनको यदि फिर हाथ से लगाने की कोशिश की जाय तो यह असम्भव है। पर हवाई जहाज़ जली हुई ज़मीन पर आसानी से बीज बखेर देते हैं और इससे बड़ी जल्दी पौधे निकलते हैं।

क़ैदी का अनोखा आविष्कार

अमेरिका में एक क़ैदी ने, जो जन्म-क़ैद की सज़ा भोग रहा है, हवाई जहाज़ के लिए एक नई तरह का 'प्रॉपेलर' (हवाई जहाज़ के सामने घूमने वाला पङ्खे की शक्ल का पुर्ज़ा) बनाया है। पुरानी चाल के 'प्रॉपेलर' हवा को ठीक तरह से नहीं काट सकते और इससे शक्ति नष्ट जाती है, पर यह 'प्रॉपेलर' इस दोष से सर्वथा मुक्त है, और इसके द्वारा इञ्जिन से जितनी ताक़त पैदा होती है सब काम में आ जाती है। सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि वह क़ैदी पन्द्रह साल से जेलख़ाने में बन्द है और उसने सिवाय उड़ते हुए हवाई जहाज़ के उसे कभी अच्छी तरह अपनी आँखों से नहीं देखा। उसका कहना है कि यह कल्पना मुझे स्वप्न द्वारा प्राप्त हुई है। कितने ही कारख़ाने वाले इस आविष्कार का अधिकार प्राप्त करने को उसे लाखों रुपया देने का वादा करते हैं, पर उसका कहना है कि इसका दाम केवल मेरी आज़ादी है।

लन्दन का विचित्र मकान

लन्दन में एक ऐसा पाँच मञ्ज़िल का मकान है जिसमें दरवाज़े, खिड़कियाँ, बरामदा आदि सब चीज़ें हैं, पर उसकी चौड़ाई केवल पाँच फ़ीट है। उसमें न ताला लगाने की जगह है, न सूचना देने को घण्टी है, न लेटर-बक्स है और न उसमें कोई रहता है। इस अजीब मकान के सम्बन्ध में एक क़िस्सा है कि बहुत वर्ष पहले जब लन्दन की ज़मीन के भीतर चलने वाली रेलवे लीन्स्टर गार्डन नामक मुहल्ले में होकर अपनी लाइन निकाली तो सुरङ्ग के खुले हुए मुँह के पास ईंटों का एक मामूली चबूतरा सा बना दिया। लीन्स्टर गार्डन बड़े-बड़े धनवानों और शौक़ीनों के रहने की जगह है और उन्होंने इस बदसूरत चीज़ का बड़ा विरोध किया। इस पर रेलवे कम्पनी ने वहाँ एक नक़ली मकान बना दिया। रेलवे की तरफ़ से वह एक मामूली दीवार की तरह जान पड़ता है और सामने से एक बढ़िया मकान दिखलाई पड़ता है जिसमें किसी बात की त्रुटि नहीं है। इस मकान के कारण कितनी ही मज़ेदार घटनाएँ हुआ करती हैं। कुछ दिनों पहले किसी विनोदी व्यक्ति ने बहुत से लोगों को उक्त मकान में दावत खाने के लिए निमन्त्रित कर दिया था। इसके सिवाय व्यापारियों के एजण्ट और दूसरे सौदा बेचने वाले प्रायः हैरान होकर सड़क पर पहरा देने वाले पुलिस के सिपाही से पूछा करते हैं कि इस मकान की घण्टी और लेटर-बक्स कहाँ है?

विज्ञापन का नया तरीक़ा

इङ्गलैण्ड में कई रेलवे कम्पनियों ने अपने टिकटों में विज्ञापन बाँटना शुरू किया है। यह विज्ञापन टिकट के बीच में एक ख़ाने में छुपा रहता है। टिकट के बीच में एक छोटा छेद रहता है, जिसमें से एक छोटा सा फ़ीता निकला रहता है उस पर छपा होता है 'खींचो' बहुत कम आदमी ऐसे होते हैं जो उसे खींचने का लोभ सम्बरण कर सकें। जैसे ही फ़ीते को खींचा जाता है एक छोटी सी स्लिप निकल आती है जिस पर विज्ञापन छपा होता है। रेल के यात्रियों के पास फ़ालतू समय बहुत होता है और उनमें विज्ञापन देने का प्रभाव हमेशा अच्छा निकलता है।

लेखक की सफलता

कुछ समय पहले एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिसका नाम था 'पश्चिमी मोर्चे पर पूर्ण शान्ति है।' इसकी बिक्री का जो हिसाब प्रकाशकों ने प्रकट किया है वह आश्चर्यजनक है। कुछ ही महीनों में मूल-पुस्तक और उसके अनुवादों की क़रीब सोलह लाख प्रतियाँ बिक गईं, जिनका विवरण इस प्रकार है:—जर्मनी १०,००,०००; फ़्रान्स ४,५०,०००; अमेरिका ३,२५,०००; इङ्गलैण्ड ३,१०,०००; जैकोस्लोविका ८१,०००; स्पेन ७५,००० नॉर्वे-स्वीडन १,३७,०००; हॉलैण्ड ७०,०००; और जापान ५०,०००; दूसरे मुल्क १,१२,००० से ज़्यादा। केवल एक बड़े मुल्क में इस पुस्तक का कोई संस्करण नहीं निकला है और वह है इटाली। वहाँ इसे सरकारी आज्ञा द्वारा रोक दिया गया है।

कीड़ों को मारने वाली किरणें

मि० एच० नील नामक बिजली के इञ्जीनियर ने एक ऐसी बिजली की रोशनी निकाली है, जिससे पौधों को खाने वाले कीड़े मर जाते हैं। उसके बाग़ में कीड़ों ने पौधों का ऐसा सत्यानाश किया कि उन्होंने उनके नाश की प्रतिज्ञा कर ली, और कुछ दिनों के परिश्रम से ऐसी लैम्प बनाई जिसकी रोशनी से कीड़े हज़ारों की संख्या में फ़ौरन नष्ट हो जाते हैं, पर पौधों को कुछ भी हानि नहीं पहुँचती।

—गत वर्ष इङ्गलैण्ड की प्रधान रेलवे लाइनों से १ अरब ३० करोड़ यात्रियों ने यात्रा की। इसका अर्थ होता है कि इङ्गलैण्ड के मर्द, औरत और बच्चे ने एक वर्ष में तीस बार यात्रा की।

—स्कॉटलैण्ड की एक रेलगाड़ी जिसका नाम "फ़्लाइङ्ग स्कॉटमैन" है, बिना ठहरे ३९२·७ मील की यात्रा करती है। संसार में इससे ज़्यादा दूरी तक बिना ठहरे चलने वाली गाड़ी दूसरी नहीं है। इसके सिवाय इङ्गलैण्ड की अन्य दो गाड़ियाँ भी बिना ठहरे क्रमशः ३०१ और २२५ मील की यात्रा करती हैं।

राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स का क्या फल निकला ?

साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व क़ायम :: रियासतों को असीम अधिकार

.फ़ेडरल स्ट्रक्चर (सङ्घ-योजना) कमिटी की रिपोर्ट का सारांश

राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स की जो फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमिटी भारतीय शासन-विधान की रचना करने के लिए नियुक्त की गई थी और जिसकी कार्रवाई पाठक इतने दिनों तक 'भविष्य' और अन्य पत्रों में पढ़ते रहे होंगे, उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई। वह एक ख़ासा लम्बा मसौदा है और उसमें शासन-सङ्गठन, सङ्घ-शासन-सभाओं का आकार और विभिन्न भागों से प्रतिनिधियों के चुनने के तरीक़े, विशेष समुदायों के प्रतिनिधित्व, दोनों शासन-सभाओं के सम्बन्ध और आर्थिक व्यवस्था पर विचार किया गया है।

रिपोर्ट में मुख्यतया पाँच बातों पर ध्यान दिया गया है। वे यह हैं—भारतवासियों की यह आम तौर पर फैली हुई इच्छा कि उनके राजनीतिक अधिकारों में वृद्धि हो, रियासतों की यह आकांक्षा कि उनके भीतरी मामलों में हस्तक्षेप न किया जाय, अल्प-संख्यक समुदायों का यह निर्विवाद दावा कि उनके साथ उचित व्यवहार किया जाय, सम्राट की सरकार का भार और उत्तरदायित्व और आर्थिक दशा तथा व्यवस्था का सन्तोष-जनक होना।

व्यवस्थापक सभाओं का सङ्गठन

दोनों व्यवस्थापक सभाओं के सङ्गठन पर रिपोर्ट में यह कल्पना करके, विचार आरम्भ किया गया है कि उनके सदस्यों की संख्या क्रमशः २०० और ३०० रहेगी। बड़ी सभा में रियासतों के प्रतिनिधियों की संख्या ४० प्रति सैकड़ा और छोटी में ३३⅓ प्रति सैकड़ा रहेगी। यह विभाग इस कल्पना पर निश्चित किया गया है कि तमाम रियासतें सङ्घ-शासन में भाग लेंगी।

बड़ी सभा

कमिटी की सिफ़ारिश है कि बड़ी सभा के प्रतिनिधि अपने-अपने विभागों की तरफ़ से हों और विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि वहाँ की व्यवस्थापक सभाओं द्वारा चुने जायँ। छोटी सभा में ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधि जनता द्वारा चुने जाने चाहिएँ।

विभिन्न प्रान्तों के सदस्यों की संख्या

ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधियों को विभिन्न प्रान्तों में बाँटने के सम्बन्ध में कमिटी की सम्मति है कि केवल जन-संख्या के अनुसार बँटवारा कर देने से काम न चलेगा, वरन् अन्य बातों पर ध्यान देना भी आवश्यक होगा। बड़ी सभा में इस बात पर ध्यान रखना आवश्यक है कि हर एक विभाग के प्रतिनिधि क़रीब-क़रीब बराबर हों। यद्यपि कमिटी इस समय ठीक-ठीक बँटवारा कर सकने में असमर्थ है, पर एक सम्भव तरीक़ा यह हो सकता है कि जिन प्रान्तों की जन-संख्या २ करोड़ से ऊपर है, उनमें से प्रत्येक को १७ प्रतिनिधि, मध्यप्रदेश को (अगर उसमें बरार भी शामिल रहे) ७, आसाम को ५, सीमा-प्रान्त को २ और देहली, अजमेर, कुर्ग और ब्रिटिश बिलूचिस्तान को एक-एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया जाय।

छोटी सभा के प्रतिनिधियों का बँटवारा यथासम्भव जन-संख्या के अनुसार ही होगा। तो भी बम्बई के व्यापारिक महत्त्व और पञ्जाब के अन्य कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण होने को निगाह में रखते हुए, इसमें कुछ रद्दोबदल करना होगा। इन बातों को निगाह में रख कर कमिटी मोटे तौर पर प्रतिनिधियों का बँटवारा इस तरह होना सम्भव समझती है :—पञ्जाब, बम्बई, बिहार और उड़ीसा में से हर एक को २६; मद्रास, बङ्गाल और संयुक्तप्रान्त में से हर एक को ३२; मध्यप्रदेश को १२; आसाम को ७; सीमा-प्रान्त को ३ तथा अन्य छोटे-छोटे प्रान्तों में से हर एक को १।

रियासतों के प्रतिनिधि

रियासतों के प्रतिनिधियों के सम्बन्ध में कमिटी का मत है कि जिन रियासतों को पृथक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार नहीं दिया जा सकता, उनके प्रतिनिधि मनोनीत किए जाएँगे। छोटी सभा के सम्बन्ध में निर्णय करने का अधिकार रियासतों की एक कमिटी पर छोड़ देना चाहिए। इस सम्बन्ध में उन रियासतों ने, जिनमें व्यवस्थापक सभाएँ मौजूद हैं, विश्वास दिलाया है कि वे उनकी सम्मति लेकर निर्णय करेंगी। छोटी रियासतों के प्रतिनिधियों के सम्बन्ध में सबसे अच्छी बात तो यही है कि वे स्वयम् परस्पर में विचार करके इसका निर्णय करलें। इसके लिए उनको मार्च १९३२ तक अवसर दिया जा सकता है। तब तक अगर निर्णय न हो तो फिर सम्राट की सरकार इसके लिए एक निष्पक्ष कमिटी नियुक्त करेगी।

विशेष समुदायों के प्रतिनिधि

अछूतों, देशी ईसाइयों, यूरोपियनों और एङ्ग्लो इण्डियनों के अल्प-संख्यक सम्प्रदायों के प्रतिनिधित्व के विषय में कमिटी कुछ नहीं कह सकती, क्योंकि इसके लिए एक पृथक कमिटी नियुक्त हो चुकी है और उसने अभी कोई निर्णय नहीं किया है। पर अन्य समुदायों के विषय में वह अपनी पिछली सिफ़ारिशों को फिर पेश करना चाहती है कि ज़मींदारों, यूरोपियन और भारतीय व्यापारियों तथा मज़दूरों के लिए विशेष प्रतिनिधियों का अधिकार दिया जाय। इनकी संख्या और चुनाव के तरीक़े का फ़ैसला 'मताधिकार कमिटी' करेगी।

मनोनीत सदस्य

मनोनीत सदस्यों के सम्बन्ध में बहुत-कुछ विचार करने के पश्चात् कमिटी ने अपने पहले निर्णय को, कि वायसरॉय को हर एक सभा के लिए अधिक से अधिक १० सदस्य मनोनीत करने का अधिकार हो, निरर्थक समझ कर छोड़ दिया है, क्योंकि यदि ये सदस्य ग़ैर-सरकारी होंगे तो उनको रक्षित विभागों के सम्बन्ध में किसी तरह का विशेष ज्ञान न होगा, और यदि सरकारी कर्मचारी होंगे तो वर्तमान समय की तरह यही कठिनाई पेश आएगी कि उनको सभा में हाज़िर रहने के लिए अपना लाभ छोड़ना पड़ेगा। इसके सिवाय उनके वोटों की संख्या नाम-मात्र को होगी, अथवा वे अपना एक 'सरकारी ब्लॉक' बना लेंगे। यह बात नवीन शासन-विधान के उपयुक्त नहीं है। इसलिए कमिटी ने विचार किया है कि बड़ी सभा में कुछ जगहें रिज़र्व रक्खी जायँ और उनके लिए वायसरॉय बड़ी उम्र के कुछ ऐसे राजनीतिज्ञों को नियत करें, जिनको सार्वजनिक कामों का अनुभव हो। इनमें कोई सरकारी नौकरी करने वाला व्यक्ति न रक्खा जायगा और इस प्रकार 'ऑफ़ीशियल ब्लॉक' बनने की आशङ्का जाती रहेगी।

मेम्बरी की योग्यता

छोटी सभा के प्रतिनिधियों के लिए वे ही शर्तें काफ़ी होंगी, जो वोटरों के लिए रक्खी जायँगी। पर सीनेट के लिए कुछ अतिरिक्त शर्तों का होना ज़रूरी जान पड़ता है। इसके निर्णय का भार तो 'मताधिकार कमिटी' पर रहेगा। पर इस कमिटी का ख़्याल है कि वर्तमान समय में कौन्सिल ऑफ़ स्टेट के वोटरों और उम्मेदवारों के लिए जो नियम प्रचलित हैं, वे उदाहरण-स्वरूप ग्रहण किए जा सकते हैं, सिवाय इसके कि उम्र कम से कम ३५ वर्ष होनी चाहिए। वोटरों की अयोग्यता के वर्तमान नियम भी उचित हैं, पर कमिटी की राय में राजनीतिक और साधारण जुर्मों के क़ैदियों के सम्बन्ध में कुछ भेद करना आवश्यक है। पर जो व्यक्ति चुनाव के समय नज़रबन्दी की सज़ा भोग रहा हो और चुने जाने पर जिसका व्यवस्थापक सभा के कार्य में भाग लेना सम्भव न हो, उसे उम्मेदवार होने की अनुमति न दी जाय। कमिटी के ख़्याल से रियासतों और ब्रिटिश भारत में प्रतिनिधियों की योग्यता की शर्तों का समान होना तो असम्भव है, पर अयोग्यता के सम्बन्ध में पूरी तरह से समानता होनी आवश्यक है।

दोनों सभाओं का सम्बन्ध

कमिटी ने राजभक्ति की शपथ के लिए कोई विशेष स्वरूप नहीं बतलाया है, और दोनों सभाओं के पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में उसकी राय है कि विधान में कोई बात ऐसी न होनी चाहिए, जिससे एक सभा दूसरी के अधीन समझी जाय। इसलिए जब तक कोई बिल दोनों सभाओं द्वारा पास न हो जाय, तब तक वह क़ानून न बनाया जाय। दोनों सभाओं को बिलों में कमी-बेशी और संशोधन करने का अधिकार हो। यदि किसी बिल के सम्बन्ध में दोनों में मतभेद हो तो गवर्नर-जनरल दोनों सभाओं का एक विशेष अधिवेशन बुला कर उसका निर्णय करे।

म० गाँधी की सम्मति

फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमिटी की रिपोर्ट पर विभिन्न मत प्रकट किए जा रहे हैं। कितने ही भारतीय प्रतिनिधियों ने, जिनमें सर तेजबहादुर सप्रू भी हैं, उसे बहुत ही बढ़िया बतलाया है। पर महात्मा गाँधी उससे बहुत कम सन्तुष्ट हैं। उन्होंने कमिटी के प्रेज़िडेण्ट लॉर्ड सैङ्की को एक छोटा सा पत्र लिख कर अपना मतभेद प्रकट किया है। महात्मा जी कहते हैं :—

"सब से अच्छा तो यही था कि शासन-सभा एक ही रक्खी जाती, पर कुछ आवश्यक शर्तों को रख कर वे सर मिर्ज़ा इसमाईल के इस प्रस्ताव को मानने के लिए तैयार थे कि सरकार द्वारा मनोनीत सदस्यों की एक बड़ी सभा, जिसके सदस्यों की संख्या बहुत कम हो, बना दी जाय, और वह केवल सम्मति देने का अधिकार रक्खे।"

आगे चल कर महात्मा गाँधी कहते हैं—"कॉङ्ग्रेस इस बात की घोर विरोधी है कि ज़मींदारों, यूरोपियन और भारतीय व्यापारियों तथा मज़दूरों को विशेष प्रतिनिधि भेजने के अधिकार दिए जायँ, इन समुदायों के प्रतिनिधियों को साधारण वोटरों से ही अपील करनी चाहिए। इसी तरह कॉङ्ग्रेस सरकार द्वारा मनोनीत सदस्यों का विरोध करती है। इसके बजाय विशेषज्ञों को सभा के सामने अपने विचार प्रकट करने का सुभीता मिलना चाहिए। मैं रियासतों के प्रतिनिधित्व और उसमें रियासतों की प्रजा के भाग के सम्बन्ध में बहुत-कुछ कहना चाहता हूँ, पर कुछ दिनों तक मैं अपनी सम्मति को प्रकट करना उचित नहीं समझता। मैं अपने पहले प्रस्ताव पर अब भी क़ायम हूँ कि चुनाव अप्रत्यक्ष हो अथवा ग्रामों के प्रतिनिधियों द्वारा हो। यह तभी होगा जबकि प्रत्येक बालिग़ आदमी को वोट का अधिकार मिल जायगा, जैसा कि कॉङ्ग्रेस का सिद्धान्त है।"

श्रीमती सुब्बरायन के उद्योग से चुनाव के सम्बन्ध में यह बात भी शामिल कर दी गई है कि स्त्रियों को व्यवस्थापक सभा के लिए उम्मेदवार होने का पूरा अधिकार होगा। यह भी निश्चय हुआ है कि एक व्यक्ति एक ही समय में प्रान्तीय और केन्द्रीय व्यवस्थापक सभाओं का सदस्य नहीं रह सकता।

कॉङ्ग्रेस के ख़िलाफ़ भयङ्कर इलज़ाम !

"बङ्गाल का एक कॉङ्ग्रेसी-नेता खुल्लम-खुल्ला ख़ूनी क्रान्ति में विश्वास रखता है।"

यूरोपियन एसोसिएशन के सेक्रेटरी का विष वमन

"न तो धमकियों और न गुप्त-हत्याओं से अङ्गरेज़ भारत में अपनी नीति को त्याग सकते हैं। उन्होंने उस नीति को इसलिए अङ्गीकार किया है चूँकि वे उसकी सचाई में विश्वास रखते हैं। उनका उद्देश्य न्याययुक्त है और इससे उनकी ताक़त दुगुनी हो जाती है।"

यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़ीडेण्ट मि० ई० विलियर्स का उपर्युक्त सन्देश ३१ अक्टूबर को दार्जिलिङ्ग की यूरोपियन एसोसिएशन के सामने उसके सेक्रेटरी मि० चैपमैन मॉर्टीमर ने पढ़ कर सुनाया।

इस सम्बन्ध में भाषण करते हुए मि० मॉर्टीमर ने कहा—"जवाहरलाल नेहरू और दूसरे कॉङ्ग्रेस के नेता बार-बार क़ानून-भङ्ग आन्दोलन को फिर से जारी करने की बात कह रहे हैं। ये नेता इस बात को भूल जाते हैं कि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक ग़ैर-सरकारी अङ्गरेज़ लोग एक नीति के सूत्र में बँधे हैं। अगर भारत के किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक दल ने इस समय या भविष्य में सङ्गठित रूप में असहयोग या क़ानून-भङ्ग आन्दोलन को फिर से जारी करने का ज़रा सा भी इशारा किया, तो फिर शासन-सुधार के कार्य में उनको अङ्गरेज़ों से नाम मात्र की सहायता भी नहीं मिल सकती।"

उन्नति की कसौटी

राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स का सबसे अधिक महत्व इसी बात में है कि उसने सबसे पहली बार इस बात का प्रबन्ध किया है। बिना सहयोग के अङ्गरेज़ भारत में शासन-सुधार नहीं कर सकते।

औपनिवेशिक स्वराज्य के विषय में भाषणकर्ता ने याद दिलाई कि लॉर्ड इर्विन ने दो वर्ष पहले इस सम्बन्ध में जो मत प्रकट किया था उसमें स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया था—"औपनिवेशिक स्वराज्य की पूर्ण सफलता के लिए यह आवश्यक है कि देशी रियासतों को अपनी जगह निश्चित करने का मौक़ा दिया जाय। इसके साथ ही इस समय जो क़दम रक्खा गया है वह ब्रिटिश भारत अथवा देशी रियासतों के अन्तिम लक्ष्य के प्रतिकूल नहीं है।"

कितने ही स्वार्थी लोग इस समय यह सिद्ध करने की चेष्टा कर रहे हैं कि सन् १९२९ में इङ्गलैण्ड ने जो वादा किया था वह केवल ब्रिटिश भारत के लिए औपनिवेशिक स्वराज्य था। इससे बढ़ कर असत्य और कोई बात नहीं हो सकती और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का कर्तव्य है कि वह फिर से सच्ची स्थिति को स्पष्ट कर दे और यह भी बतला दे कि लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता और स्वयम् लक्ष्य दो बिल्कुल भिन्न चीज़ें हैं, जैसा कि लॉर्ड इर्विन ने बार-बार बतलाया था।

बङ्गाल में हत्याएँ

इङ्गलैण्ड के निवासियों और वहाँ की पार्लामेण्ट को बङ्गाल की वास्तविक वर्तमान दुर्दशा का ज़रा सा भी पता नहीं है। यहाँ का एक भी सरकारी कर्मचारी सुरक्षित नहीं है और कितने ही ग़ैर-सरकारी लोगों को भी जान से मारे जाने की धमकी दी गई है। यहाँ की दशा इतनी गम्भीर हो गई है कि कितने ही मुसलमान नेता यह सिफ़ारिश करने का विचार कर रहे हैं कि जब तक आतङ्कवाद का अन्त न हो जाय तब तक यहाँ किसी तरह के शासन-सुधार न किए जायँ।

इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि अगर स्वराज्य प्राप्त, बङ्गाल में बक्सा और हिजली के कैम्पों के नज़रबन्द ख़ूनी व्यक्ति छोड़ दिए जायँ तो यहाँ की क्या गति होगी?

इतने पर भी बङ्गाल के दो प्रमुख कॉङ्ग्रेस नेताओं में से एक खुल्लमखुल्ला ख़ूनी क्रान्ति में विश्वास रखता है। दूसरा यह दावा करता है कि वह कुछ ही सप्ताह में स्वराज्य प्राप्त कर लेगा और यदि राउण्ड टेबिल कॉन्फ़्रेन्स के पश्चात् भारत को पूर्ण-स्वतन्त्रता प्राप्त न हुई तो वह हत्याकारियों का साथ देगा।

जो व्यक्ति इन बातों को कहता है वह कॉङ्ग्रेस की वर्किङ्ग कमिटी का मेम्बर है। इसी वर्किङ्ग कमिटी ने देहली के समझौते को मन्ज़ूर किया था और इसलिए उसे मालूम होना चाहिए कि उस समझौते के अनुसार भारत के ब्रिटिश साम्राज्य से अलग हो सकने का सवाल बिल्कुल ख़त्म हो जाता है।

इस परिस्थिति में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि बङ्गाल के यूरोपियनों ने इस बात का गम्भीरतापूर्वक दृढ़ निश्चय कर लिया है कि चाहे कुछ भी हो आतङ्कवाद की जड़ निर्दयतापूर्वक उखाड़ फेंकी जाय और सरकारी अफ़सरों के प्राणों की रक्षा की जाय।

इस सम्बन्ध में यह याद रखना आवश्यक है कि एसोसिएशन की नीति के अनुसार भारत में कोई भी नया शासन-सुधार जारी करने से पहले यहाँ के गोरे सिविल सर्विस वालों का भविष्य निश्चय कर लिया जाय।

—ए० प्रे०

* * *

कॉलेजों में राजद्रोह की शिक्षा

कलकत्ता यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़ीडेण्ट मि० एडवर्ड विलियर्स ने अस्पताल से लन्दन के 'डेली एक्सप्रेस' को तार भेजा है कि भारत में क्रान्तिकारी दल के अपराधों को रोकने के लिए आवश्यक है कि स्कूलों और कॉलेजों में गुप्त राजद्रोही शिक्षा का प्रचार रोका जाय। इसका कुछ दोष तो उन नेताओं पर है जो इस तरह के अपराधों की प्रशंसा करते हैं और कुछ सरकार पर है जो यह जान कर भी कि वहाँ राजद्रोही शिक्षा दी जाती है, उसे रोकने की चेष्टा नहीं करती।

* * *

बङ्गाल में गिरफ़्तारियों का धूम

नए बङ्गाल ऑर्डिनेन्स के अनुसार कलकत्ता में कॉरपोरेशन प्रायमरी स्कूल के शिक्षक श्री० सुरेन्द्रनाथ रॉय गिरफ़्तार कर लिए गए। बारीसाल में प्रेमांशुदास गुप्ता और दीनबन्धु घोषाल नामक दो स्कूल के विद्यार्थी क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। सिराजगञ्ज कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० उपेन्द्रनाथ रॉय भी ऑर्डिनेन्स में गिरफ़्तार किए गए हैं।

रिवॉलवरें मिलीं

सोमवार को सुबह कलकत्ता पुलिस की स्पेशल ब्राञ्च ने एक ही समय १३ स्थानों की तलाशी ली, इनमें चार बोर्डिङ्ग हाउस थे और बाक़ी प्राइवेट मकान। पाँच नवयुवक गिरफ़्तार किए गए। पटेश विश्वास नामक व्यक्ति के पास दो रिवॉलवरें और कारतूस मिले। पुलिस और भी १२ नवयुवकों को जाँच के लिए पकड़ ले गई। कहा जाता है कि तलाशियाँ यूरोपियन एसोसिएशन के प्रेज़ीडेण्ट को गोली मारने के सम्बन्ध में हुई हैं।

श्री० विमलदास गुप्ता

यह भी कहा जाता है कि मि० विलियर्स को गोली मारने वाले की पूरी तरह शनाख़्त हो गई है और वह विमलदास गुप्ता ही है, जिसका मिदनापुर के कलक्टर मि० पैडी की हत्या के सम्बन्ध में तलाश किया जा रहा था।

चटगाँव में तलाशियाँ

चटगाँव में २ नवम्बर को ढाका और कलकत्ता के गोलीकाण्डों के सम्बन्ध में कितने ही मकानों की तलाशी ली गई और कोआपरा स्कूल के शिक्षक श्री० विनय सेन, श्री० द्विजेन्द्र दास और श्री० रमणीदेव बङ्गाल ऑर्डिनेन्स में गिरफ़्तार कर लिए गए। अन्दर क़िला मुहल्ले में एक पुस्तकों की दुकान की तलाशी ली गई, पर कोई चीज़ आपत्ति-जनक नहीं पाई गई।

डकैती के लिए गिरफ़्तारी

मदारीपुर का समाचार है कि श्री० दिव्येन्दु सुन्दर मुखोपाध्याय, एम० एस-सी० हाल की एक डकैती के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। श्री० पुष्परञ्जन चट्टोपाध्याय भी, जिनको दासपुर के सब-इन्सपेक्टर की हत्या वाले मामले में दण्ड मिला था, और जो अपनी पूरी सज़ा भोग कर अभी घर लौटे थे, इसी मामले में गिरफ्तार किए गए हैं। दोनों हवालात में रक्खे गए हैं।

मैमनसिंह में गिरफ़्तारियाँ

४ तारीख़ को मैमनसिंह में कितने ही मकानों की तलाशियाँ ली गईं और कई व्यक्ति बङ्गाल ऑर्डिनेन्स में पकड़े गए। मालूम हुआ है, ये तलाशियाँ हाल के राजनीतिक उपद्रवों के कारण ली गई हैं।

—कलकत्ता कॉङ्ग्रेस की प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती विमल प्रतिभा देवी के ऊपर डकैती में भाग लेने का जो अभियोग लगाया गया, अभी तक उसकी सुनवाई श्री० लालबिहारी चटर्जी सेशन जज करते थे। उन्होंने स्वास्थ्य के ख़राब होने के कारण पेन्शन ले ली है और अब उनके स्थान पर राय राजेन्द्रनाथ रायबहादुर नियुक्त हुए हैं।

—३ नवम्बर को ढाका की मेडिकल स्टुडेण्ट एसोसिएशन के प्रेज़िडेण्ट श्री० प्रबोधचन्द्र मजूमदार मि० डुर्नो पर गोली चलाए जाने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए।

— राजवाड़ी (बङ्गाल) में कोरकदी कॉङ्ग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० श्यामेन्द्रनाथ भट्टाचार्य दफ़ा १२१ ताज़ीरात हिन्द में गिरफ़्तार कर लिए गए। आप फ़रीदपुर कॉलेज में बी० ए० के विद्यार्थी हैं!

—नीचे लिखे व्यक्ति भी बङ्गाल ऑर्डिनेन्स या बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं:—

(१) बाबू प्रफुल्लकुमार मजूमदार, भूतपूर्व सेक्रेटरी फ़रीदपुर डि० कॉङ्ग्रेस कमिटी (२) श्री० अमूल्यकाञ्चन दत्त गोकुलपारा, (३) श्री० अमरनाग मैमनसिंह, (४) श्री० पुलिनबख़्शी, मैमनसिंह, (५) श्री० शचीन्द्रलाल खान, असिस्टेण्ट सेक्रेटरी कॉङ्ग्रेस कमिटी राजशाही, (६) श्री० तारादास भट्टाचार्य, राजशाही, (७) श्री० राधारमण भट्टाचार्य, राजशाही (८) श्री० सुधेंसुकुमार चटर्जी, बोगरा, (९) श्री० बगला प्रसन्न गुह राय, फ़रीदपुर कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रमुख कार्यकर्ता (१०) श्री० जीवनकृष्ण सन्याल, पवना स्टुडेण्ट एसोसिएशन के कार्यकर्ता।

* * *

मालिक बनाम 'कीपर' का मनोरञ्जक मामला

'चाँद' और 'भविष्य' के सञ्चालक श्री० आर० सहगल पर 'प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट' की दफ़ा १३ के अनुसार जो मुक़दमा चल रहा है, उसकी पेशी ३० अक्टूबर को ख़ाँ साहब मौलवी रहमान बख़्श क़ादरी के इजलास में हुई। चूँकि सरकारी गवाहों के बयान बुधवार को ख़त्म हो चुके थे, इसलिए मैजिस्ट्रेट ने सहगल जी से पूछा :—

सवाल—आपने इस मुक़दमे में अपने विरुद्ध तमाम गवाहियों को सुन लिया और आप पर जो इलज़ाम लगाया गया है, वह भी आपको मालूम हो गया। अब आपका इस सम्बन्ध में क्या कहना है।

जवाब—मैं अपना लिखा हुआ बयान पेश करने वाला हूँ और अभी सिर्फ़ इतना ही कहना चाहता हूँ कि यह मुक़द्दमा बिल्कुल द्वेषवश चलाया गया है। मि० मुडी के साथ मेरी अनबन थी, जिसे वे अपने बयान में मन्ज़ूर भी कर चुके हैं। मैं सफ़ाई के गवाह पेश करूँगा।

श्री० मोहनलाल नेहरू सफ़ाई के सब से पहले गवाह थे। उन्होंने कहा कि वे इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस के मैनेजिङ्ग डायरेक्टर हैं। यह कम्पनी लिमिटेड है और उनको तनख़्वाह मिलती है। प्रेस की मालिक इलाहाबाद लॉ जर्नल कम्पनी है। सन् १९२१ तक, जब कि लिमिटेड कम्पनी बनाई गई, वे ही प्रेस के मालिक और कीपर थे। मैनेजिङ्ग डायरेक्टर का काम कम्पनी के तमाम इन्तज़ाम की देख-रेख करना है। डायरेक्टर एडीटरों को नौकर रखते हैं और बरख़ास्त करते हैं। आजकल श्री० कृष्णप्रसाद दर प्रेस के कीपर हैं। वे डायरेक्टरों की मन्ज़ूरी से ही नियुक्त किए गए हैं।

सरकार की तरफ़ के अतिरिक्त वकील मि० ए० पी० पाण्डे के जिरह करने पर आपने कहा कि वे प्रेस का ऊपरी इन्तज़ाम करते हैं। सन् १९२१ से पं० कृष्णप्रसाद दर प्रेस के कीपर हैं। वे उनके साले लगते हैं। प्रेस की स्थापना सन् १९०५ में हुई थी।

दूसरे गवाह पं० कृष्णप्रसाद दर ने कहा कि वे आज कल इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस के कीपर हैं और २५०) रु० मासिक पाते हैं। इन्तज़ाम के मामलों में पण्डित मोहनलाल नेहरू मैनेजिङ्ग डायरेक्टर उनके बड़े अफ़सर हैं और नौकरों के रखने तथा निकालने का उनको पूरा अख़्तियार है।

मैजिस्ट्रेट—डायरेक्टरों की सम्मति से या उसके बिना?

गवाह—बेशक, डायरेक्टरों की सम्मति से। गवाह ने यह भी कहा कि अख़बार में जो कुछ छपता है, प्रिण्टर और पबलिशर की हैसियत से उसकी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर है।

मि० मुकर्जी (सफ़ाई के वकील)—कीपर की ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं?

गवाह—मैं नहीं जानता कि कीपर की, इसके सिवाय और कोई ज़िम्मेदारी है, कि प्रेस में जो कुछ छपे उसका क़ानूनी उत्तरदायित्व उस पर रहे।

मि० पाण्डेय के जिरह करने पर आपने कहा कि वे फ़ाइन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज को जानते हैं और जहाँ तक उनको पता है, श्री० आर० सहगल उसके मालिक हैं। पर वे यह नहीं कह सकते कि वहाँ के कारबार की देख रेख दरअसल कौन करता है।

श्री० एच० के० घोष ने कहा कि इण्डियन प्रेस एक लिमिटेड कम्पनी है, जिसमें डायरेक्टर और हिस्सेदार वग़ैरह शामिल हैं। गवाह प्रेस का जनरल मैनेजर है और प्रतिमास अपनी तनख़्वाह पाता है। इस प्रेस की एक शाखा बनारस में है, जिसके मैनेजर मि० ए० के० बोस हैं। श्री० घोष बनारस की शाखा के कीपर हैं। उनके प्रेस से 'सरस्वती' 'बालसखा' और 'बच्चों की दुनिया' मासिक पत्र निकलते हैं। उन मासिक पत्रों की ज़िम्मेदारी एडीटर और प्रिण्टर पर रहती है और उनमें प्रकाशित होने वाले मज़मूनों का भार सम्पादकों पर रहता है। वे इलाहाबाद के भी प्रेस के कीपर हैं। मैनेजर की हैसियत से वे प्रेस में लोगों को नौकर रखते हैं और निकालते हैं।

सवाल—कीपर की हैसियत से आप अपनी ज़िम्मेदारी क्या समझते हैं?

जवाब—क़ानून के अनुसार कीपर की जो ज़िम्मेदारियाँ बतलाई गई हैं, उनके सिवाय मैं कुछ और नहीं जानता। हमारे यहाँ से जो कुछ प्रकाशित होता है, उसके प्रिण्टर और प्रकाशक मि० के० मित्र हैं।

जिरह करने पर गवाह ने कहा कि वे कभी-कभी बनारस की ब्राञ्च का हिसाब-किताब जाँचने वहाँ जाते हैं।

इण्डियन प्रेस के प्रिण्टर और प्रकाशक मि० के० मित्र ने कहा कि प्रिण्टर का कर्तव्य प्रेस में छपने को आने वाले मैटर को देखना है। अगर वह मन्ज़ूर होने लायक़ हुआ तो मन्ज़ूर कर लिया जाता है, अन्यथा इन्कार कर दिया जाता है।

दूसरा दिन

दूसरे दिन ३१ ता० को केवल दो गवाहों की गवाहियाँ हुईं।

बेलवेडियर प्रेस के मैनेजिङ्ग प्रोप्राइटर श्री० भक्तशिरोमणि ने कहा कि प्रेस के कारबार पर उनका पूरा क़ब्ज़ा है। उनके बाप प्रेस के कीपर हैं। प्रेस के प्रिण्टर और प्रकाशक मि० ई० हॉल हैं, जो हिन्दी या उर्दू नहीं जानते। उनके प्रेस में अङ्गरेज़ी, उर्दू और हिन्दी की किताबें छपती हैं।

फ़ाइन आर्ट प्रिण्टिङ्ग कॉटेज के सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० एच० पी० मैत्र ने कहा कि प्रेस के सुपरिण्टेण्डेण्ट की हैसियत से उनका कर्तव्य सुशृङ्खलित रूप से काम चलाना, काम करने वालों को काम बाँटना, उनसे काफ़ी काम कराना, हाज़िरी के रजिस्टर की जाँच करना आदि हैं। अख़बारों की कॉपी उनको सम्पादकों से मिलती है। किताबों की कॉपी मैनेजर के यहाँ से मिलती है और कभी-कभी सम्पादकों से भी। श्रीमती लक्ष्मीदेवी प्रेस की प्रिण्टर और पब्लिशर हैं। वे प्रेस की कीपर भी हैं। आजकल उनको श्री० आर० सहगल से पत्रों के लिए कुछ भी कॉपी नहीं मिलती। जब वे प्रिण्टर, प्रकाशक और सम्पादक थे, तो कुछ कॉपी मिला करती थी। श्रीमती लक्ष्मीदेवी अक्सर उनके विभाग में प्रिण्टर, पब्लिशर और कीपर की हैसियत से आया-जाया करती हैं।

जिरह करने पर मि० मैत्र ने कहा कि जहाँ तक उनको मालूम है, श्री० सहगल इन्तज़ाम में कुछ भी हाथ नहीं डालते। उनके कामों के विषय में वे बहुत कम जानते हैं। वे इतना ही जानते हैं कि श्री० सहगल आर्थिक मामलों पर निगाह रखते हैं। अगर किसी काम में या विभाग में नुक़सान हो, तो वे मैनेजर से या गवाह से जवाब तलब करते हैं।

मि० पाण्डेय—अगर आपके प्रेस में कोई किताब छापने को आए तो उसका निर्णय कौन करता है?

गवाह—मैं नहीं कह सकता? पर जब सम्पादकों के पास से मेरे पास कॉपी आती है, तो मैं उसे छाप कर तैयार करता हूँ।

मि० मैत्र ने कहा कि वे प्रेस के कीपर की ज़िम्मेदारी कुछ नहीं बतला सकते। श्रीमती लक्ष्मीदेवी उनके विभाग में काम की रफ़्तार देखने आती हैं। वे प्रेस के अहाते में ही रहते हैं और दो साल से नौकरी कर रहे हैं।

तीसरा दिन

२ नवम्बर को सबसे पहले गवाह ज्ञान-मण्डल प्रेस (बनारस) के कीपर श्री० माधवविष्णु पराडकर ने कहा कि मैंने प्रेस के असिस्टेण्ट मैनेजर बाबू बलदेवदास की आज्ञा से कीपर का डिक्लेरेशन दाख़िल किया था। प्रेस के मालिक बाबू शिवप्रसाद गुप्त और मैनेजर श्री० श्रीप्रकाश हैं। मुझे ७०) रु० मासिक और असिस्टेण्ट मैनेजर को ५०) रु० मासिक वेतन मिलता है।

सवाल—कीपर का क्या कर्तव्य है?

जवाब—मालिक की जायदाद की रखवाली करना और उसे सँभाल कर रखना।

मि० पाण्डेय के पूछने पर गवाह ने कहा कि मैं सन् १९२३ से १९२६ तक प्रेस का कीपर था।

पायोनियर प्रेस के एकाउण्टेण्ट मि० ए० आर० बिन्स ने कहा कि एक हफ़्ते पहले मैंने पायोनियर प्रेस के कीपर का डिक्लेरेशन दिया है। मुझसे पहले मि० पोथैकेरी कीपर थे।

सवाल—प्रेस के कीपर की हैसियत से आपकी क्या ज़िम्मेदारी है?

जवाब—कोई ख़ास ज़िम्मेदारी नहीं है।

तीसरे गवाह लीडर प्रेस के श्री० कृष्णराम मेहता थे। यह पूछने पर कि लीडर प्रेस का कीपर कौन है, उन्होंने कहा—मैं समझता हूँ कि मैं ही कीपर हूँ।

सवाल—कीपर की हैसियत से आप क्या कार्य करते हैं?

जवाब—मुझे कीपर के कार्यों का विशेष रूप से पता नहीं है। मैं समझता हूँ कि वह प्रेस की जनरल ज़िम्मेदारी रखने वाला एक अफ़सर होता है।

सवाल—आपकी ग़ैरहाज़िरी में आपके काम की देख-भाल कौन करता है?

जवाब—कोई भी, जिसे मैं अधिकार दे जाऊँ।

सवाल—क्या सम्पादक की हैसियत से आप अख़बार में छपने वाले सब मैटर को देख लेते हैं?

मैं देखने की कोशिश करता हूँ, पर यह स्वभावतः असम्भव है कि मैं अख़बार में छपने वाली हर एक चीज़ की जाँच कर सकूँ।

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस के कर्मचारी मुन्शी दिलदारअली ने कहा कि मैं हिन्दुस्तान प्रेस का कीपर हूँ और मेरे भाई उसके मालिक हैं। मुझे कीपर के कर्तव्य और अधिकारों का कुछ पता नहीं है। मेरे भाई ने मुझसे डिक्लेरेशन देने को कहा और मैंने दे दिया।

हीरालाल प्रिण्टिङ्ग वर्क्स, अलीगढ़ के श्री० हरीशङ्कर नागर ने कहा कि मैं पहली बार ११ महीने, दूसरी बार ६ महीने और तीसरी बार ५ महीने तक फ़ाइन आर्ट प्रिण्टिङ्ग कॉटेज में नौकरी कर चुका हूँ। तीसरी बार मैं सम्पादकीय विभाग में काम करता था। मुझे श्री० आर० सहगल ने नौकर रक्खा था, जो उस समय 'चाँद' के सम्पादक थे। उसके बाद श्री० शुकदेवराय 'चाँद' के सम्पादक नियत हुए। श्री० शुकदेवराय छापने के लिए आने वाले लेखों को देखते थे और वे ही पुस्तकों आदि को ठीक करके प्रेस में देते थे। मैंने ढाई साल तक कलकत्ते के 'हिन्दू-पञ्च' में काम किया है। जिरह करने पर गवाह ने कहा कि श्री० आर० सहगल आर्थिक मामलों पर विशेष ध्यान रखते थे।

(शेष मैटर १२वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

भारत के राजद्रोह आन्दोलन का मूल कारण

बदला लेने और हिंसा की वृत्ति देश के लिए घातक है

हिजली-काण्ड की रिपोर्ट पर महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सम्मति

श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने हिजली-गोली-काण्ड जाँच-कमिटी की रिपोर्ट के सम्बन्ध में निम्नलिखित मत प्रकाश किया है :—

"हिजली नज़रबन्द-कैम्प के वार्डरों के प्रति ईसाइयों के अनुकूल मनोवृत्ति द्वारा बार-बार सहानुभूति प्रकट की जा रही है। यह बात अभी मैंने एक ऐंग्लो-इण्डियन पत्र में देखी है। इन्हीं वार्डरों ने अपने अधीन रहने वाले नज़रबन्दों की हत्या की थी। इस अपराध के करने वालों के प्रति उनके भारी काम के भार की दुहाई देकर दया प्रकट की गई है। उस ऐंग्लो-इण्डियन पत्र के मतानुसार इस तरह की अवस्था में वे लोग धैर्यपूर्वक क़ानून के अनुसार काम करेंगे, इसकी किसी प्रकार आशा नहीं की जा सकती।

ये सब घमण्ड में चूर लोग सुख-पूर्वक बारकों में रह कर स्वाधीनता और आत्म-मर्यादा का आनन्द उपभोग करते हैं। इन्होंने मिल कर बर्बरों की तरह क़ैद में पड़े हुए और भाग्य की अनिश्चितता के कारण व्याकुल निरीह नज़रबन्दों पर रात के अँधेरे में घातक आक्रमण किया था। इन लोगों के इसी कार्य के लिए उनके प्रति लेखों-द्वारा बार-बार सहानुभूति प्रकट करके उनको सन्तोष प्रदान किया जा रहा है।

क्षोभ, कष्ट और क्रोध के अत्यन्त बढ़ जाने से मनुष्य एक ऐसी दशा में पहुँच जाता है, जब कि वह समाज के प्रति अपने उत्तर-दायित्व की और फल की चिन्ता भूल जाता है और उसका भले-बुरे का ज्ञान लोप हो जाता है। इसी प्रकार के दारुण मनोकष्ट के कारण अधिकांश अपराधों की उत्पत्ति होती है। इस तरह के अपराध यद्यपि अत्यन्त मानसिक उत्तेजनावश और स्वप्न की सी हालत में होते हैं; पर क़ानून उनको क्षमा नहीं करता और इसलिए मनुष्य भय और आत्म-संयम द्वारा अपराधी भावों को रोकता रहता है। पर यदि सरकारी नौकरों के लिए, ख़ून के लिए दया का भण्डार पहले ही से भर कर रक्खा गया हो, और जो लोग क़ानून के रक्षक होते हुए भी उसको घमण्ड के साथ तोड़ते हैं, उनके लिए एक नई ही तरह का क़ानून बना दिया गया हो, तो कहना पड़ेगा कि यह सभ्य देश की न्यायपरायणता का ही अपमान करना है। इसके फल से सर्व-साधारण के मनों पर जैसा कुप्रभाव पड़ेगा, वैसा कितने ही राजद्रोही आन्दोलन से भी नहीं डाला जा सकता।

इसके विपरीत इस बात की आशा मैं एक क्षण के लिए भी नहीं कर सकता कि हमारे यहाँ के गर्म विचारों के राजनीतिक व्यक्ति, जिनको किसी नियमानुसार स्थापित अदालत ने अपराधी घोषित कर दिया हो, इस कारण से छोड़े जा सकते हैं कि, दिल दहलाने वाले दृश्यों और कायरतापूर्ण अपराधों के बदले में किसी प्रकार का दण्ड न दिया जाता देख कर वे अपने आत्म-संयम को बिल्कुल खो बैठे हैं। अपने अन्याय-पीड़ित भाइयों के प्रति और अपने मनुष्यत्व के भाव का अपमान के कारण जिस कार्य को उन्होंने अपना कर्तव्य समझ कर किया है, उसका पूरा प्रतिफल उनको अवश्य भोगना पड़ेगा। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे विद्यार्थी अपने गोरे स्कूल-मास्टरों के द्वारा पश्चिमी देशों के स्वाधीनता-संग्रामों का जो इतिहास पढ़ते हैं, उसमें दोनों दलों के प्रकट या गुप्त हिंसात्मक अपराधों के दृष्टान्त भरे पड़े हैं। उदाहरण के लिए आयर्लैण्ड का ही नाम लिया जा सकता है।

हिंसा सफल नहीं हो सकती

पर चाहे जो हो, अपराध को अपराध समझना ही पड़ेगा और उसका न्यायानुसार फल भी अनिवार्य मानना होगा। पर यह बात भी इतिहास द्वारा सत्य सिद्ध हो चुकी है कि जिन राजकर्मचारियों अथवा स्वेच्छाचारी शासकों के हाथ में सैनिक और शासन-सम्बन्धी शक्ति होती है, अथवा जो ऐसी शक्ति द्वारा अधिकारयुक्त तथा संरक्षित होते हैं, वे प्रायः मदोन्मत्त होकर, न्याय का विचार छोड़ कर और जनता के मत की परवा न करके अन्याय की हद कर देते हैं। रूस का ज़ार और अन्य निरङ्कुश शासक इसके उदाहरण हैं। पर मनुष्य जाति के सौभाग्य से इस प्रकार की नीति कभी अन्त में सफल नहीं होती।
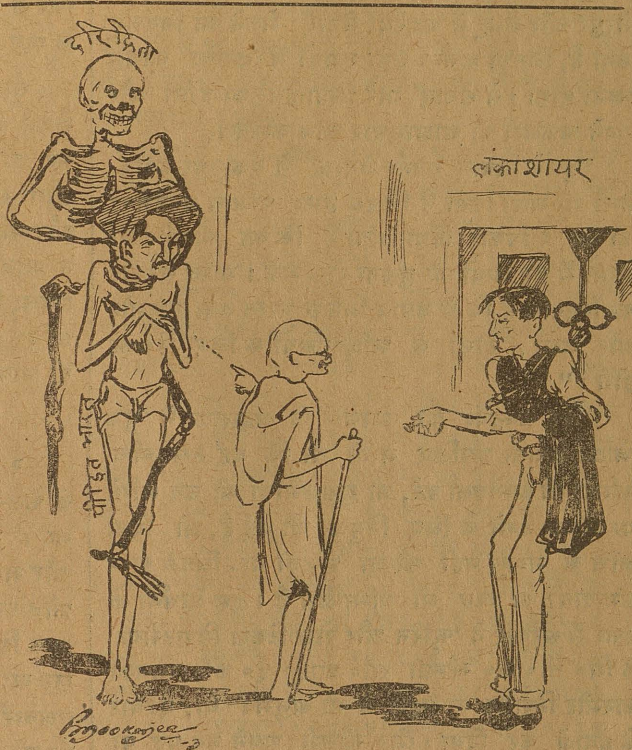
शासकों से अपील

मैं सरकार से और साथ ही अपने देशवासियों से हार्दिक अनुरोध करता हूँ कि आपस में बदला लेने और एक-दूसरे के प्रति हिंसा का भाव प्रकट करने को बन्द करें। क्योंकि यह एक ऐसा निन्दनीय चक्र है, जिसका अन्त कभी नहीं होता। यद्यपि साधारण मनुष्य के लिए अपने क्रोध और रोष के भाव को प्रकट करना स्वाभाविक है, पर न तो यह हमारे शासकों की राजनीतिज्ञता का परिचायक है और न शासितों की बुद्धिमत्ता को प्रकट करता है। आपस में इस तरह का क्रोध का भाव बनाए रखना सब तरह से नाशकारी और अनर्थपूर्ण है और उससे हमारे कष्टों और विफलता की सदा वृद्धि होती रहेगी। उसके फल से हम अपना शासकों के नैतिक मनुष्यत्व पर विश्वास रखना बिल्कुल छोड़ बैठेंगे और यही मनुष्यत्व सच्ची शक्ति और प्रभाव है।

पहिले किस का हक़ है ?

—नेपाल के प्रधान-मन्त्री को ब्रिटिश सेना के ऑनरेरी लेफ़्टिनेण्ट जनरल का पद दिया गया है।

—बनारस का समाचार है कि श्रीमती कमला नेहरू को संयुक्त प्रान्त में महिला-स्वयंसेविकाओं का सङ्गठन करने का भार दिया गया है। श्रीमती कमला-देवी चट्टोपाध्याय, जो इसी कार्य के लिए देश-भ्रमण कर रही हैं, ११ नवम्बर को बनारस पहुँचेंगी।

—जयपुर के महाराज के पुत्र होने की ख़ुशी में मण्डावा (शेखावाटी) के जागीरदार ने किसानों का दस हज़ार रुपए का लगान माफ़ कर दिया।

—श्री० मनीलाल कोठारी ने सूचना प्रकाशित की है कि गाँधी-जयन्ती के फ़ण्ड से २७ हज़ार रुपए की खादी बङ्गाल, कोकन, बिहार और उड़ीसा के बाढ़ और अकाल-पीड़ितों में बाँटी जा चुकी है। इसमें से एक हज़ार रुपया किसी गुमनाम अङ्गरेज़ ने दिया था और इस रुपए की खादी दाता की इच्छानुसार डॉ० सय्यद महमूद द्वारा यू० पी० में और सरदार पटेल द्वारा बारदौली में बाँटी गई है।

—तिरुपुर (मद्रास) का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दुकानों की पिकेटिङ्ग करने वाले दो स्वयं-सेवकों पर तारकोल और मिट्टी का तेल डाल दिया गया।

—मुरादाबाद की ज़मींदार एसोसिएशन ने प्रस्ताव पास किया है कि इलाहाबाद ज़िले में किसानों के लगानबन्दी सत्याग्रह की जो तैयारियाँ हो रही हैं, और बाद में जिसके समस्त प्रान्त में फैल जाने की आशङ्का है वह ज़मींदारों के लिए ही नहीं, वरन् समस्त जनता के लिए हानिकारक है। यह आन्दोलन भावी गृह-युद्ध का सूचक है। यह भी कहा गया कि सरकार दिन पर दिन किसानों के आन्दोलन से दबती जाती है, जिसका फल अन्त में यह निकलेगा कि ज़मींदारों की अपनी रैयत और सरकार दोनों के साथ लड़ाई छिड़ जायगी।

—ध्राङ्गध्रा रियासत में हड़ताल जारी है और वहाँ के निवासी शहर छोड़ कर दूसरी रियासतों में जा रहे हैं। अगर रियासत ने अब भी काठियावाड़ राजनीतिक कॉन्फ़्रेन्स के सम्बन्ध में निषेधाज्ञा नहीं हटाई तो वहाँ सत्याग्रह किया जायगा, जिसके लिए स्वयंसेवक तैयार हैं।

—महात्मा गाँधी ने सरदार वल्लभभाई पटेल से यूरोप में अपने प्रोग्राम और भारत लौटने के सम्बन्ध में सम्मति पूछी है। सरदार वल्लभभाई ने इस सम्बन्ध में निर्णय करने को वर्किङ्ग कमिटी का एक विशेष अधि-वेशन ७ नवम्बर को बम्बई में करने का निश्चय किया है।

—कानपुर के रासी नामक गाँव के रहने वाले फ़त-वन नामक किसान को बिना लायसेन्स के बन्दूक़ रखने के अभियोग में नौ महीने की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई।

—लखनऊ का समाचार है कि आल इण्डिया शिया पोलीटिकल कॉन्फ़्रेन्स की स्टैण्डिङ्ग कमिटी ने सर सय्यद सुलतान अहमद, म० गाँधी और मि० मैकडॉनेल्ड के नाम तार भेजने का निश्चय किया है कि वे लोग संयुक्त निर्वाचन के पक्षपाती हैं और बिना इसके वे किसी शासन-सुधार की स्कीम को स्वीकार नहीं करेंगे।

—दक्षिणी वज़ीरिस्तान (सीमा प्रान्त) में ले० टी० राम० सिङ्गे और प्राइवेट हावेल को गोली मारी गई। ले० सिङ्गे मर गए और हावेल घायल हुआ।

—ढाका डिवीज़न के कमिश्नर मि० ए० कैसल्स पर कुछ समय पहले टङ्गाइल में गोली चलाई गई थी। अब उनको सरकार की तरफ़ से सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान की गई है।

❀ ❀ ❀

काश्मीर पर 'कट्टर' मुसलमानों की शनि-दृष्टि

पञ्जाब के हज़ारों पठान रियासत की सीमा में उपद्रव मचा रहे हैं

भारत-सरकार ने उपद्रवियों को दबाने को सेनाएँ भेजीं

काश्मीर की विपत्ति का अन्त होता दिखलाई नहीं देता। कुछ दिनों पहले काश्मीर के शासकों ने वहाँ के तमाम मुसलमान क़ैदियों को, जो आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे, छोड़ दिया था और मुसलमानों की माँगों के लिए एक कमीशन भी नियुक्त कर दिया था। इस पर लोग ख़्याल करने लगे थे कि अब वहाँ की गड़बड़ी शान्त हो जायगी और मुसलमान पूर्ववत् चैन से रहने लगेंगे। यद्यपि रियासत के मुसलमान इन उपायों से बहुत कुछ सन्तुष्ट हो गए और उनमें से कितने ही प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने काश्मीर-नरेश की प्रशंसा भी सार्वजनिक सभाओं में प्रस्ताव पास करके की, पर पञ्जाब के चन्द अन्दोलनकारी मुसलमान, जिन्होंने असल में यह आग भड़काई थी, सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने तरह-तरह की झूठी-सच्ची बातें फैला कर रियासत के ख़िलाफ़ प्रचार जारी रक्खा और उसी का फल है कि अब दुबारा वही आन्दोलन और भी भयङ्कर रूप में आरम्भ हुआ है।

जत्थों की गिरफ़्तारी

पहली बार इस आन्दोलन में ख़ास कर स्यालकोट और उसके आस-पास के मुसलमानों ने भाग लिया था, पर इस बार सीमा प्रान्त के लालकुर्ती वाले स्वयंसेवक भी, जो पठान हैं, इसमें कूद पड़े। इस सम्बन्ध में श्रीनगर से २ नवम्बर को काश्मीर सरकार की तरफ़ से एक कम्यूनिक प्रकाशित हुआ था, जिसमें कहा गया था कि—"अब तक क़रीब दो हज़ार लालकुर्ती वाले गिरफ़्तार करके हवालात में रक्खे गए हैं, और अभी अधिक जत्थों के आने की आशङ्का है। ख़बर है कि कितने ही जत्थे उपद्रव को तैयार हो गए। मीरपुर में ६० व्यक्तियों के एक जत्थे ने इतना उपद्रव मचाया कि उसे शान्त करने की चेष्टा में एक हेड कॉन्स्टेबिल को सख़्त चोट लगी और पुलिस सुप० तथा जेलदार मामूली घायल हुए। एक जत्थेदार मारा गया और दूसरा सङ्गीन से घायल हुआ। जम्मू की ख़बर है कि जत्थों के कारण वहाँ उत्तेजना फैल रही है और २७ व्यक्तियों को, जिन्होंने एक डिक्टेटर की अधीनता में अपना एक दल बनाया था, गिरफ़्तार कर लेना पड़ा। उस स्थान के हिन्दुओं में बड़ा आतङ्क फैला हुआ है।"

स्यालकोट के सम्बन्ध में एक दूसरे कम्यूनिक से मालूम होता है कि—"मज़हरअली अज़हार ने, जो स्यालकोट में जत्थों का सङ्गठन कर रहा था, जम्मू के गवर्नर से कहा है, कि उसको अपनी माँगें विचारार्थ भेजने की आज्ञा नहीं दी गई और इसी लिए वह यह कार्य कर रहा है। इस पर उसे तार द्वारा सूचित किया गया कि वह अपनी माँगें डाक-द्वारा भेज दें, उन पर पूर्ण-रूप से विचार किया जायगा। इतने पर भी वह ११२ व्यक्तियों का एक जत्था लेकर सुचेतगढ़ तक चला आया और मैजिस्ट्रेट के हुक्म के ख़िलाफ़ रियासत की सीमा में घुस गया। इस पर वह जत्थे सहित गिरफ़्तार कर लिया गया।"

भारत-सरकार का बयान

इसके पश्चात् दशा बिगड़ती ही गई और नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि रियासत के लिए इन अन्ध-विश्वासी आक्रमणकारियों का मुक़ाबला कर सकना कठिन हो गया और उसने भारत-सरकार से सैनिक-सहायता की प्रार्थना की। इस सम्बन्ध में भारत-सरकार ने ४ नवम्बर को कम्यूनिक प्रकाशित किया है, जिससे तमाम मामले पर बहुत कुछ रोशनी पड़ती है। उसमें कहा गया है :—

"इन जत्थों का उद्देश्य यह बतलाया जाता है कि वे काश्मीर-नरेश पर इस बात का दबाव डालें कि रियासत की मुसलमान प्रजा की शिकायतें दूर की जायँ। अब तक जत्थों का व्यवहार ब्रिटिश भारत में क़ानून के अन्दर रहा है, पर हाल की घटनाओं से प्रकट होता है कि रियासत की शान्ति के लिए वे बड़े भयजनक हैं।......काश्मीर-दरबार ने इन जत्थों को रोक सकने या उनके रियासत की सीमा में घुसने से उत्पन्न होने वाली परिस्थिति को क़ाबू में रखने में असमर्थता प्रकट की है। इस हालत में दरबार की प्रार्थना पर सरकार ने मीरपुर और जम्मू में अङ्गरेज़ी सेनाएँ भेजने का निश्चय किया है, जिनका कर्त्तव्य उन स्थानों में शान्ति क़ायम रखना होगा। ये सेनाएँ गोरे सिपाहियों की होंगी और अपने अफ़सरों की आज्ञानुसार कार्य करेंगी।

"इसके सिवाय गवर्नर-जेनरल ने एक नया ऑर्डिनेन्स भी जारी किया है जिसके द्वारा पञ्जाब गवर्नमेण्ट को यह अधिकार दिया गया है कि वह काश्मीर की सीमा में इन जत्थों का घुसना रोक सके। भारत सरकार का विश्वास है कि ये उपाय ब्रिटिश भारत तथा काश्मीर और जम्मू, दोनों के अधिवासियों के लिए हितकर होंगे।"

"१२ अक्टूबर को काश्मीर के महाराजा ने एक ब्रिटिश अफ़सर इसलिए माँगा था कि वह उस जाँच-कमिटी की अध्यक्षता करे, जो मुसलमानों की उन माँगों पर विचार करने के लिए नियुक्त की गई है, जो बिना जाँच के मञ्ज़ूर नहीं की जा सकतीं या जिनमें अन्य सम्प्रदायों का प्रश्न भी सम्मिलित है। इस प्रार्थना के उत्तर में सरकार ने 'फ़ॉरेन और पोलीटिकल डिपार्टमेण्ट' के मि० बी० जे० ग्लैन्सी सी० आई० ई० को, जिनको काश्मीर रियासत का पहले से भी अनुभव था, दरबार के हवाले कर दिया। मि० ग्लैन्सी अपने नए पद पर ३१ अक्टूबर को हाज़िर हो गए हैं। मालूम हुआ है कि जिस जाँच-कमिटी की उनको अध्यक्षता करनी है, उसका कार्य इसी हफ़्ते में, जहाँ तक मुमकिन होगा, जल्द शुरू हो जायगा।

"भारत-सरकार महाराजा काश्मीर से इस विषय में पूर्ण-रूप से सहमत है कि इस जाँच का सबसे अच्छा फल तभी निकल सकता है जब कि काश्मीर की सीमा के भीतर शान्ति बनी रहे और वह बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रहे। इस परिस्थिति को उत्पन्न करने के उद्देश्य से ही, जिससे महाराजा काश्मीर एक स्थायी निर्णय पर पहुँच सकें, भारत-सरकार ने उपरोक्त उपायों का अवलम्बन किया है। उसकी तमाम ब्रिटिश भारत की प्रजा से हार्दिक अपील है कि वे ऐसे कार्यों से पृथक रहें, जिससे उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा पड़े।"

नया ऑर्डिनेन्स

भारत-सरकार ने जो नया ऑर्डिनेन्स निकाला है उसका नाम है 'काश्मीर रियासत (उपद्रवों से रक्षा करने वाला) ऑर्डिनेन्स' न० १० सन् १९३१। इसका उद्देश्य "उन लोगों को जो ब्रिटिश भारत से जम्मू और काश्मीर के महाराजा की हद में अशान्ति फैलाने जाते हैं, इकट्ठा होने से रोकना है।"

यह ऑर्डिनेन्स समस्त पञ्जाब प्रान्त पर लागू होगा। इसकी दूसरी धारा में कहा गया है कि—"जहाँ-कहीं डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट को यह जान पड़े कि उसके ज़िले में पाँच या अधिक व्यक्ति इसलिए इकट्ठे हुए हैं कि वे देशी नरेश की रियासत के भीतर दाख़िल हों, और उनके उस सीमा में दाख़िल होने से रियासत के शासन-प्रबन्ध में हस्तक्षेप होने की सम्भावना हो, या मनुष्यों के जीवन और रक्षा का ख़तरा हो, या शान्ति-भङ्ग की आशङ्का हो, या दङ्गा-फ़साद की सम्भावना हो, तो वह उस मामले की वास्तविक बातों को दर्ज करके उन लोगों को तितर-बितर हो जाने की आज्ञा दे सकता है। इस हुक्म की एक नक़ल उस जगह चस्पा कर दी जायगी, जहाँ उक्त प्रकार के लोग इकट्ठे हुए हों, और इसकी इत्तला डुग्गी पिटवा कर भी कर दी जायगी। इस हुक्म के जारी होने के बाद जो पाँच या ज़्यादा लोग पहली जगह पर या उसके आस-पास या किसी दूर के फ़ासले पर इकट्ठा रहेंगे या फिर से इकट्ठा होंगे, वे ताज़ीरात हिन्द की दफ़ा १४१ के अनुसार ग़ैर-क़ानूनी मजमा समझे जायँगे।"

तीसरी धारा में ऐसे समुदायों की स्थापना को रोकने की व्यवस्था की गई है। कोई भी पुलिस अफ़सर, जो पद में सब-इन्स्पेक्टर से कम न हो, ऐसे लोगों से उनके इकट्ठे होने का उद्देश्य पूछ सकता है और यदि वे इसका उत्तर न दें या सन्तोषजनक कारण न बतला सकें तो वह उनको तितर-बितर होने को कह सकता है। इस धारा का कोई भी हुक्म दो महीने से अधिक अमल में रहेगा जब तक कि वैसी सूचना न दी जाय।

जम्मू में तीन मुसलमान मारे गए

२ नवम्बर को जम्मू में हिन्दू-मुसलमानों के उपद्रव के फल-स्वरूप तीन मुसलमान और एक हिन्दू मारे गए। मुसलमानों ने हिन्दुओं की दुकानें जला दीं और रानी बिआलुर्रा के मन्दिर को लूट लिया, सरकारी फ़ौज पर उपद्रवियों ने पिस्तौल से गोलियाँ चलाईं। आठ हिन्दुओं की और आठ मुसलमानों की दूकानें लूट ली गईं। मुसलमान वालण्टियर सड़कों पर नङ्गी तलवारें लेकर निकले जिनको ज़ब्त करने की आज्ञा दी गई। अभी और जत्थे आ रहे हैं। हिन्दुओं और मुसलमानों की शान्ति कमिटियाँ बना दी गई हैं, जिनके ऊपर शहर में शान्ति स्थापित रखने की ज़िम्मेवारी हैं। जत्थों पर दफ़ा १९१ क्रिमिनल प्रॉसीजर कोड का प्रयोग किया जा रहा है।

नए इन्स्पेक्टर-जनरल

पेशावर का समाचार है कि मि० लॉथर काश्मीर रियासत के इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस नियुक्त हुए हैं। वे २ नवम्बर को पेशावर से मोटर द्वारा श्रीनगर को रवाना हुए। सरकारी कर्मचारियों, सी० आई० डी० के कर्मचारियों और आपके मित्रों ने आपको विदाई के समय हार पहिनाए।

----ब्यावर (राजपूताना) की कॉङ्ग्रेस कमिटी के दो प्रमुख कार्यकर्ता अतर मुहम्मद और गोपीलाल किसान-कॉन्फ्रेन्स में दिए हुए भाषणों के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। इसका विरोध करने को स्वामी कुमारानन्द की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें सरकार की दमन-नीति की घोर निन्दा की गई।

❋ ❋ ❋

९ नवम्बर, सन् १९३१

हिजली गोली-काण्ड की जाँच

हिजली गोली-काण्ड की जाँच के सम्बन्ध में बङ्गाल सरकार ने जस्टिस एस० सी० मलिक और मि० जे० जी० ड्रमण्ड की जो कमिटी नियुक्त की थी और जिसके सामने होने वाली गवाहियों का विवरण हमारे पाठक पिछले अङ्कों में पढ़ चुके हैं, उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई। जाँच के समय कमिटी के कमिश्नरों का रुख़ नज़रबन्दों के प्रति बहुत सहानुभूतिपूर्ण था और उसी के फल से वे लोग अपने ऊपर होने वाले अमानुषिक अत्याचार और नृशंसता की कहानी इतने स्पष्ट रूप में प्रकट कर सके। कमिश्नरों ने अपनी रिपोर्ट में कई जगह इस बात को स्वीकार किया है कि नज़रबन्दों ने अपने बयानों में बहुत अधिक सचाई और ईमानदारी से काम लिया है, और आक्रमण करने वाले कुछ लोगों को, जिन्हें वे झूठ बोल कर सहज में फँसा सकते थे, बरी कर दिया है। इसके साथ ही उन्होंने सिपाहियों के बयान की असत्यता को भी कई जगह प्रकट किया है और उनकी गवाहियों को बहुत कम विश्वस्त समझा है।

इस रिपोर्ट से एक लाभ यह भी हुआ है कि उससे इस घटना के आरम्भ में प्रकाशित सरकारी कम्यूनिकों का पूरी तरह खण्डन हो गया है। जिस समय सबसे पहले इस घटना की ख़बर प्रकट हुई थी, उस समय सरकार ने अपने कम्यूनिक में कहा था कि कितने ही नज़रबन्दों ने सन्तरियों पर आक्रमण किया और एक सन्तरी की सङ्गीन छीन ली। उन सन्तरियों की रक्षा के लिए सिपाहियों को गोली चलानी पड़ी। पर रिपोर्ट से सिद्ध होता है कि नज़रबन्दों पर लगाया गया यह इलज़ाम बिल्कुल ग़लत था और गोली अकारण ही चलाई गई थी। उसमें लिखा है :—

"हमारी सम्मति में नज़रबन्दों के निवास-स्थान पर सिपाहियों के मनमाने ढङ्ग से गोली चलाने का, जिसके फल से दो नज़रबन्दों की मृत्यु हुई और कितने ही घायल हुए, कोई भी उचित कारण न था।............ सिराज़ुल नाम के सन्तरी का उसकी बन्दूक़ से सङ्गीन छीन लेने का क़िस्सा हमको बहुत ही सन्देहपूर्ण जान पड़ता है। सबसे पहली बात तो यह है कि कमाण्डेण्ट बेकर के सामने बयान देते हुए सिराज़ुल ने इस घटना का कुछ भी ज़िक्र नहीं किया था। इसके सिवाय उसकी बन्दूक़ में जो सङ्गीन लगी वह थी, खींच कर नहीं निकाली जा सकती। जिस किसी ने उसे निकाला, उसे यह मालूम होना चाहिए था कि निकालने से पहले उसे किस तरह घुमाया जाता है।"

घटना के दो-तीन दिन बाद जब समाचार-पत्रों में यह प्रकट हुआ कि नज़रबन्दों पर बिना सोचे-समझे गोली चलाई गई और उनके निवास-स्थान के भीतर घुस कर सिपाहियों ने उन पर आक्रमण किया तो सरकार ने इसके खण्डन में एक कम्यूनिक निकाला, जिसमें कहा गया था कि इस बात का एक भी प्रमाण नहीं है कि सिपाहियों में से एक भी निवास-स्थान के भीतर घुसा था। अब रिपोर्ट से मालूम होता है कि अख़बारों की ख़बर बिल्कुल ठीक थी और सरकार का कम्यूनिक सर्वथा निराधार था। रिपोर्ट के लेखकों का मत है :—

"हमारे सामने जो गवाहियाँ हुई हैं, उन पर विचार करने से हम स्पष्टतया इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि सिपाहियों में से कुछ मकान के भीतर गए थे और मकान के पूर्वी भाग में घायल होने वाले लोगों में से कुछ के ज़िम्मेदार वे ही हैं।"

पर खेद है कि इन बातों को मान लेने के पश्चात् भी कमिटी ने अपने निर्णय में स्पष्टता से काम नहीं लिया है और केवल अनुमान के आधार पर इस घटना का कुछ दोष नज़रबन्दों के सर पर भी मढ़ दिया है। इस सम्बन्ध में उन्होंने जो प्रमाण दिए हैं वे पहले प्रमाणों को देखते हुए बिल्कुल कच्चे हैं। तारापद नाम के नज़रबन्द ने उनके सामने कहा कि 'मैंने गोली चलने से कुछ देर पहले टॉवर के दक्षिण-पश्चिम से, जहाँ सन्तरी नं० ३ का पहरा था, कुछ शोर-गुल सुना था!' केवल इसी कथन के आधार पर उन्होंने यह नतीजा निकाल लिया है कि गोली चलने से पहले नज़रबन्दों और सन्तरियों में कुछ खटपट ज़रूर हुई थी और नज़रबन्दों ने उनको उत्तेजित किया था। यद्यपि तारापद ने जिस शोर-गुल का ज़िक्र किया था उसके कितने ही कारण हो सकते थे। सम्भव है कि सन्तरी ने उसे पूर्व निश्चित योजना के अनुसार स्वयम् ही मचाया हो, ताकि सिपाहियों को नज़रबन्दों पर हमला करने का बहाना मिल जाय। इसी प्रकार तीनकौड़ी सेन नामक सब-इन्स्पेक्टर ने कमिटी के सामने कहा कि, मैंने श्री० हेमन्तकुमार तरफ़दार को अपने भाई से, जो जाँच के दिन उनसे भेंट करने आए थे, यह कहते सुना कि कुछ नज़रबन्द सन्तरियों पर मसहरी के डण्डों से आक्रमण करना चाहते थे और मैंने उनको ऐसा करने से रोका। कमिटी ने इस बात को भी सच मान लिया, यद्यपि पूछे जाने पर हेमन्तकुमार ने इससे साफ़ झूठ बतलाया। इसी प्रकार के अधूरे प्रमाणों के आधार पर कमिटी ने सिपाहियों के दोष को कुछ अंशों में कम करने की चेष्टा की है और यह दिखलाना चाहा है कि उन्होंने क़सूर तो अवश्य किया, पर इस सम्बन्ध में नज़रबन्दों ने उन्हें उत्तेजित किया था।

दूसरी बात यह कि कमिटी ने कैम्प के यूरोपियन अधिकारी कमाण्डेण्ट बेकर और इन्स्पेक्टर मार्शल को भी बिल्कुल दोष-मुक्त करने की चेष्टा की है। इसमें तो सन्देह नहीं कि घटना के समय ये दोनों कर्मचारी कैम्प में मौजूद न थे और वहाँ की तमाम ज़िम्मेदारी कुछ हवलदारों के ऊपर थी। यद्यपि नज़रबन्दों के वकील श्री० चटर्जी ने अपनी बहस में यह कहा था कि उक्त दोनों अफ़सरों के विरुद्ध कोई ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं, जिसके आधार पर उनको इस घटना में भीतरी तौर पर शामिल समझा जाय, पर उन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण कार्य का भार चन्द जाहिल और नीच प्रकृति के व्यक्तियों पर छोड़ दिया और दुर्घटना के पश्चात् सरकार के पास ग़लत रिपोर्ट भेज कर उनको बचाने की चेष्टा की, यही उनका काफ़ी दोष है। इस सम्बन्ध में रिपोर्ट ने बहुत कम चर्चा की है और मामले को गोलमोल रक्खा है।

इसमें सन्देह नहीं कि हिजली का गोली-काण्ड ब्रिटिश-शासन के लिए कलङ्क-स्वरूप है। यदि सरकारी रिपोर्ट को ही सच माना जाय तो उससे भी यह साफ़ तौर पर साबित होता है कि जिन लोगों को सरकार ने बिना किसी प्रकार के अभियोग और मुक़दमे के केवल सन्देह पर बन्द कर रक्खा था, जिनके पास अपनी रक्षा का कोई साधन न था, और जिनके कुशल की पूरी ज़िम्मेदारी सरकार पर थी; उन पर सरकार के नौकरों ने बिना क़सूर के गोलियाँ चलाईं। यदि सरकार अब भी इस कलङ्क से कुछ अंशों में मुक्त होना चाहती है, तो उसे भी सुभाष-बाबू के शब्दों में उचित है कि मरने और घायल होने वालों का पूरा हर्जाना, घटना के लिए ज़िम्मेदार लोगों को न्यायानुकूल उचित दण्ड दे और भविष्य में कभी ऐसी घटना न होने पावे, इसका पक्का इन्तज़ाम करे।

* * *

कॉन्फ़्रेन्स का खेल ख़त्म

विलायत से आने वाले समाचारों से प्रकट हो रहा है कि अब राउण्डटेबिल कॉन्फ़्रेन्स के खेल के ख़त्म होने में ज़्यादा देर नहीं है और शीघ्र ही सब लोग अपने-अपने घरों को रवाना हो जायँगे। कहने के लिए कॉन्फ़्रेन्स की धूमधाम ख़ूब रही, और उसमें लाखों क्या, करोड़ों रुपया ख़र्च हो गया। पर जब हम उसके फल पर विचार करते हैं, तो कोई सार दिखलाई नहीं पड़ता। वैसे तो इङ्गलैण्ड में महात्मा गाँधी की ख़ूब आवभगत की गई, उनको वहाँ मिलने वाला बड़े से बड़ा सम्मान दिया गया, उनके आराम के लिए सब तरह का सम्भव प्रबन्ध किया गया, पर जब भारत के राजनीतिक अधिकारों का प्रश्न उठा, तो सिवाय चिकनी-चुपड़ी बातों के कुछ हाथ न आया। म० गाँधी ने विलायत में क़दम रखते ही ब्रिटिश अधिकारियों से पूँछा था कि वे स्पष्ट बतला दें कि भारत को क्या राजनीतिक अधिकार देने की उनकी इच्छा है। इसके बाद उन्होंने राउण्ड-टेबिल के अधिवेशनों में अनेक बार और प्रत्येक अधिकारी के सामने, जिससे वे मिले, इसी प्रश्न को दुहराया, पर आज तक उनको कामयाबी नहीं हुई। इस सम्बन्ध में जो कुछ उत्तर अप्रत्यक्ष रीति से उनको मिला है, वह निराशाजनक ही है, और उसके आधार पर भविष्य में किसी सुफल की आशा नहीं की जा सकती।

सच बात तो यह है कि इङ्गलैण्ड के राजनीतिक अधिकारियों को भारत की परिस्थिति के सम्बन्ध में कुछ पता ही नहीं है। म० गाँधी के एक प्रधान साथी के मतानुसार, "जो इङ्गलैण्ड का जितना बड़ा और

महत्वपूर्ण राजनीतिज्ञ है, वह भारत की परिस्थिति के सम्बन्ध में उतना ही अधिक अनभिज्ञ है।" उन लोगों की आकांक्षा केवल इतनी ही है कि भारत किसी प्रकार उनके अधिकार में बना रहे और इङ्गलैण्ड उससे जो लाभ उठाता है, उसमें किसी तरह का अन्तर न पड़े। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उनको भारत सरकार और भारत के सिविल-सर्विस के गोरे कर्मचारियों पर निर्भर रहना पड़ता है और ये लोग जो कुछ सलाह दे देते हैं, वही इङ्गलैण्ड के ह्वाइट हॉल में वेद-वाक्य की तरह मान ली जाती है। शायद यही सोच कर उपरोक्त लेखक ने यह सम्मति प्रकट की है कि—"मुझे कोई आश्चर्य न होगा कि यदि भारत सरकार का डिस्पैच ही भावी शासन-विधान का आधार बना दिया जाय। यहाँ की (विलायत की) सरकार केवल समय टाल रही है और अपने ही मामलों में व्यस्त है।"

यद्यपि अभी यह निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता कि ब्रिटिश सरकार भारत के शासन-विधान का रूप क्या रक्खेगी, क्योंकि फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमिटी के प्रेज़िडेण्ट लॉर्ड सैङ्की ने जो रिपोर्ट प्रकाशित की है, वह बहुत अधूरी है और उसमें कोई बात स्पष्ट नहीं की गई है। समस्त महत्वपूर्ण प्रश्नों का निर्णय आगे के लिए छोड़ दिया गया है। पर उससे इतना प्रकट अवश्य हो जाता है कि सरकार कॉङ्ग्रेस की माँगों को स्वीकार करे। इसकी आशा कोसों दूर है। रिपोर्ट में सार्वजनिक मताधिकार का ज़िक्र भी नहीं किया गया है, जोकि कॉङ्ग्रेस की एक ख़ास माँग थी। इसी तरह सेना-विभाग और अर्थ-व्यवस्था पर भारतीयों के अधिकार के सम्बन्ध में भी निराशापूर्ण उद्गार सुने जा चुके हैं। ऐसी दशा में इसके सिवाय और क्या कहा जा सकता है कि अभी भारत के लिए सुख-शान्ति के दिन दूर हैं और उसे अपनी स्वाधीनता के लिए फिर से कष्ट-सहन और बलिदान के मार्ग पर चलना आवश्यक होगा।

❀ ❀ ❀

मालिक बनाम 'कीपर' का मनोरञ्जक मामला

(८वें पृष्ठ का शेषांश)

चौथा दिन

३ नवम्बर को 'चाँद' के भूतपूर्व सह० सम्पादक श्री० नन्दकिशोर तिवारी और श्री० विश्वम्भरसिंह की गवाही हुई। तिवारी जी ने कहा कि सन् १९२६ से १९३१ तक मैंने 'चाँद' के सम्पादकीय विभाग में थोड़े-थोड़े अर्से के लिए तीन बार काम किया। सम्पादक जो काम बतला देता था, वही मुझे करना होता था, जैसे अनुवाद करना प्रूफ़ पढ़ना, लेख तैयार करना आदि। मेरे दूसरी और तीसरी बार काम करते समय श्री० शङ्करदयाल श्रीवास्तव, श्री० भुनेवश्वरनाथ मिश्र और श्रीमती लक्ष्मीदेवी क्रमशः प्रेस के कीपर, प्रिण्टर, प्रकाशक और सम्पादक नियत हुए। ये लोग एडीटर की हैसियत से सम्पादकीय विभाग की देख-भाल करते थे और कीपर की हैसियत से प्रेस की। श्री० आर० सहगल मुख्यतया संस्था के आर्थिक प्रबन्ध पर ध्यान रखते थे। जब श्रीमती लक्ष्मीदेवी डि० मैजिस्ट्रेट मि० मुडी के सामने डिक्लेरेशन देने गईं तो मैं ही उनके साथ गया था और उन दोनों की बातचीत मेरे ही सामने हुई थी मि० मुडी के पूछने पर श्रीमती लक्ष्मीदेवी ने कहा था कि प्रेस के मालिक वे नहीं हैं वरन् उनके भाई श्री० सहगल जी हैं। इस पर भी मि० मुडी ने कहा कि वे डिक्लेरेशन मञ्जूर नहीं कर सकते।

सरकारी वकील श्री० पाण्डेय के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि मैं नहीं जानता कि श्री० भुवनेश्वरनाथ मिश्र ने डिक्लेरेशन कब दिया था। मुझे कुछ मित्रों की ज़ुबानी और पत्रों द्वारा यह विदित हुआ था कि मि० मुडी ने लक्ष्मीदेवी का डिक्लेरेशन मञ्ज़ूर नहीं किया। लक्ष्मीदेवी प्रायः सम्पादकीय विभाग में आकर पत्रों तथा लेखों आदि को देखा करती थीं और हमको काम बतलाया करती थीं। यह पूछने पर कि श्री० सहगल और लक्ष्मीदेवी कैसे भाई-बहिन हैं, तिवारी जी ने कहा कि वे न एक माँ-बाप की सन्तान हैं, न उनकी जाति एक है, वरन् वे एक दूसरे को भाई-बहिन की तरह समझते हैं।

श्री० विश्वम्भरसिंह, मैजिस्ट्रेट खिलचीपुर स्टेट ने कहा कि सन् १९२९ और १९३० में क़रीब वर्ष भर उन्होंने फ़ाइन आर्ट प्रिण्टिङ्ग कॉटेज के असि० मैनेजर की हैसियत से काम किया था। जहाँ तक उनको मालूम है, श्री० आर० सहगल कारबार के आर्थिक प्रबन्ध पर ध्यान देते थे और श्री० एन० सहगल अन्य बातों का प्रबन्ध करते थे।

इस बयान के होने के पश्चात् सफ़ाई की गवाही समाप्त हो गई। अब १४ तारीख़ से दोनों तरफ़ के वकीलों की बहस आरम्भ होगी।

❀ ❀ ❀

'मज़दूरों का दिन'

गत ३१ अक्टूबर को तमाम भारत में 'मज़दूरों का दिन' मनाया गया। आजकल देश भर में जो भयङ्कर आर्थिक हलचल मची हुई है, उसका बुरा प्रभाव सबसे अधिक मज़दूरों पर ही पड़ रहा है। अगर नौकरों को घटाने का सवाल आता है तो वे ही नौकरी से निकाले जाते हैं; और यदि ख़र्च कम करने की ज़रूरत होती है तो उन्हीं की तनख़्वाह घटाई जाती है। यों दिखलाने के लिए कुछ बड़े लोग भी नौकरी से हटाए जाते हैं और वायसरॉय तथा गवर्नरों तक ने अपनी तनख़्वाह घटा दी है, पर इन दोनों दशाओं में ज़मीन-आसमान का भेद है। बड़े लोगों की तनख़्वाह घटने से हद से हद उनके सैर-तमाशे में कुछ कमी पड़ सकती है, पर मज़दूरों की तनख़्वाह कम होने से उनके आधे पेट खाने वाले बच्चों के मुँह से एक टुकड़ा और छीन लिया जाता है। 'मज़दूरों का दिन' इसी विकट परिस्थिति की तरफ़ मज़दूरों और उनके हितैषियों का ध्यान आकर्षित करता है। यह सच है कि अभी भारतीय मज़दूरों का सङ्गठन बहुत नया और कमज़ोर है, और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी आवाज़ पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। पर इसमें भी सन्देह नहीं कि वे समाज के एक परमावश्यक अङ्ग हैं और उनके बिना देश का काम एक दिन भी नहीं चल सकता। इसलिए आवश्यकता यही है कि वे अपने सङ्गठन को जहाँ तक हो सके शीघ्र दृढ़ करें और अपनी माँगों की पूर्ति के लिए सब तरह का स्वार्थ-त्याग करने को तैयार हो जायँ। ऐसा होने पर उनके ज़बर्दस्त विरोधियों को भी उनके सामने सर झुकाना होगा।

* * *

विलायत के पत्रों में भारत की ख़बरें

हाल में 'कॉमन वेल्थ ऑफ़ इण्डिया लीग' की तरफ़ से म० गाँधी के सम्मानार्थ एक सभा की गई थी। उसमें एक प्रस्ताव इस आशय का उपस्थित किया गया कि—"इङ्गलैण्ड के अख़बारों के तमाम सञ्चालक, सम्पादक और सम्वाददाता भारत के सम्बन्ध में पूर्ण और पक्षपात-रहित ख़बरें देने के महत्व को समझें। उनको यह भी समझ लेना चाहिए कि सचाई का छिपाना इङ्गलैण्ड और भारत दोनों देशों की जनता को बड़ी हानि पहुँचाना है।" इस प्रस्ताव का विरोध कितने ही समाचार-पत्र वालों ने किया और कहा कि वे जहाँ तक बन पड़ता है, भारत की ख़बरें अधिक से अधिक और सचाई के साथ प्रकाशित करते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अख़बार वालों के इस कथन में सत्य का अंश बहुत कम था। जहाँ तक हम जानते हैं, एकाध पत्र को छोड़ कर तमाम विलायती अख़बार इस सम्बन्ध में पक्षपात से काम लेते हैं। जिन ख़बरों से भारत की बदनामी हो अथवा अङ्गरेज़ी सरकार का समर्थन हो, उन्हें तो वे बड़े-बड़े सनसनीदार और रोचक हेडिङ्ग देकर निकालते हैं, और जिनसे भारतवासियों पर होने वाले अन्याय-अत्याचारों का रहस्य प्रकट होता है, उनको प्रायः हज़म ही कर जाते हैं। इसलिए जब महात्मा गाँधी ने कहा कि—"अच्छा, यदि आप लोग ऐसे ही सच्चे हैं, तो मैं हिजली और चटगाँव की घटनाओं का संक्षिप्त विवरण लिख कर आपको देता हूँ, आप उसे प्रकाशित कीजिए। इसके बाद मैं भारत से नियमित रूप से ख़बरें मँगा कर बिना दाम के अख़बार वालों को दूँगा", तो वे सब चक्कर में पड़ गए। हम चाहते हैं कि इस अवसर पर महात्मा जी अवश्य ही विलायती अख़बारों की परीक्षा करें और संसार को दिखला दें कि वे वहाँ तक सम्पादकीय धर्म का पालन करते हैं।

❀ ❀ ❀

देशी रियासतों के प्रतिनिधि

लन्दन की राउण्ड टेबिल कॉन्फ्रेन्स में यह प्रश्न उपस्थित होने पर कि, भारत की भावी व्यवस्थापिका सभाओं के लिए देशी रियासतों के प्रतिनिधि किस तरह चुने जायँ, हैदराबाद के प्रतितिधि सर अकबर हैदरी ने एक बड़ी अजीब बात कह डाली है, जिसे सुन कर कोई भी समझदार व्यक्ति हँसे बिना नहीं रह सकता। आपकी सम्मति थी कि देशी रियासतों के प्रतिनिधियों के चुनाव का प्रश्न उन्हीं के ऊपर छोड़ देना चाहिए। इस मत के समर्थन में आपने यह दलील दी है कि—"जिस प्रकार कॉङ्ग्रेस का दावा है कि वह भारत की करोड़ों 'गूँगी-जनता' की प्रतिनिधि है, उसी प्रकार देशी नरेश भी अपने यहाँ की 'गूँगी-जनता' के प्रतिनिधि हैं।" सर हैदरी के इस साहस की जितनी तारीफ़ की जाय, कम है। उन्होंने गोलमेज़ परिषद के तमाम अङ्गरेज़ और भारतीय प्रतिनिधियों के मुँह पर बिना सङ्कोच के एक ऐसी बात कह डाली, जिसकी यदि जाँच की जाय तो उसमें राई भर भी सचाई न निकले। हैदराबाद की मिसाल ही लीजिए। वहाँ की जन-संख्या में ८० प्रति सैकड़ा से अधिक हिन्दू हैं। पर उनको शिकायत है कि उनकी संख्या को देखते हुए उनको शासन के अधिकार और सरकारी नौकरियाँ नाम-मात्र को दी गई हैं। उस रियासत में न म्युनिसिपैलिटियाँ आदि हैं, न किसी प्रकार की व्यवस्थापिका सभा है, जिनके द्वारा जनता अपना मत किसी भी अंश में प्रकट कर सके। राजपूताने और सेण्ट्रल इण्डिया की छोटी और कितनी ही बड़ी रियासतों में भी प्रजा को अपनी जायदाद की तरह समझा जाता है और उसके साथ पशुओं के समान बर्ताव होता है। कितने ही छोटे मुक़ामों में तो लोग अपने धन को छिप कर रखते हैं, चूँकि यदि किसी का धनवान होना प्रकट हो जाय तो उस पर राजा साहब या जागीरदार की शनि-दृष्टि पड़ना बहुत सम्भव होता है। बोलने, लिखने और विचारों की स्वाधीनता की तो बात ही क्या? ऐसे लोगों से ग़रीब जनता के प्रतिनिधित्व की आशा करना वैसा ही है, जैसा भेड़िए को भेड़ का प्रतिनिधि बना देना।

❀ ❀ ❀
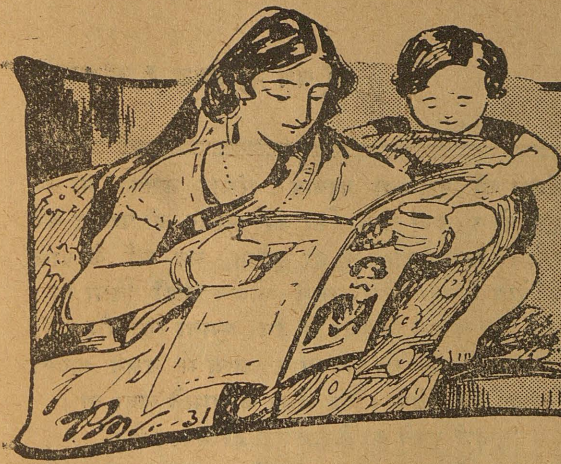
माँ और मातृभूमि

[डॉक्टर धनीराम प्रेम]
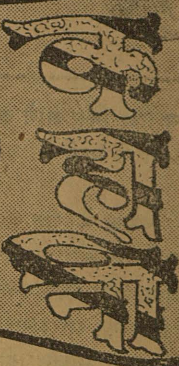
(गताङ्क से आगे)

९

अकेली कोठरी में विमल को रक्खा गया। किसी क़ैदी को उससे मिलने या बातचीत करने की आज्ञा न थी, न उसे कोई पुस्तक ही दी गई थी। उस कोठरी का साथी विमल था, और विमल का साथ देने वाली वह कोठरी थी। एक ओर पृथ्वी पर विमल ने अपना फटा बिछा लिया और कम्बल सिरहाने रख लिया। दूसरी ओर तसला और कटोरी रख लिए। यही उसकी गृहस्थी थी।

जोश उतर गया था। विजय का उत्साह ठण्डा पड़ गया था। 'जय-जय' का नाद, देश पर बलिदान होने की बातें, फाँसी पर चढ़ जाने की भावनाएँ—अभी तक सब कल्पना के गर्भ का विषय थीं। उनसे और वास्तविकता से अभी साक्षात्कार नहीं हुआ था। परन्तु अब? जेल की एक कोठरी में, जहाँ बातें करने को कोई व्यक्ति नहीं था, पढ़ने को कोई काग़ज़ का टुकड़ा भी नहीं था, करने को कोई काम भी न था, विमल को इन सब प्रश्नों पर विचार करने का अवसर मिला। उसके मस्तिष्क में भीतर के और बाहर के सारे दृश्य नाचने लगे। वह जेल के उस जीवन पर विचार करने लगा। कैसा भयानक जीवन था वह! क्या वह उसे पूर्ण कर सकेगा? इस विचार के आते ही वह घबराने लगा। कहीं वह शिथिलता न दिखा दे—कायर की भाँति रणाङ्गण से पीठ फेर कर भाग न दे। उसका शरीर ही नहीं, उसकी आत्मा भी काँपने लगी।

वह धीरे-धीरे उठ कर उसी कोठरी में इधर से उधर और उधर से इधर घूमने लगा। परन्तु कुछ ही देर में ऊब कर अपने बिस्तर पर बैठ गया। परन्तु यह शरीर की उद्विग्नता न थी, यह थी मन को उद्विग्नता। बैठने से मन तो शान्त नहीं हो सकता था। बैठने से भी बेचैनी उतनी ही रही—न बैठे चैन, न घूमते चैन, न लेटे चैन। इस प्रकार बड़ी कठिनता से उसने कुछ घण्टे व्यतीत किए। खाने का समय हो गया था। उसके द्वार का ताला खोला गया। जमादार के साथ दो क़ैदी उसके लिए खाना लाए। एक के हाथ में एक काली बाल्टी थी, जिसमें दाल थी। दूसरे के हाथ में रोटियाँ थीं। दाल भी काली थी और रोटियाँ भी काली थीं। विमल ने अपनी कटोरी में दाल ले ली और हाथ में रोटियाँ। तसले में पानी भरा हुआ था। जेल की ओर से यह पहला भोजन था। विमल ने उस भोजन की ओर देखा—जी काँप गया। रोटी का एक ग्रास मुख में दिया, दाँतों के नीचे ही वह ग्रास रह गया। रोटी में मिट्टी मिली हुई थी, जिसे दाँत सरलता से पहचान गए थे। उसने दाल को देखा। वही हाल, जो दलिया का था। काला-काला पानी था, दाल के दाने का तो नाम भी नहीं था। विमल ने उस दाल को पृथ्वी पर फेंक दिया। कुछ देर में पृथ्वी पर केवल एक काली रेखा बन गई। कोई नहीं कह सकता था कि वह दाल का चिन्ह था। यह भोजन, दो बार प्रतिदिन, बारह महीनों तक! क़ैदियों का जीवन कुत्ते के जीवन से भी बुरा था। एक कुत्ता भी उस दाल को न सूँघता। और वही दाल मानव-हृदय के टुकड़ों को खाने को दी जा रही थी। वे रोटियाँ, जिन्हें पशु भी खा न सकेगा, क़ैदियों के भाग में पड़ी थीं। भारतीय क़ैदियों और पशुओं में इतना बड़ा अन्तर! क़ैदी इतने निकृष्ट, इतने असहाय! विमल ने थोड़ा नमक रोटियों के साथ खाने को माँगा, परन्तु वह उसे नहीं मिला। विमल ने उस समय रोटी नहीं खाई।

सन्ध्या हुई। विमल यह देखना चाहता था कि सन्ध्या का भोजन कैसा होगा? भोजन उसने देखा। वही बात थी। रोटियाँ वैसी ही। दाल के स्थान पर काली कढ़िया थी। यही कढ़िया जेल की बड़ी प्रिय तरकारी होती है। आलू या बैंगन तो छठे-छमाहे किसी त्योहार के अवसर पर ही देखने को मिलते हैं; नहीं तो प्रतिदिन सन्ध्या को कढ़िया, कढ़िया और कढ़िया। यह तरकारी एक प्रकार की घास से बनाई जाती है, जो इतनी बेशर्म होती है कि जेल के बाग़ में पूरे वर्ष उगती रहती है। क़ैदी उसी को काट कर और गँड़ासे से टुकड़े-टुकड़े करके ले आते हैं। कभी उसमें नीम के पत्ते, कभी काँटे और बहुधा मिट्टी तथा पत्थर के टुकड़े भी चले आते हैं। यह कटी हुई घास धोई नहीं जाती, वैसे ही पानी के साथ एक लोहे के बड़े हण्डे में उबलने को रख दी जाती है और कुछ देर के बाद उसमें नमक और तेल मिला दिए जाते हैं। यही काली कुत्सित कढ़िया क़ैदियों के मत्थे मढ़ी जाती है। विमल ने उसे भी देखा। यदि पशुओं को पका कर भोजन दिया जाता, तो वे भी इस प्रकार की कढ़िया न खाते। परन्तु क़ैदियों के भी हृदय और आत्मा होते हैं, इसका विचार तो जेल के अधिकारियों को होता ही नहीं। विमल ने बड़ी कठिनता से सूखी रोटी के कुछ टुकड़े पानी के साथ गले से नीचे उतारे। रात भी उसे नींद नहीं आई। कुछ देर तो वह बिस्तर पर करवटें बदलता रहा और कुछ देर कोठरी में घड़ी के पेण्डुलम की भाँति चक्कर लगाता रहा। कड़ी गर्मी पड़ रही थी। वायु का प्रवेश उस कोठरी में नहीं हो सकता था। मच्छरों के मारे जान आफ़त में थी। उस समय विमल का दृढ़ हृदय भी एक बार विचलित हो गया।

१०

प्रातःकाल हुआ, बड़ी प्रतीक्षा के बाद। विमल को प्रातःकाल की कभी इतनी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी थी। वास्तव में, उसे पहले कभी यह जानने की आवश्यकता ही न पड़ी थी कि प्रातःकाल कब आता है और रात्रि का अवसान कब हो जाता है।

शौचादि से निवृत्त होकर विमल ने देखा कि उसकी कोठरी के कम्पाउण्ड में अनेकों क़ैदी बैठे हैं। जमादार और नायब जेलर उन सबको काम दे रहे थे। जमादार ने जब क़ैदियों को गिना तो उनमें एक की कमी थी।

'किधर है नम्बर २१?'—जमादार चिल्लाया।

सब क़ैदी चुप रहे। नायब जेलर का दिमाग़ गर्म हो गया।

'कैसे चुप बैठे हैं, ये ......! मारो सबको जूते।'—उसने जमादार की ओर देख कर कहा। जमादार ने बिना कुछ पूछे, बिना कुछ कहे पास बैठे हुए कई क़ैदियों को चपतें लगा दीं, मानो वे मनुष्य नहीं, पत्थर की मूर्तियाँ थे। इतने ही में नम्बर २१ उधर आ गया। वह धीरे-धीरे आ रहा था, लँगड़ाता हुआ, कराहता हुआ। उसकी आकृति देखने पर विदित होता था कि वह रुग्ण था। वह पास भी नहीं आया था कि जमादार ने उसे कई गालियाँ सुना दीं।

'कहाँ था बे उल्लू के पट्ठे, अब तक?'—नायब जेलर गर्म होकर नं० २१ से बोले।

'हुज़ूर, रात से तबियत ख़राब हो गई है।'—क़ैदी विनम्र होकर बोला।

'तबियत ख़राब हो गई है? हम तेरे बाबा के नौकर हैं कि इस तरह यहाँ बैठे रहेंगे? इतनी ही नवाबी थी तो जेल ही में क्यों आया था?'

'हुज़ूर, आप मालिक हैं, मुदा तबियत ख़राब होने से ....।'

'लगे.....में। बकता ही जाता है, चुप होकर सुना भी नहीं जाता!'—नायब साहब ने हुक्म दे दिया।

जमादार ने नं० २१ को एक धक्का दिया, जिससे वह 'हा' करके पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही जमादार ने अपना डण्डा निकाला और क़ैदी के तलवों पर ताड़-ताड़ लगाने लगा। क़ैदी ने पहले 'हाय-हाय' की, फिर वह चीत्कार करके रोने लगा। अन्त में वह 'दुहाई नायब साहब की, दुहाई सरकार की'—कह कर चिल्लाने लगा। नायब की बर्बरता अभी समाप्त नहीं हुई थी। वह मुस्कुराते हुए इस दृश्य को देख रहा था, उसी प्रकार, जैसे एक शिकारी एक असहाय आहत पक्षी को तड़पते हुए देख कर हर्षित होता है। या तो वह नायब हृदय लेकर ही पैदा नहीं हुआ था या फिर उसका हृदय जेल के जीवन से मर चुका था। वह क़ैदी की 'हाय-हाय' और 'दुहाई' को सुन कर और भी उत्तेजित हो गया, मानो बदले की भावना उसके हृदय में जाग्रत हो गई हो। वह धीरे-धीरे अपनी कुर्सी से उठा और जमादार के राक्षसी कार्य में सहायता प्रदान करने के लिए उसके निकट पहुँच गया। क़ैदी अब भी दुहाई देकर चिल्ला रहा था। नायब ने उसके निकट पहुँच कर जूते से एक गहरी ठोकर उसके सिर पर लगाई। क़ैदी ने कुछ कहा नहीं। वह शिथिल होने लगा, उसके नेत्र अधखुले थे और वे नायब की ओर देख रहे थे। पता नहीं कि उनमें नायब के प्रति कैसे भाव थे—वह उन्हें श्राप दे रहा था या उनके प्रति दया दिखा रहा था।

उसकी यह दशा देख कर नायब चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया। जमादार ने क़ैदी के पैर छोड़ दिए और उसे पीटना बन्द कर दिया।

'मर न जाय कहीं, हुज़ूर!'—जमादार बोला।

'बहाना कर रहा है। यहाँ तो सैकड़ों ऐसे मामले देखे हैं।'—नायब साहब ने उपेक्षा से उत्तर दिया।

परन्तु क़ैदी बहाना नहीं कर रहा था। उसको ज़ोर से खाँसी आई और उसीके साथ उसके मुख से रक्त की धारा बहने लगी। नायब साहब ने उसे अच्छा होने के लिए—या मरने के लिए—अस्पताल भिजवा दिया। परन्तु जब दूसरों का नम्बर आया तो वे ही

कृत्य फिर किए जाने लगे। वह तो एक बधशाला थी, एक-दो के मरने की वहाँ किसे चिन्ता !

११

विमल ने यह सारा नाटक देखा। अमानुषिकता, शैतानियत और अत्याचारों का इतना वीभत्समय तथा रोमाञ्चकारी दृश्य उसने अभी तक कहीं नहीं देखा था। उसका सारा शरीर काँप उठा। रात भर सोया नहीं था, भोजन ठीक से मिला नहीं था, एक-एक सेकण्ड व्यतीत करना कठिन हो रहा था। तिस पर भी वह दृश्य देखना पड़ा। यह जेल था या जीवित-मृत्यु ! क्या यह वही जेल था, जिसके विषय में उसने इतना सुन रक्खा था। यहाँ १।।) रोज़ का भोजन क्या, सूखी दाल-रोटी भी भली-भाँति नहीं मिलती थी। मशायरे, कवि-सम्मेलन आदि क्या, किसी से एक बात करने का अवसर भी नहीं मिलता था ! क्या तीन सौ पैंसठ दिन उसे इसी प्रकार व्यतीत करने पड़ेंगे। इन सब विचारों में ही उसके सामने माता की सौम्य मूर्ति आ गई, साथ ही याद आ गए माता के अन्तिम शब्द। कहीं ऐसा न हो कि वह इन विपत्तियों से घबरा कर माफ़ी माँग ले। उसे अपने पर ही अविश्वास होने लगा, अपने से ही वह डरने लगा। बड़ी कठिनता से उसने वह दिन बिताया।

दूसरे दिन रविवार था। उसे आशा थी कि माँ और शारदा उससे मिलने आएँगी। मुलाक़ात का समय हुआ। वह जेलर के कमरे में बुलाया गया। एक कोने में शारदा खड़ी थी। विमल ने शारदा को देखा। शारदा ने विमल को देखा।

'भैया ?'

'शारदा !'

कुछ देर वे दोनों चुप रहे। शारदा के नेत्रों से इतने ही में आँसू बहने लगे।

'यह क्यों, शारदा ?'

शारदा चुप रही।

'माँ क्यों नही आईं ?'

'माँ आ नहीं सकीं।'

'माँ आ नहीं सकीं ? यह कैसे हो सकता है शारदा ? मैं तो इस दिन की प्रतीक्षा बड़ी लगन से कर रहा था। माँ को देखने की बड़ी लालसा थी। न जाने फिर कब दूसरी मुलाक़ात हो। ओह, माँ को बिना देखे......वे क्यों नहीं आ सकीं शारदा ?'

'काम लग गया।'

'सत्य को छिपा रही हो, बहिन ! अपने विमल को देखने से बढ़ कर उनके लिए कोई काम नहीं हो सकता था। बोलो बात क्या है ? क्या वह बीमार हैं ?'

'नहीं।'

'नहीं ? सच कहती हो ? मेरे शिर की...'

'क़सम न खाओ, भैया, माँ अस्वस्थ हैं।'

'अधिक ?'

'हाँ।'

विमल कुछ देर चुप रहा। फिर उसके नेत्रों से भी आँसू बहने लगे।

'यह क्या, भैया ?'

'माँ की याद, शारदा !'

'माँ तो अच्छी हो जाएँगी।'

'मेरा हृदय उनके दर्शन के लिए व्याकुल हो रहा है।'

'अधीर न होओ भैया ! दृढ़ता से काम लो। माँ ने तुम्हारे लिए यही सन्देशा भेजा है कि तुम वीरतापूर्वक इस वर्ष को व्यतीत करना। उन्हें भूल जाओ, भैया ! इस समय तुम्हारे सामने अन्य आवश्यक प्रश्न हैं—अपना सिद्धान्त, अपना नाम, पिता का नाम। इन सबकी रक्षा करनी है।'

'कैसे भूल जाऊँ बहिन ! जितना ही माँ को भूलने की चेष्टा करता हूँ, उतना ही हृदय उनके पास पहुँचने को व्याकुल हो जाता है। तुम जानती हो सब से बढ़ कर मेरे लिए संसार में माँ हैं !'

'और मातृभूमि ?'

'मातृभूमि के लिए तो अनेकों सन्तानें हैं, परन्तु माँ की देख-भाल के लिए तो मैं अकेला ही हूँ। इस समय मुझे माँ की रोग-शय्या के पास होना चाहिए था।'

'साहस न खोओ, भैया ! इन विचारों को अपने मन से निकाल दो, नहीं तो ये तुम्हें शिथिल बना देंगे। ये पहले दिन तुम्हारे सामने बहुत कठिन होंगे, इन्हें किसी प्रकार बिताने का उद्योग करना। फिर तो यह जीवन तुम्हारा हो जायगा, और तुम इसके।'

'समझता हूँ, शारदा !'

'दृढ़ता से काम लोगे ?'

'उद्योग करूँगा।'

'ईश्वर और माँ का आशीर्वाद तुम्हें बल देगा। मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करूँगी कि मैं अपने भैया को वर्ष भर बाद सकुशल वापस पा लूँ।'

'जाओ शारदा, माँ को न छोड़ना।'

'माँ की तुम चिन्ता न करो, भैया ! मैं माँ के साथ हूँ।'

समय हो गया था। जेलर ने इशारा किया। विमल ने शारदा का हाथ थपथपाया। शारदा के नेत्रों से दो आँसू निकल आए।

'तुम ऐसा न करो, शारदा।'

'रोक न सकी, भैया ! इस वर्ष की राखी तुम्हारे हाथ में न बाँध सकूँगी।'

'जाओ।'—कह कर विमल ने उसका हाथ छोड़ दिया। जमादार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। विमल उसके साथ भीतर की ओर चला गया। शारदा आँसू पोंछती हुई बाहर चली गई। बाहर जाकर वह आँखें फाड़-फाड़ कर जेल की उस चहारदीवारी की ओर देख रही थी, जिसके भीतर विमल बन्द था। उस छोटी सी दीवार के भीतर एक अद्भुत संसार बन्द था।

❀ ❀ ❀

अपनी कोठरी में वह आया तो उसकी बेचैनी और भी बढ़ गई थी। पहले कुछ दिनों बेचैनी और उद्विग्नता का प्रत्येक नए क़ैदी में होना स्वाभाविक है, चाहे वह क़ैदी उसे वाह्य जगत पर प्रकट ही न करे। परन्तु ज्यों-ज्यों दिन व्यतीत होते जाते हैं, त्यों-त्यों वह उद्विग्नता कम होती चली जाती है और एक दिन आता है, जब कि जेल का जीवन बिलकुल ही नहीं अखरता। परिस्थितियों के परिवर्तन पर ऐसे भावों का होना स्वाभाविक है। हाँ, बात यह है कि कुछ व्यक्ति तो उन प्रारम्भ के दिनों को खींच ले जाते हैं और वे ही बाह्य जगत के वीर-योद्धा और सफल सैनिक समझे जाते हैं। और कुछ व्यक्ति उन दिनों में ही घबरा कर फिसल पड़ते हैं और वे ही संसार में कायर, देशद्रोही आदि नामों से पुकारे जाते हैं।

उन दिनों को खींच ले जाना विमल के लिए असम्भव नहीं था। कुछ नैतिक बल सञ्चय करके वह उन्हें व्यतीत कर सकता था, परन्तु माँ की बीमारी के समाचार ने उसके मन में एक विप्लव उत्पन्न कर दिया। जब से वह शारदा से विलग होकर आया था, उसके नेत्रों के आगे माँ की मूर्ति ही नाच रही थी। वे सारे दृश्य माँ की मृत्यु-शय्या के थे। उसके हृदय में ऐसा विश्वास सा पैदा हो गया था कि माँ बचेंगी नहीं। क्या वह माँ को एक बार देख भी न सकेगा। क्या अन्तिम बार वह उनके चरणों का स्पर्श न कर सकेगा। उसकी आत्मा छटपटाने लगी। क्या वह बाहर जा सकेगा ? यदि बाहर गया तो संसार क्या कहेगा ? परन्तु संसार की उसे क्या परवाह ? संसार उसकी माँ को मृत्यु से न बचा लेगा, फिर वह संसार की परवाह करे क्यों ? जिस प्रकार भी हो सकेगा, वह माँ के पास पहुँचेगा। उस दिन उसने भोजन नहीं किया था। सारे दिन कोठरी में इधर से उधर घूमता रहा और उसी प्रश्न पर विचार करता रहा। अन्त में उसने अपना निश्चय बना लिया। वह जेलर के सामने खड़ा था।

'तुम्हारे छूटने का केवल एक ही उपाय है।'

'क्या ?'

'तुम्हें यह लिखना पड़ेगा कि तुम भविष्य में राष्ट्रीय कार्यों में भाग न लोगे।'

'और कोई उपाय नहीं है कि मैं एक दिन के लिए ही बाहर जा सकूँ ?'

'कोई नहीं।'

विमल कुछ देर तक विचार करता रहा।

'लिखोगे ?'

विमल ने फिर भी कुछ न कहा।

'लिखोगे ?'—जेलर ने फिर पूछा।

विमल क्या उत्तर दे, उसके सामने यह एक समस्या थी। क्या वह 'हाँ' कह कर छुटकारा प्राप्त कर ले और अपनी माता के दर्शन प्राप्त करने के लिए स्वतन्त्र हो जाय ? अथवा वह 'नहीं' कह कर फिर उसी कोठरी में फिक जाने को तैयार हो जाय ?

'बोलो'—जेलर ने कहा।

'बहुत कठिन है।'

'कठिन क्या है ?'

'हाँ कहना।'

'तुम अभी बच्चे हो, इसीलिए ऐसा कह रहे हो।'

'मैं बच्चा नहीं हूँ। मैं सब समझता हूँ। इसीलिए मेरी आत्मा मुझे ऐसा करने की आज्ञा नहीं देती।'

'तुम आत्मा की बात करते हो ? जेल में सड़ने से तुम्हारी आत्मा को क्या उच्चता प्राप्त हो जायगी ? तुम कष्ट सहकर भी वही रहोगे, नाम तो उन थोड़े से व्यक्तियों का होगा, जो नेता कहाते हैं।'

'मुझे नाम की परवाह नहीं।'

'नाम की परवाह नहीं ? फिर किस बात की परवाह थी ?'

'देश-सेवा की।'

'देश-सेवा के लिए कष्टों को सह रहे थे ?'

'हाँ।'

'जेल के कष्ट भी सह सकोगे ?'

'मुझे इन कष्टों से अधिक दुःख नहीं होता। अभी मुझे यहाँ आए कुछ ही दिन हुए हैं। आगे चल कर इनसे अधिक भयानक कष्टों को सहन करने की भी क्षमता मुझमें हो जायगी। मैंने इनसे अधिक कष्ट पहले ही देखे हैं। ये मेरे लिए नए नहीं हैं।'

'फिर छुटकारा किसलिए चाहते हो ?'

'अपनी एक शिथिलता के कारण।'

'वह क्या ?'

'मातृप्रेम।'

'माता को इतना प्यार करते हो ?'

'हाँ, संसार में सब से बढ़ कर। वह मृत्यु-शय्या पर पड़ी है। उसके अन्तिम दर्शनों की लालसा है। यदि बिना देशद्रोही बने यह हो सकता।'

'अपनी शिथिलता का मूल्य तो तुम्हें चुकाना ही पड़ेगा।'

'इसका मूल्य देश के साथ विश्वासघात ?'

'या फिर मातृवियोग और जेल की यातनाएँ।'

'दोनों ही कठिन हैं।'

'एक दूसरे से कुछ सरल अवश्य होगा, सोच लो।'

(शेष मैटर १९वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च-स्कॉलर]

(शेषांश)

स्वीज़रलैण्ड का शासन-विधान

स्वीज़रलैंड में एक फ़ेडरेल अदालत होती है, जिसे बन्डेसगरिचृट (Bundesgericht) कहते हैं। इस अदालत में २४ न्यायाधीश होते हैं। ये न्यायाधीश दोनों धारा-सभाओं की संयुक्त बैठक द्वारा चुने जाते हैं और उनका कार्य-काल ६ वर्ष का होता है। परन्तु कार्य-काल समाप्त होने पर भी बहुधा पुराने न्यायाधीश ही पुनः चुन लिए जाते हैं और इस तरह वे जब तक चाहते हैं, तब तक अपने पद पर बने रहते हैं। माली मुक़दमे के लिए अदालत का कार्य तीन विभागों में बँटा होता है। कुछ मामलों की प्रथम सुनवाई इसी अदालत में होती है। अन्यथा यह प्रान्तिक अदालतों के निर्णय की अपील सुनती है। प्रजातन्त्र तथा फ़ेडरेल क़ानूनों से सम्बन्ध रखने वाले अभियोगों को भी यही अदालत सुनती है। विशेष प्रान्तीय सरकारें फ़ौजदारी के अभियोगों को भी इस अदालत में भेज सकती हैं। फ़ौजदारी के मामलों की सुनवाई के लिए अदालत के चार विभाग हो जाते हैं।

यदि कोई प्रान्तीय क़ानून फ़ेडरेल विधान या फ़ेडरेल क़ानून के विपरीत हो तो फ़ेडरेल अदालत उस प्रान्तीय क़ानून को रद्द कर सकती है। पर किसी फ़ेडरेल क़ानून पर इस अदालत का कोई अधिकार नहीं रहता और न यह उस क़ानून को रद्द कर सकती है। स्वीज़रलैंड के विधान में स्पष्ट कहा गया है कि पार्लामेण्ट द्वारा बनाए हुए तमाम क़ानूनों को कार्यान्वित करना फ़ेडरेल अदालत का ही कार्य है।

शासन करने वाले क़ानूनों की (Administrative Law) योजना तो स्वीज़रलैण्ड में है, परन्तु शासन करने वाली अदालतें वहाँ नहीं होतीं। जब फ़ेडरेल सरकार और नागरिकों में कोई मतभेद विद्यमान होता है—जिसमें शासन सम्बन्धी क़ानून का प्रश्न भी सम्मिलित रहता है, तो वह मतभेद किसी अदालत के सम्मुख न लाया जाकर सर्व-प्रथम फ़ेडरेल कौन्सिल या मन्त्रि-मण्डल के सामने लाया जाता है। यदि मन्त्रिमण्डल का निर्णय मान्य नहीं होता तो दोनों धारा-सभाओं की संयुक्त सभा अपील सुनती है।

पाठक सोचते होंगे कि स्वीज़रलैण्ड में, जहाँ भिन्न-भिन्न जाति के लोग रहते हैं, जहाँ भिन्न-भिन्न धर्म के अनुयायी बसते हैं, तथा जहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, अवश्य ही अगणित 'पार्टियाँ' होती होंगी। किसी भी यूरोपीय राष्ट्र में दलबन्दियों के लिए इतना मसाला न मिलेगा, जितना स्वीज़रलैण्ड में है। परन्तु पाठक सम्भवतः आश्चर्य करेंगे कि पड़ोसी राष्ट्रों की अपेक्षा स्वीज़रलैण्ड में बहुत कम 'पार्टियाँ' हैं। अर्थात् वहाँ केवल चार ही महत्वपूर्ण पार्टियाँ हैं। आजकल 'इनीशियेटिव' (Initiative) तथा 'रिफ़रण्डम' (Referendum) लोकतन्त्रवाद के दो अमोघ शस्त्र हैं। इन्हीं के बल पर जनता अपनी इच्छाओं को कार्यान्वित कराती है। 'इनीशियेटिव' वह योजना है, जिसके द्वारा मताधिकारों की निश्चित संख्या किसी क़ानून को तैयार कर यह तक़ाज़ा करती है कि या तो धारा-सभा उस क़ानून का निर्माण करे या उस क़ानून को स्वीकृति के लिए जनता के सामने रक्खे। तत्पश्चात् यदि जनता उस क़ानून को निश्चित बहुमत से स्वीकार कर लेती है, तो वह क़ानून बन जाता है। 'रिफ़रण्डम' वह योजना है, जिसके द्वारा धारा-सभा द्वारा बनाया हुआ कोई क़ानून उस समय तक लागू होने से रुका रहता है, जब तक कि वह मताधिकारियों के सामने न रख दिया जाय तथा वे उसे स्वीकार न कर लें। उपर्युक्त दोनों योजनाएँ एक दूसरे की कमी को पूरा करती हैं। प्रथम योजना का लक्ष्य है, जनता-द्वारा इच्छित क़ानून को बनाना, जिसको बनाना धारा-सभा भूल गई है या जिसको वह नहीं बनाना चाहती। दूसरी योजना का लक्ष्य है धारा-सभा द्वारा बनाए गए उस क़ानून को लागू होने से रोके रहना, जिसे जनता पसन्द नहीं करती। इन दोनों अत्यन्त उपयोगी योजनाओं का पुश्तैनी घर स्वीज़रलैण्ड ही है।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही स्वीज़रलैण्ड के अधिक प्रान्तों में 'रिफ़रन्डम' का प्रयोग बराबर होता था। सन् १८७४ में एक संशोधन द्वारा इसका प्रयोग फ़ेडरेल क़ानूनों में लागू कर दिया गया। तीस सहस्र मताधिकारी धारा-सभा से प्रार्थना कर सकते थे कि वह किसी क़ानून को लागू न करे, जब तक कि जनता उसे स्वीकार न कर ले। 'इनीशियेटिव' का प्रयोग भी प्रान्तीय सरकारों में लागू कर दिया गया और फ़ेडरेल विधान में संशोधन के लिए उसका प्रयोग होने लगा। दोनों योजनाओं का प्रयोग स्वीज़रलैण्ड में निम्न-लिखित ढङ्ग से होता है—'इनीशियेटिव' का प्रयोग (१) जेनेवा को छोड़ कर शेष प्रान्तों में प्रान्तीय विधान को दोहराने तथा सुधारने के लिए होता है; (२) लुसर्न, वलेस, और फ़िबर्ग को छोड़ कर शेष प्रान्तों में नवीन क़ानून बनाने के लिए, और (३) कनफ़ेडरेशन में विधान में संशोधन करने के लिए, परन्तु क़ानून बनाने के लिए नहीं। 'रिफ़रण्डम' का प्रयोग—(१) तमाम प्रान्तों के प्रान्तीय विधानों में संशोधन करने के लिए, (२) फ़िबर्ग को छोड़ कर शेष अन्य प्रान्तों में मामूली क़ानूनों की स्वीकृति के लिए (३) कनफ़ेडरेशन में धारा-सभा द्वारा प्रस्तावित वैध संशोधनों की स्वीकृति के लिए, और (४) कनफ़ेडरेशन में प्रार्थना-पत्र द्वारा प्रस्तावित मामूली क़ानूनों के निमित्त होता है। कुछ प्रान्तों में तो प्रत्येक क़ानून पर जनता की राय अवश्यमेव ली जाती है और कुछ प्रान्तों में एकदम नहीं ली जाती, जब तक कि मताधिकारियों की निश्चित संख्या उसके लिए प्रार्थना न करे।

पाठकों को समझ लेना चाहिए कि वहाँ के प्रान्तों में 'इनीशियेटिव' का प्रयोग कैसे होता है। कुछ लोग या कोई संस्था क़ानून तैयार करती है। यदि प्रान्तीय कौन्सिल उपर्युक्त क़ानून को पसन्द नहीं करती, तो एक प्रार्थना-पत्र तैयार कर जनता में घुमाया जाता है और हस्ताक्षर कराए जाते हैं। तत्पश्चात् प्रार्थना-पत्र प्रान्तीय अधिकारियों के पास भेजा जाता है। प्रस्तावित क़ानून की छपी हुई कॉपियाँ जनता में बाँट दी जाती हैं। इसके बाद जनता की राय ली जाती है।

जहाँ तक 'रिफ़रन्डम' का सम्बन्ध है, कोई क़ानून पास होते ही लागू नहीं होता, उस पर जनता की राय ली जाती है और जब जनता उपर्युक्त क़ानून को स्वीकार कर लेती है, तभी वह लागू होता है। कुछ प्रान्तों में जनता के प्रार्थना करने पर ऐसा किया जाता है। शेष प्रान्तों में स्वयं ऐसा होता है, जनता को प्रार्थना नहीं करनी पड़ती।

प्रान्तों में उपर्युक्त दोनों योजनाओं का प्रयोग काफ़ी होता है। पर फ़ेडरेल क़ानून के सम्बन्ध में उनका प्रयोग कम ही होता है। पिछले पचास वर्षों में विधान में केवल १५ संशोधन 'इनीशियेटिव' द्वारा प्रस्तावित किए गए थे। इनमें से केवल तीन संशोधनों को जनता ने स्वीकार किया। इन्हीं पचास वर्षों में 'रिफ़रन्डम' का प्रयोग लगभग ४० फ़ेडरेल क़ानूनों के सम्बन्ध में किया गया। इनमें भी आधे से अधिक जनता ने रद्द कर दिए।

उपर्युक्त दोनों योजनाओं की उपयोगिता के सम्बन्ध में लोगों में मतभेद है। विरोधी दल का कहना है कि इनसे धारा-सभाओं का उत्तरदायित्व कमज़ोर पड़ता है; धारा-सभाओं की शान में बट्टा लगता है; व्यर्थ का व्यय बढ़ता है तथा पुनः पुनः वोट देने से ऊब कर जनता पूर्णतया उदासीन हो जाती है और बहुत ही कम दिलचस्पी लेती है। पर उपर्युक्त दोनों योजनाओं के बल पर ही जनता अपनी इच्छा को कार्यान्वित करा सकती है।

स्वीज़रलैण्ड के प्रत्येक प्रान्त का अपना निजी विधान होता है और अपने ढङ्ग की सरकार होती है। कुछ प्रान्तों में तमाम जनता शासन करती है। ऐसे प्रान्तों में प्रत्येक वर्ष बालिग़ पुरुष नागरिकों की एक सभा होती है। इसी सभा में आवश्यकीय समस्याएँ हल की जाती हैं। यह सभा पाँच सदस्यों की कौन्सिल चुनती है और यह कौन्सिल वर्ष भर तक काम करती है। पर ऐसा केवल कुछ ही प्रान्तों में होता है। अधिकतर प्रान्तों में नागरिकों की कोई आम सभा नहीं

माँ और मातृभूमि

(१४वें पृष्ठ का शेषांश)

विमल कुछ देर तक सोचता रहा। उसके मस्तिष्क में विचारों का विप्लव मचा हुआ था। ओह, कितना उपद्रवकारी, नोचने वाला था वह विप्लव। विमल उसके फलस्वरूप ज़ोर से चिल्ला कर अपने शिर के बालों को नोच डालता, परन्तु जेलर उसके सामने खड़ा था।

'लिखोगे?' जेलर ने पूछा। विमल के नेत्रों के सामने एक ओर माँ और दूसरी ओर मातृभूमि आ गई। एक ओर माँ अपने हाथ फैलाए कह रही थी—आ, बेटा, इधर आ। दूसरी ओर मातृभूमि पुकार कर कह रही थी—नहीं, मेरी ओर आ! मुझे तेरी आवश्यकता है। विमल कुछ कह न सका। धीरे-धीरे उसे प्रतीत हुआ कि मातृभूमि का चित्र उसके नेत्रों के सामने से ओझल हुआ जा रहा है और माँ का चित्र सजीव सा हुआ जा रहा है। वह सिर नीचा करके चिल्ला उठा—हाँ लिखूँगा।

(क्रमशः)

* * *

होती। मताधिकारी एक कौन्सिल चुनते हैं, जिसे बड़ी कौन्सिल (Grand Council) कहते हैं। इस कौन्सिल की बैठक बहुधा होती है और यह कौन्सिल ही प्रान्तीय धारा-सभा का काम करती है। इस कौन्सिल का चुनाव अधिकतर आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Proportional Representation) के सिद्धान्त पर होता है। इन प्रान्तों की जनता एक शासकीय कौन्सिल भी चुनती है। इस कौन्सिल में पाँच या सात सदस्य होते हैं। यह कौन्सिल ही प्रान्त पर शासन करती है। दो प्रान्तों में इस कौन्सिल में सदस्यों को बड़ी कौन्सिल नियुक्त करती है।

स्वीज़रलैण्ड की सैनिक योजना के सम्बन्ध में भी पाठकों को दो-एक बात जान लेनी चाहिए। विधान में कहा गया है कि प्रत्येक नागरिक को सैनिक सेवा अवश्यमेव करनी होगी। पर स्वीज़रलैण्ड में कोई सेना (Standing Army) नहीं होती, अतः सैनिक शिक्षा के लिए एक विशाल योजना तैयार की गई है। बहुधा शिक्षा स्कूल से आरम्भ होती है। १९ वर्ष की उम्र में प्रत्येक नागरिक की सैनिक योग्यता के लिए परीक्षा होती है। यदि उसमें कोई कमी होती है, तो उसे दूर करने का प्रयत्न किया जाता है। योग्य नागरिक सैनिक शिक्षा के रङ्गरूटों के स्कूल में भेज दिए जाते हैं। इस शिक्षा की अवधि ६५ दिन से लेकर ९० दिन तक होती है। २० वर्ष की उम्र से लेकर ३२ वर्ष की उम्र तक नागरिक सेना में भरती किया जाता है। इस काल में उसे समय-समय पर सैनिक कैम्प में शिक्षा दी जाती है। इस शिक्षा की अवधि प्रत्येक वर्ष ग्यारह से लेकर पन्द्रह दिन तक होतो है।

स्वीज़रलैण्ड में आपको लोकतन्त्रवाद मिलेगा, पर लोकतन्त्रवाद की वे बुराइयाँ न मिलेंगी, जो अन्य लोकतन्त्रीय देशों में अधिकता से पाई जाती हैं। स्वीज़रलैण्ड के लोकतन्त्रवाद को काँटों रहित गुलाब का फूल समझना चाहिए। स्वीज़रलैण्ड को यह दुर्लभ सौभाग्य क्यों प्राप्त है ? उनका देश छोटा है, प्रकृति ने इसकी रक्षा कर रक्खी है, तथा इसके साधन असीम हैं। जनता में भले-बुरे की पहिचान करने की शक्ति है, समझने की योग्यता है तथा देश के प्रति प्रगाढ़ प्रेम है। अमीर और ग़रीब में वहाँ अधिक भेद नहीं है; सम्पत्ति समान रूप से बँटी हुई है। लॉर्ड ब्राइस नाम के एक लेखक ने अपनी पुस्तक में इस विषय का एक मनोरञ्जक उदाहरण दिया है। एक समय लार्ड ब्राइस स्वीज़रलैण्ड की सरकार का अध्ययन करने के लिए बर्न गए हुए थे। उन्होंने एक विद्वान नागरिक से स्वीज़रलैण्ड की सरकार की बुराइयों के सम्बन्ध में बातचीत की। उस नागरिक ने कहा—"हाँ, सरकार में घोर बुराइयाँ हैं। उदाहरण के लिए धारा-सभा की एक कमिटी गर्मी के महीनों में पहाड़ों में किसी एक अच्छे होटल में चली जाती है और जनता के रुपयों पर कई दिनों तक आनन्द लूटा करती है। यह घोर पाप है।" लॉर्ड ब्राइस ने उत्तर दिया—"यदि आपकी समझ में यही घोरतम पाप है तो आप केवल पैरिस, माण्ट्रील, पिट्सबर्ग, या सानफ्रान्सिस्को हो आइए, तो आपको पता चल जाएगा कि आप कितने भाग्यशाली हैं।"

❀ ❀ ❀

१९वीं शताब्दी की धार्मिक जागृति

[डॉ० मथुरालाल जी शर्मा, एम० ए०, डी० लिट०]

न्नीसवीं शताब्दी के मध्य में प्रायः सम्पूर्ण जगत् में यूरोपीय शक्ति का प्राधान्य स्थापित हो गया था। एशिया के बड़े-बड़े देशों में कहीं व्यापारियों की हैसियत से, कहीं सलाहकारों की हैसियत से, और कहीं शासकों की हैसियत से यूरोपीय लोग प्रवेश कर चुके थे। सर्वत्र उच्चश्रेणी के लोगों में यूरोपीय सभ्यता, यूरोपीय कला-विज्ञान तथा यूरोपीय धर्म की चर्चा होने लगी थी। इसी समय सम्पूर्ण एशिया में एक अपूर्व स्फूर्ति उत्पन्न हुई। सोलहवीं शताब्दी में इसी प्रकार की स्फूर्ति यूरोप में भी हुई थी। उस समय वहाँ के लोग धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक परम्परा के विषय में अनेक प्रकार के प्रश्न करने लगे थे, और मनुष्यों के हृदय तथा जीवन में व्यापक परिवर्तन होने लगा था। इस यूरोपीय नवयुग के कारण थे, धरातल के स्थानों का आकस्मिक ज्ञान, स्पेन और पोर्चुगाल के साहसी नाविकों की विश्व-परिक्रमा और अनेक प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का आविष्कार, किन्तु एशियाई नवयुग का कारण था, यूरोप का सम्पर्क। जब दो महा-संस्कृतियों का सम्पर्क होता है, तो दोनों में एक नवीन जीवन का सञ्चार हो उठता है, यह बात पारस्परिक प्रभाव के विषय में नहीं है। एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति पर प्रभाव तो सदा पड़ा ही करता है और इसके कारण संस्कृतियों का स्वरूप बदला करता है, परन्तु इसके अतिरिक्त जो सम्पर्क और सङ्घर्ष से जागृति होती है, उसका स्वरूप निराला ही होता है। दूसरी संस्कृति की प्रौढ़ता और उच्चता देख कर संस्कृति अपने हृदय को टटोलने लगती है, अपने अतीत गौरव का स्मरण करती है, अपने विलीन वैभव की पुनः प्राप्ति के लिए लालायित हो उठती है, अपने उज्ज्वल कार्यों को संसार के सामने और भी अधिक उज्ज्वल करके रखती है और अपने भूत को वर्तमान की अपेक्षा अधिक सुन्दर बतलाने का यत्न करती है। ग्रीक और रोम का जब सम्पर्क हुआ था तब यही क्रियाएँ दोनों सभ्यताओं में हुई थीं। आर्य और द्रविड़ लोगों के सम्पर्क के समय भी जो दोनों तरफ़ जागृति हुई, वह अथर्व-वेद तथा हरप्पा और मोहिञ्जोदाड़ो के खण्डहरों से प्रत्यक्ष है। यों तो यूरोपीय लोग १४९८ से ही भारत में आने लग गए थे, परन्तु उस समय कई अन्तर्राष्ट्रीय कारणों से भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर सकते थे। उसके पश्चात् दो शताब्दियों में उधर यूरोपीय देश अनेक प्रकार के कला-कौशल, विज्ञान, आविष्कार और खोज के कारण उन्नत होते गए और भारतवर्ष विदेशियों के शासन, सङ्कुचित धर्म-नीति, शिक्षाहीनता और प्रधानतः औरङ्गज़ेब की क्रूरता और असहिष्णुता के कारण अवनत होता गया। औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पश्चात् भारतवर्ष पर मराठों का क्षणिक अधिकार स्थापित हो गया था और मैसूर तथा बङ्गाल के शासक अपनी प्रबन्ध-पटुता और नीति-निपुणता का परिचय देने लग गए थे। परन्तु यूरोप के विज्ञान-बल और कपट-कौशल के सामने जीर्ण-शीर्ण भारत कब तक टिक सकता था। फ्रेञ्च और डच लोगों को अखाड़े से निकाल कर अङ्गरेज़ लोग १७४० के लगभग से भारत पर अपना राज्य जमाने का प्रयत्न करने लगे। इस प्रयत्न में इतनी कूटनीति और कपट-चातुरी भरी हुई थी कि भारतवासी उसके उद्देश्य को नहीं पहचान सकते थे। इस कूटनीति के माहात्म्य से पचास वर्ष के अन्दर ही सम्पूर्ण भारत को अङ्गरेज़ों ने एक ऐसे राजनैतिक जाल में जकड़ लिया, जिससे छुटकारा पाने के लिए उसकी विकीर्ण शक्ति और सङ्कुचित तथा परिमित ज्ञान कुछ काम नहीं दे सकते थे। सन् १८०५ में पञ्जाब के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत ने अङ्गरेज़ों की अधीनता स्वीकार कर ली थी और सन् १८४९ में पञ्जाब भी इनके अधिकार में आ गया।

इस प्रकार जब अङ्गरेज़ों की राजनैतिक सत्ता स्थापित हो गई, तो शासन, साहित्य, समाज और धर्म, सब क्षेत्रों में उनकी संस्कृति का प्रभाव पड़ने लगा। शासन का स्वरूप स्थूलतः अकबर के शासन की नक़ल थी, परन्तु अनेक विभागों का नया सङ्गठन किया गया, फ़ारसी का स्थान अङ्गरेज़ी को दिया गया और मालगुज़ारी के कई तरीक़े जारी किए गए। शिक्षा का माध्यम अङ्गरेज़ी भाषा बनाई गई और शासकों के कृपा-पात्र बनने के लिए तथा ऊँचे दर्जे की सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करने के लिए विद्यार्थीगण अङ्गरेज़ी साहित्य का विशेष रुचि से अध्ययन करने लगे। अङ्गरेज़ी सभ्यता की चकाचौंध में पड़ कर जातिभेद, स्पर्शास्पर्श, खाद्याखाद्य, कुलीन और अकुलीन और ऊँच-नीच आदि पुरातन परम्पराओं को हेय समझने लगे। ईसाई लोग सरकार की छत्रछाया में अपने धर्म का प्रचार करने लगे और बड़े-बड़े भारतीय विद्वान अपनी सामाजिक कुरीतियों से ऊब कर तथा धार्मिक सङ्कीर्णता से तङ्ग आकर ईसाई-मत की शरण ग्रहण करने लगे। यह समय भारत के इतिहास में बड़ी चिन्ता का था। अङ्गरेज़ी संस्कृति-रूपी सुरसा अपना विकराल मुँह फाड़ कर भारतीय संस्कृति को निगलना चाहती थी। अमेरिका के आदि निवासियों को, अफ़्रीका के हबशियों को, न्यूज़ीलैण्ड और ऑस्ट्रिया के अर्ध-सभ्य लोगों को तथा अन्य कई द्वीप-द्वीपान्तरों के निवासियों को जिस प्रकार यह अपने पेट में स्वाहा कर गई, उसी प्रकार भारतीय सभ्यता भी स्वाहा हो जाती। परन्तु हमारी सभ्यता सौभाग्य से काफ़ी सुदृढ़, बलवती, महती और पुरानी थी। यह सुरसा के मुँह या पेट में नहीं समा सकती थी। अतः "जस जस सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दुगुन कपि रूप दिखावा" का नाटक यहाँ होने लगा। अङ्गरेज़ी सभ्यता के सम्पर्क से हमारी सभ्यता का क्या रूपान्तर हुआ, यह एक अन्य विषय है। यहाँ हम केवल यह बतलाना चाहते हैं कि जिस समय अङ्गरेज़ी सभ्यता इस देश में हाथ-पैर फैलाने लगी और उसका प्राधान्य जमने लगा, तो भारतीय सभ्यता में एक अपूर्व जाग्रति हुई इस जाग्रति के आलोक में भारतीयों ने अपनी विस्मृत रत्नराशि का पुनर्दर्शन किया। उन्होंने अपने गौरवमय अतीत को देखा और प्राचीन ऋषि-मुनियों के प्रति, अपने सुन्दर साहित्य के प्रति तथा अपने ज्ञान और धर्म के प्रति फिर उनकी श्रद्धा उमड़ पड़ी।

इस भारतीय जागृति के प्रथम सूत्रधार राजा राममोहन राय हैं। मुसलमानों में जो स्थान सर सय्यद अहमद ख़ाँ का है, हिन्दुओं में वही स्थान राजा राममोहन राय का है। राजा राममोहन राय ने एक ब्राह्मण-कुल में जन्म लिया था, इसलिए धर्म और दर्शन के अध्ययन की ओर उनकी स्वाभाविक अभिरुचि थी। उन्होंने अरबी और फ़ारसी का भी अध्ययन किया था। भारत के प्रत्येक प्रान्त में वे घूम चुके थे और एक समय तिब्बत की भी यात्रा की थी। अङ्गरेज़ी सभ्यता के कारण जो देश पर चकाचौंध छाई हुई थी, उसका उन्होंने शीघ्र ही अनुभव कर लिया था। सती-प्रथा की लोमहर्षण लीला कई स्थानों पर उन्होंने अपनी आँखों से देखी थी और अपनी मित्र-मण्डली अपने परिवार में इस अमानुषिकता का उन्होंने कई बार विरोध किया था, जिसके कारण उनके कुटुम्बी लोग उनसे रुष्ट रहने लगे थे। राजा राममोहन राय ने दस वर्ष तक सरकार की नौकरी की। परन्तु उनकी महान आत्मा केवल जठर-ज्वाला के लिए समिधा जुटाने भर से सन्तुष्ट नहीं रह सकती थी। अपने पद को त्याग कर राजा राममोहन राय ने अङ्गरेज़ी भाषा का तथा अपने धर्म का विशेष अध्ययन किया। उन्होंने उपनिषदों का अङ्गरेज़ी भाषा में अनुवाद किया और बतलाया कि उपनिषद-धर्म शाश्वत धर्म है और किसी अन्य धर्म से इसका विरोध नहीं है। मूर्ति-पूजा और कर्म-काण्ड के जटिल जाल को राजा राममोहन राय अनावश्यक समझते थे। वे धर्म के तत्त्व में घुसने का अनुरोध करते थे। ईसा के असली उपदेशों को वे सुन्दर और ग्राह्य मानते थे। लेकिन ईसाई-मत में जो पीछे से बुराइयाँ घुस गई हैं, उनका भी वे प्रबल विरोध करते थे।

छप्पन वर्ष की अवस्था में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म-समाज की स्थापना की। ब्रह्म-समाज ईसाई, इस्लाम या किसी अन्य धर्म का विरोध या खण्डन नहीं करता था। इसका उद्देश्य था वैदिक ज्ञान-काण्ड की पुनर्जागृति। १८३० में ब्रह्म-समाज का एक भव्य भवन निर्माण हुआ और उसके प्रचार के लिए प्रयत्न किए जाने लगे। इस समाज में सम्मिलित होने के लिए किसी विशेष जाति की आवश्यकता नहीं थी। जो लोग शाश्वत अनिर्वचनीय, नित्य जगन्नियन्ता की श्रद्धा, भक्ति और सरलता के साथ उपासना करना चाहते थे, वे ब्रह्म-समाज में सम्मिलित हो सकते थे। यह एक क़ैद ज़रूर थी कि उसकी उपासना किसी विशेष साम्प्रदायिक नाम के द्वारा न की जावेगी और न किसी चित्र, प्रतिमा आदि का अर्चन किया जावेगा। किसी प्राणी का बध धर्म के नाम पर नहीं किया जा सकेगा। साप्ताहिक अधिवेशनों में उपनिषदों की कथा होती थी और बङ्गला में उसका अनुवाद करके जनता को सुनाया जाता था। वाद्य के साथ वैदिक मन्त्रों का पाठ किया जाता था और बङ्गला में किसी आध्यात्मिक विषय पर भाषण होता था। राजा राममोहन राय थोथे कर्म-काण्ड में विश्वास नहीं करते थे परन्तु साथ ही स्मृति और पुराणों के उपदेशों का विरोध भी नहीं करते थे।

राजा राममोहन राय भारत की वास्तविक धर्म-भावना को जागृत करना और बाहरी थोथेपन को हटाना चाहते थे। परन्तु साथ ही वे आधुनिक बातों से भी घृणा नहीं करते थे। राजा राममोहन राय ही प्रथम हिन्दू थे, जिन्होंने सामाजिक विरोध की परवा न करके यूरोप की यात्रा की थी। इस यात्रा से उनके ज्ञान और अनुभव का क्षितिज और भी अधिक विस्तृत हो गया और वे यूरोप तथा एशिया की संस्कृतियों के सुन्दर समन्वय का स्वप्न देखने लगे। राममोहन राय इन दो सभ्यताओं का समन्वय अवश्य चाहते थे, परन्तु वे इस बात के विरोधी थे कि यूरोपीय संस्कृति के गर्त्त में एशिया का व्यक्तित्व विलीन हो जाए। उनका आदर्श था, यूरोपीय तथा एशियाई सभ्यताओं का व्यक्तित्व तो बना रहे, परन्तु पारस्परिक सम्पर्क से एक सभ्यता के विकास और विस्तार में दूसरी से सहायता मिले। वे चाहते थे कि भारत का पुरातन आदर्श, उसका साहित्य और उसकी और सुन्दर परम्पराएँ तो बनी रहें, परन्तु यूरोप के विज्ञान और विस्तृत अनुभव से लाभ उठाता हुआ भारत अपनी सभ्यता को अधिक सुन्दर, स्वस्थ और सुदृढ़ बनावे।

सन् १८३३ में राजा राममोहन राय का देहावसान हुआ। भारत में ही नहीं, इङ्गलैण्ड में भी उनका बड़ा आदर था। वहाँ के प्रसिद्ध विद्वान और सुधारक श्री० बैन्थम उनको बड़ी आदर की दृष्टि से देखते थे और मनुष्य-जाति के सेवकों में उनको बड़ा आसन देते थे। राजा राममोहन राय के प्रयत्न से यूरोपीय विचारों ने भारतीय मस्तिष्क में प्रवेश करना आरम्भ किया। उस समय ऐसे लोगों की संख्या अत्यन्त अल्प थी, जो पुराने सङ्कुचित भावों को त्याग कर नए प्रकाश को ग्रहण करना चाहते थे। यह अल्प संख्या भी राममोहन राय के स्तुत्य प्रयास का फल था। उनके शिष्यों ने एक ज्ञान-प्राप्ति सभा की स्थापना की और एक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। इसका एकमात्र उद्देश्य था, प्रकाश की खोज और उसका स्वागत।

राजा राममोहन राय

उनके सुधार-कार्य में स्वर्गीय श्री० द्वारकानाथ ठाकुर राजा राममोहन राय के साथी थे। ये एक धनी और प्रतिष्ठित परिवार के पुत्र थे और अपनी दयालुता, दानशीलता तथा कुलीनता के कारण समाज पर अच्छा प्रभाव डाल सकते थे। दुर्भाग्यवश श्री० द्वारकानाथ अल्पावस्था में ही इस संसार से चल बसे। इङ्गलैण्ड जाते समय जहाज़ पर ही इनका देहावसान हो गया। राजा राममोहन के पश्चात् श्री० देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने ब्रह्म-समाज का नेतृत्व ग्रहण किया। उनके समय में ब्रह्म-समाज प्राचीन आर्यत्व की ओर अधिकाधिक झुकने लगा। एक समय वेदों की अपौरुषेयता भी स्वीकार कर ली गई थी, परन्तु इस विषय पर भारी विवाद छिड़ा और अन्त को यह ठहरा कि वेदों को ईश्वरकृत तथा स्वतः प्रमाण नहीं माना जावे और परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रकृति तथा मानव-हृदय के अन्तस्तल को टटोला जावे। देवेन्द्रनाथ ठाकुर अत्यन्त साधु-प्रकृति के सज्जन थे। उनका हृदय नितान्त निर्मल और निश्छल था। उनका अधिकांश समय एकान्त में ध्यान और ब्रह्म-चिन्तन में व्यतीत हुआ करता था। उनकी साधुता और ब्रह्मनिष्ठा के कारण लोग उनको महर्षि देवेन्द्रनाथ कहा करते थे। ईश्वरोपासना के लिए महर्षि ने उपनिषदों के सुन्दर स्थलों का एक मनोहर संग्रह किया था, जो ब्रह्मधर्म के नाम से पुस्तकाकार में प्रकाशित किया गया था। ब्रह्म-समाज में उस समय इस संग्रह का बड़ा आदर था। देवेन्द्रनाथ ठाकुर के सात पुत्र-रत्न हुए, जिनमें श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर इस समय विश्वविदित कविरत्न हैं।

जब श्री० केशवचन्द्र सेन ब्रह्म-समाज के सदस्य बने तो इस संस्था का रूपान्तर होने लगा। ईश्वरोपासना, ध्यान और आत्मचिन्तन की ओर लोगों की उदासीनता होने लगी और ऐहिक विषयों की ओर प्रवृत्ति बढ़ने लगी। केशवचन्द्र सेन १७ वर्ष की आयु में ही ब्रह्म-समाज के सदस्य बन गए थे। ये बड़े होनहार नवयुवक थे और महर्षि देवेन्द्रनाथ इनसे बहुत प्रेम करते थे। लेकिन स्वभाव और प्रवृत्ति में ये महाशय अपने नेता से बिल्कुल भिन्न थे। महर्षि आत्मोन्नति और ब्रह्म-चिन्तन पर ज़ोर देते थे और चित्त-शुद्धि को जीवन की सार्थकता के लिए अत्यन्त आवश्यक समझते थे, लेकिन केशव बाबू को इस विषय की चिन्ता नहीं थी। सामाजिक कुरीतियाँ और परम्परागत सङ्कुचित विचार उनको काँटे की तरह चुभते थे और बचपन से ही उनकी धारणा हो गई थी कि समाज-सुधार के बिना और अनुदारता को त्यागे बिना न देश का कल्याण हो सकता है और न आत्मा की उन्नति सम्भव है। अतः ब्रह्म-समाज में सम्मिलित होते ही उन्होंने कुप्रथाओं को निवारण करने का प्रयास आरम्भ कर दिया। जाति-भेद, पर्दा, बहु-विवाह, बाल-विवाह, महिला-पारतन्त्र्य, स्पर्शास्पर्श आदि विषयों का केशव बाबू ज़ोरदार शब्दों में विरोध करने लगे। उनकी मर्मस्पर्शिनी भाषा और अकाट्य युक्तियों से लोग आकर्षित होने लगे और बङ्गाली समाज में भारी हलचल मच गया। अनुदार तथा रूढ़ियों के उपासक लोग उनको नास्तिक, ईसाई, म्लेच्छ आदि उपाधियों से सम्मानित करने लगे, परन्तु केशव बाबू अपने निश्चित पथ से किञ्चिन्मात्र भी विचलित नहीं हुए। उनके पूर्व ब्रह्म-समाज में भी ईश्वरोपासना ब्राह्मण ही किया करता था, पर अब कोई भी कर सकता था. इस नियम का भङ्ग सर्वप्रथम केशव बाबू ने ही किया था। वे स्वयम् कायस्थ (या वैद्य? —स० 'भविष्य') थे और ब्रह्म-समाज के आदि नियमों के अनुसार उनको जनता के सामने प्रार्थना करने का अधिकार नहीं था। परन्तु स्वतन्त्र प्रकृति केशव इस अन्याय को कब स्वीकार कर सकते थे? उन्होंने कहा कि परमात्मा केवल ब्राह्मणों की ही सम्पत्ति नहीं है। वह राजा, रङ्क, ब्राह्मण, शूद्र सब का समान संरक्षक और समान उपास्य है। इस दलील के साथ केशव बाबू एक दिन स्वयम् ही आसन पर जा बैठे और प्रार्थना करने लगे। लोग देख कर अवाक् तथा अचम्भित हो गए, परन्तु उसी दिन से ब्रह्म-समाज में पुरोहित की आवश्यकता न रही। भविष्य में कोई भी जाति का सदस्य प्रार्थना करवा सकता था। कुछ दिन तक इसका धीमा विरोध चला, पर वह शीघ्र ही शान्त हो गया।

उस समय तक ब्रह्म-समाज में स्त्रियों को कोई स्वतन्त्रता नहीं थी और पर्दा-प्रथा जारी थी। सुधार-प्रिय केशव बाबू को महिला-पारतन्त्र्य घोर अन्याय मालूम होता था। इसलिए उन्होंने इस प्रथा का घोर विरोध करना आरम्भ कर दिया और एक दिन स्वयम् अपनी धर्मपत्नी को साथ लेकर ब्रह्म-समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में आए। पुरुषों के समाज में एक उच्चकुलीन महिला को खुले मुँह अपने पति के पास बैठी हुई देख कर लोग दङ्ग रह गए और कुछ अर्से तक इस कार्य की ख़ूब टीका होती रही। लेकिन शीघ्र ही लोग महिला-स्वातन्त्र्य की आवश्यकता को अनुभव करने लगे। थोड़े समय के अन्दर ही सैकड़ों उच्चकुलीन महिलाओं ने पर्दा त्याग दिया और पुरुषों के समाज में स्त्रियों का सम्मिलित होना एक साधारण सी बात मानी जाने

लगी। साथ ही केशव बाबू ने स्त्री-शिक्षा को भी उत्साहित किया। उन्होंने कई कन्या-पाठशालाएँ खुलवाईं और उनके यत्न से कई उच्चकुलों की लड़कियाँ उनमें शिक्षा ग्रहण करने लगीं।

अनेक उग्र और क्रान्तिकारी सुधारों के कारण केशव बाबू आदि ब्रह्म-समाज में नहीं निभ सके। अपने सुधारों का घोर विरोध देख कर उन्होंने समाज को छोड़ कर अपना एक नया समाज स्थापित किया। इस प्रकार ब्रह्म-समाज के दो भेद प्रचलित हुए—आदि ब्रह्म-समाज और नवीन ब्रह्म-समाज। नवीन ब्रह्म-समाज की विशेषता थी उदारता। इसमें पुरातन आर्य-रूढ़ियों का पालन किञ्चिन्मात्र भी आवश्यक नहीं समझा जाता था। प्रार्थना के समय हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी और पारसी सब के धर्म-ग्रन्थों का पाठ किया जाता था। इस समाज में कोई भी सम्मिलित हो सकता था और स्पर्शास्पर्श, विवाह-सम्बन्ध, खान-पान किसी भी बात में कोई सामाजिक बाधा नहीं थी। सन् १८७० में श्री० केशवचन्द्र सेन ने इङ्गलैण्ड की यात्रा की और वहाँ से वापिस लौटने पर उन्होंने और भी अधिक ज़ोर के साथ धार्मिक तथा सामाजिक क्रान्ति की तरफ़ पैर बढ़ाया। इतना ही नहीं, केशव बाबू एक नवीन धर्म की स्थापना का यत्न करने लगे। एक छोटी सी शिष्य-मण्डली उनको अवतार मानने लगी और उनसे दीक्षा ग्रहण करने लगी। यदि केशव बाबू अधिक समय तक जीवित रहते तो शायद एक पन्थ की स्थापना हो जाती, परन्तु सन् १८८४ में उनका देहान्त हो गया। अकबर के दीन-इलाही के समान उनके पन्थ का आदि और अन्त दोनों ही साथ हो गए।

ब्रह्म-समाज की स्थापना वर्तमान जागृति का श्रीगणेश था। राजा राममोहन राय ने सुषुप्त बङ्गाल को जगाया था और केशव बाबू ने अपने क्रान्तिकारी सुधारों द्वारा इस नवयुग का सूत्रपात किया था। श्री० विपिनचन्द्र पाल के शब्दों में राजा—राममोहन राय आधुनिक जागृति का जन्मदाता था और ब्रह्म-समाज नवीन भारत का जन्म दिन था।

राजा राममोहन राय के स्वतन्त्र और उदार विचार भारत के शिक्षित समाज में तीव्र वेग से फैलने लगे। बम्बई में प्रार्थना-समाज नाम की एक संस्था स्थापित की गई, जिसका उद्देश्य ब्रह्म-समाज से मिलता-जुलता था। इस संस्था के स्थापक थे धर्ममूर्त्ति श्री० महादेव गोविन्द रानाडे। श्री० रानाडे उन इने-गिने हिन्दुओं में थे, जिन्होंने सर्व-प्रथम बम्बई के विश्व-विद्यालय से बी० ए० पास किया था। रानाडे समाज-सुधारक और स्त्री-शिक्षा तथा विधवा-विवाह के बड़े पक्षपाती थे। राष्ट्रीय कॉङ्ग्रेस की स्थापना में भी रानाडे का बड़ा हाथ था। उदारता और सुधारप्रियता में प्रार्थना-समाज ब्रह्म-समाज से मिलता-जुलता था, परन्तु प्रार्थना-समाज की विशेषता यह थी कि वह भारत की प्राचीन संस्कृति, प्राचीन साहित्य, प्राचीन दर्शन और प्राचीन कला की रक्षा करता हुआ आगे बढ़ना चाहता था। रानाडे कहा करते थे कि सदियों की विपत्तियाँ और धक्के सहते हुए भी, संसार की पञ्चमांश जन-संख्या जो भारत में अब तक जीवित है और प्राचीन सभ्यता के चिह्न जो अब तक सुरक्षित हैं, इससे स्पष्ट मालूम होता है कि भगवान भारतीय जनता का फिर उद्धार करना चाहता है। इन भावों से प्रेरित होकर श्री० रानाडे प्राचीनता की रक्षा करना चाहते थे और साथ ही हानिकर रूढ़ियों को त्याग कर वर्तमान उन्नति से लाभ भी उठाना चाहते थे। प्रार्थना-समाज की स्थापना सन् १८६७ में की गई थी। इससे बम्बई प्रान्त में एक भारी हलचल मच गई और नवीन विचार-धाराएँ उत्तरोत्तर प्रबल होती गईं। श्री० महादेव गोविन्द रानाडे बड़े धर्मात्मा, सरल प्रकृति, न्यायप्रिय, विद्वान और मधुरभाषी सज्जन थे। उनके आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उनके विरोधी भी उनके सामने मौन धारण कर लेते थे।

प्रार्थना-समाज की स्थापना के आठ वर्ष बाद ही बम्बई नगर में एक नई संस्था स्थापित हुई। यह था 'आर्य-समाज'। आर्य-समाज भी ब्रह्म-समाज और प्रार्थना-समाज के सदृश १९वीं शताब्दी की जागृति का स्फुटीकरण था, परन्तु इसमें विशेषता यह थी कि प्राचीन और पुरातन उच्च संस्कृति को पुनर्जीवित करके वर्तमान भारत को प्राचीन भारत बनाना चाहता था। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती वैदिक साहित्य के धुरन्धर विद्वान थे और उनका स्वप्न था गौतम, कणाद, भीम और अर्जुन का गौरवमय भारत। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने प्राचीन शिक्षा-पद्धति जारी की। वैदिक शिक्षा के आधार पर स्त्रियों के समान अधिकार बतलाए और उनके सामने सीता और सावित्री का आदर्श रक्खा। उन्होंने चारों आश्रमों पर ज़ोर दिया और यज्ञ-हवन की परिमार्जित विधि को तथा षोड़श संस्कारों का पुनः प्रचलित किया। वे प्राचीन सभ्यता के इतने ज़ोरदार हामी थे कि उन्होंने 'हिन्दू' शब्द को भी विदेशी बतला कर हेय समझा और उनके अनुयाई अपने आपको 'आर्य' कहने लगे। वे स्वयम् वर्षों तक संस्कृत भाषा द्वारा ही अपने उद्देश्यों का प्रचार करते रहे, लेकिन जब श्री० केशवचन्द्र सेन से उनकी भेंट हुई तो उनके अनुरोध से वे प्रचार-कार्य में हिन्दी भाषा का उपयोग करने लगे।

आर्य-समाज वैसे तो धार्मिक संस्था थी, परन्तु इसके अनुयाइयों में आपसे आप ही राष्ट्रीय भावों का उदय हुए बिना नहीं रह सकता था। ऋषि दयानन्द केवल ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों के अध्ययन का उपदेश करते थे, वेदों को सम्पूर्ण विद्याओं का मूल समझते थे, प्रतिमा-पूजन तथा अवतारवाद को अवैदिक मानते थे, अनेक सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं को हानिकर सिद्ध करते थे और ज़ोरदार शब्दों में यह सिद्ध करते थे कि आधुनिक भारत शताब्दियों की परतन्त्रता के कारण अपने पुरातन विमल वैभव को खो चुका है, और उसकी दशा अत्यन्त दीन और हीन है, लेकिन वैदिक धर्म को ग्रहण करने से वह पुनः गौरवमय बन सकता है और संसार की सभ्य जातियों के सामने उसका मस्तक पुनः ऊँचा हो सकता है। इस प्रकार के उपदेशों से लोगों में स्वदेशाभिमान जागृत होता था और राष्ट्रीय भावों का उदय होता था।

ऋषि दयानन्द के अनुयाइयों ने सन् १८८६ में दयानन्द एङ्ग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की और उसके कुछ अर्से बाद ही काँगड़ी में गुरुकुल स्थापित हुआ। इन दोनों संस्थाओं ने सरकार से कोई मदद नहीं ली। गुरुकुल में प्राचीन पद्धति के अनुसार शिक्षा दी जाने लगी और दयानन्द कॉलेज में प्राचीनता और नवीनता का सहयोग करने का प्रयत्न किया जाने लगा। ऋषि दयानन्द के देहावसान के कुछ ही वर्ष बाद पञ्जाब और संयुक्तप्रान्त के प्रायः समस्त बड़े-बड़े नगरों में आर्य-समाज स्थापित हो गए और वैदिक प्रचार, स्त्री-स्वातन्त्र्य, स्त्री-शिक्षा, दलितोद्धार, शुद्धि, अनाथ-रक्षा आदि आर्य-समाज के कार्यों की सम्पूर्ण उत्तर भारत में धूम मच गई। सन् १९०७ में 'टाइम्स' पत्र के सम्वाददाता सर विलेण्टाइन चिरोल जब भारतीय स्थिति का निरीक्षण करने आए तो उन्होंने देखा कि आर्य-समाज एक ज़ोरदार सङ्गठन है जिससे इङ्गलैण्ड की भारतीय सरकार को भी सचेत रहना चाहिए। उन्होंने यह भी लिखा था कि आर्य-समाज एक प्रकार की गुप्त सरकार है।

आर्य-समाज से मिलती-जुलती और भी कई संस्थाएँ १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्थापित हुईं। इनमें 'साधारण धर्म-समाज' विशेष उल्लेखनीय है। इसका उद्देश्य भी आर्य-समाज की भाँति एक ईश्वरोपासना, मतमतान्तरों का अन्त, शिक्षा-प्रचार, जाति-भेद निवारण और देश में व्यापक जागृति फैलाना था। इस संस्था ने विशेष उन्नति नहीं की और कुछ अर्से तक अच्छा कार्य करके तत्कालीन विशाल संस्थाओं में यह विलीन हो गई।

धार्मिक जागृति नवीन संस्थाओं द्वारा ही प्रकट नहीं हुई थी। जो लोग किसी प्रकार का सुधार नहीं चाहते थे और बुरी-भली सब सामाजिक तथा धार्मिक रूढ़ियों को रक्षा करना चाहते थे, उनमें भी एक नवीन जीवन का सञ्चार हो रहा था। इस प्रकार के जीवन के सञ्चारक थे श्री० रामकृष्ण परमहंस। इनका जन्म सन् १८३४ में बङ्गाल के उच्च ब्राह्मण-कुल में हुआ था। कुछ समय तक योग और वेदान्त की शिक्षा ग्रहण करके इन्होंने संन्यास धारण कर लिया और अपनी भगवद्निष्ठा, असीम तितिक्षा तथा प्रगाढ़ भक्ति के द्वारा सहस्रों लोगों को इन्होंने अपनी ओर आकर्षित कर लिया। सन् १८८६ में इनका देहान्त हुआ और इनके योग्य शिष्य स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने गुरु का कार्य अपने हाथ में लिया। स्वामी विवेकानन्द बड़े प्रौढ़ विद्वान थे और साथ ही वेदान्त के गूढ़ तत्वों को सरल तथा ज़ोरदार भाषा में जनता के सामने रखते थे। वे भी सुधारों के पक्षपाती थे, परन्तु अधिक ज़ोर भगवद्भक्ति पर ही दिया करते थे। जाति-पाँति के बन्धन को वे नहीं मानते थे और नवयुवकों को अपने देश की सेवा करने के लिए तथा स्वास्थ्य और ब्रह्मचर्य द्वारा अपने शरीर को बलवान बनाने का उपदेश किया करते थे। वे हिन्दू-धर्म को सार्व-भौम बनने के योग्य समझते थे और प्रत्येक प्राचीन रूढ़ि में कुछ न कुछ रहस्य भरा हुआ मानते थे। उनको भारत की प्राचीन सभ्यता की उच्चता में बड़ा विश्वास था। स्वामी रामकृष्ण के दूसरे शिष्य थे स्वामी रामतीर्थ। ये महाशय पञ्जाब युनिवर्सिटी के एक बड़े योग्य स्नातक थे और आरम्भ में गणित-शास्त्र के एक प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर रह चुके थे। फिर संन्यास धारण करके इन्होंने सम्पूर्ण भारत का पैदल भ्रमण किया था और अपनी काव्यमयी भाषा में लोगों को भक्ति का उपदेश दिया करते थे। इन्होंने नदी में डूब कर अपना शरीर त्यागा था।

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही महाराजा दरभङ्गा ने सनातन-धर्म को सङ्गठित करने का प्रयत्न आरम्भ किया था, 'भारत-धर्म महामण्डल' की स्थापना सन् १९०२ में हुई थी। उसी समय जैन और सिक्खों में भी जागृति के चिह्न दिखाई देने लगे थे और मुसलमानों में भी धार्मिक कट्टरता जाग्रत हो उठी थी। सन् १८८९ में लाहौर नगर में 'अन्जुमन हिमायते इस्लाम' की स्थापना की गई थी, जिसका उद्देश्य था इस्लाम में अभिरुचि उत्पन्न करना, ईसाइयों का विरोध करना और अरबी मकतब खोलना।

जिस समय इन प्राचीन धर्मों को पुनर्जाग्रत करने के प्रयत्न किए जा रहे थे, उसी समय अछूतों और दलित लोगों में भी कुलबुलाहट शुरू हो गई थी। मालाबार प्रदेश के 'तिया' लोगों में इस समय एक अपूर्व सुधार-लहर चली। इससे पहिले वह कई जातियों में बँटे हुए थे, परन्तु अब सब एक होकर आपस में विवाह-सम्बन्ध करने लगे। सन् १८९० में श्रीनारायण उनका नेता बना और तिया लोगों में शिक्षा-प्रचार द्वारा धार्मिक भाव तथा आत्मोन्नति की आकांक्षा उत्पन्न करने लगा। ट्रावनकोर-सरकार में उनको नौकरियाँ मिलने लगीं

(शेष मैटर २०वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

सच्ची विजया

[राजकवि श्री० 'अम्बिकेश' रीवाँ]

विजय का स्वाँग है बना कर दिखाना व्यर्थ,
टूट जो न पाया अभी दासता का थाना है।
खाए हुए बीड़ा तुम क्रीड़ा करते हो व्यर्थ,
बीड़ा तुम्हें अभी देश-प्रेम का उठाना है।
सीना उठा कैसे झूँठी तोप को चला रहे हो,
सीने को तुम्हें तो अभी तोप से लगाना है।
बाना वीरता का है दिखाना जगती के मध्य,
विजयी बिना ही व्यर्थ विजया मनाना है।

❀

हरा जो स्वतन्त्रता की सीता है निशाचरों ने,
करके उपाय उसे शीघ्र यहाँ लाना है।
मारना मृगों को है कपट कूट-नीतियों के,
अमित, अनीति गढ़ लङ्क को जलाना है।
रखना मुकुट है विभीषन के देश-शीश,
सुखद स्वराज्य रामराज्य प्रकटाना है।
विजय पताके फहराना है वसुन्धरा में,
सार्थक तुम्हारा तब विजया मनाना है।

❀

माँ से—

[श्री० कृष्णस्वरूप जी शर्मा]

सदियों से तू पड़ी हुई है,
पहिन गुलामी की ज़ञ्जीर।
क्षीण हो गई प्रतिभा तेरी,
दुर्बल तेरा हुआ शरीर॥
लूट लिया तुमको दुष्टों ने,
किया तुझे मजबूर।
किन्तु भुला दे उन कष्टों को—
गया समय वह दूर॥

❀

सुन्दरी!

[श्री० भगवतीप्रसाद जी सकलानी, 'सुमन']

सजनि कहो तुम किस उपवन की,
सुन्दर सी पिक हो!
किस सरिता की लहर अनोखी;
औ' किस मादक की लय हो?
किस तरुवर की शीतलता हो,
औ' किस कवि की कविता सी?
या सुरबाला की मुसकान भली हो,
या प्रिय हो अश्रु-धारा सी?
कहो-कहो कल्पना सी सुन्दर हो,
या भावुकता सी आकर्षक!
या तुम बालक सी सरला हो,
या मदिरा सी मतवाली?
मातृ-स्नेह सी स्नेहमयी हो,
कुसुम सदृश हो कोमल!
माता के आँचल का प्रेम तुम्हीं हो,
या गङ्गा-जल सी हो निर्मल!

❀

स्वतन्त्रते

[श्री० चतुर्भुजसहाय जी माहेश्वरी]

ऐ स्वतन्त्रते जहाँ-जहाँ तू,
दया-दृष्टि दिखलाती है!
शान्ति, सुमति, सम्पदा स्वयं,
आ विजय-माल पहिनाती है!!
जब तक तेरा वास यहाँ था,
सुख अनन्त हम पाते थे!
हम पर थी जब कृपा-कोर,
तब जग-विजयी कहलाते थे!!
रुष्ट हुई हो सदियों से माँ!
दाने को मोहताज हुए!
खोकर सारी सम्पति सब विधि,
दीन-हीन हम आज हुए!!
अत्याचारी! हुआ कुशासन,
पराधीन हम हुए सभी!
होता है अपमान निरन्तर,
हाय! न जिसको सहा कभी!!
मिटी मान-मर्यादा सारी,
भारत दीन गुलाम हुआ!
बढ़ा परस्पर वैर और,
बर्बाद सभी धन-धाम हुआ!!

× × ×

सौख्यदायिनी! ऐ स्वतन्त्रते!
आकर धैर्य बँधाओ माँ!
दलित देश अति दीन-दुखी है,
इसको अब अपनाओ माँ!!

❀

ठहर

[श्री० ललितकुमार सिंह 'नटवर']

परिवर्तन-प्रिय-प्रकृति-पियारी,
दैवयोग-दावाग्नि-दुलारी,
कारण-कान्ति, शान्ति शुभकारी;
चञ्चल-चित्त-चारु चिनगारी!
बार-बार क्यों धधक रही है?
व्यर्थ अभी क्यों भभक रही है?
कुसमय में क्यों बमक रही है?
रह-रह कर क्यों दमक रही है?
पूँजी उतनी करले पूरी—
शक्ति न तेरी रहे अधूरी,
कभी न हो समुचित मज़दूरी,
कहीं न पीछे मजबूरी।
अतः अभी सब कुछ सहती रह,
सीमा में सिमटी बहती रह,
दबे रूप में ही दहती रह,
मन की मन ही में कहती रह।
जप अवसर की माला,
ओ अन्तर की ज्वाला!

❀

सन्तोष

[श्री० त्रिभुवनशङ्कर जी तिवारी, इन्दौर]

कम्पित हो उठता है मेरा छोटा सा संसार,
इन कोमल तारों से पगले! मत खींचो उस पार।
गीली पुतली में चित्रित कर तीरों का व्यापार,
करुणा की पलकों में मत बाँधो मेरा आकार।
रहने दो न बुझाओ मेरी विकल पुरानी प्यास,
व्याकुल प्राणों में रहने दो छिपी हुई अभिलाष।
जीवन-तट के इसी किनारे बैठ मुझे एकान्त,
तेरे स्वागत में निशिदिन गाने दो होकर शान्त।
इसी तरह गाने दो तुम मत आना मेरे पास,
अरे! विरह में मधुर मिलन का है सच्चा उल्लास।
सदा रहा करता है चातक की आशा में सार,
स्वाति-बूँद के गिरते ही वह हो जाता निस्सार।
बरस चुके काले बादल कहाँ रहा सम्मान,
नहीं मोर फिर मन से उनका करते हैं आह्वान।
नाटक पर ज्यों खुला हुआ कौतूहल का अवसान,
तेरे मिलते उसी तरह आशा भी होगी अन्तर्धान।
विरही बन कर हो जाने दे मस्त और दीवाना,
अपने रँग में रँग लेने दे दुनिया को मनमाना।

❀

माली से—

[श्री० माताप्रसाद जी त्रिपाठी 'महेश', साहित्याचार्य]

न तोड़ो अभी मुझे माली!
हुई न विकसित,
अल्हड़ हूँ अति—
छाई ज़रा नहीं लाली!
न तोड़ो अभी मुझे माली!!
भय है अलि का—
मलयानिल का!
कलिका हूँ भोली-भाली!
न तोड़ो अभी मुझे माली!!

❀

सखियों से मिल!
मन्द-मन्द हिल—
निरखूँ जग की हरियाली!
न तोड़ो अभी मुझे माली!!

❀

शिशु-जीवन में!
रह उपवन में—
भूलूँ सुख से तरु-डाली!
न तोड़ो अभी मुझे माली!!

❀

शैशव खोकर!
तरुणी होकर—
पिऊँ प्रेम से मद-प्याली!
न तोड़ो अभी मुझे माली!!

❀

मधु-रस जीभर,
प्रिय सँग पीकर—
विहरूँ बन में मतवाली!
न तोड़ो अभी मुझे माली!!

कलकत्ते की दलित-सुधार सोसाइटी

[मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

संसार में कोई भी सभ्य राष्ट्र ऐसा नहीं है, जो अपने अल्पसंख्यक अनुन्नत भाइयों को दलित या अपने से हीन न समझता हो। अमेरिका के श्वेताङ्ग अधिवासी आज भी वहाँ के आदिम-निवासियों—हबशियों को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, और सामान्य कारण-वश उनके ऊपर ऐसे राक्षसी अत्याचार करते हैं, जिसे देख-सुन कर निर्दयता भी काँप उठेगी। वर्जीनिया और केनिया के आदिम-निवासियों की भी वही दशा है। वहाँ भी अल्प-संख्यक तथा अनुन्नत समाज के व्यक्तियों पर नाना प्रकार के दिल दहलाने वाले अत्याचार होते हैं। भारत में भी काले और गोरे ईसाइयों के गिर्जे अलग-अलग हैं। मुसलमानों में भी शेख़ और सय्यद का भेद-भाव मौजूद है। सय्यदवंशीय अपने को सब मुसलमानों से प्रतिष्ठित और पूज्य समझते हैं।

परन्तु यह सब होते हुए भी अछूतपन की कलङ्क कालिमा का जैसा गहरा दाग़ हिन्दुओं के ललाट पर लगा है, वैसा और किसी जाति के ललाट पर नहीं है। हमारे विधर्मी भाई हमारी इस कमज़ोरी से केवल लाभ ही नहीं उठाते, बल्कि अछूतों को हमसे अलग करके अपना उल्लू सीधा कर लेने की चेष्टा में हैं। साम्राज्य-वादी गोरे और भारत में मुस्लिम राज्य का स्वप्न देखने वाले हमारे कुछ मुसलमान भाई भी आज भारत के अछूतों की चिन्ता में दुबले हो रहे हैं। उन्हें 'आदि हिन्दू' की आख्या प्रदान कर, हमसे अलग कर देने की प्रबल चेष्टाएँ हो रही हैं। इसके लिए प्रचुर रुपए भी ख़र्च किए जा रहे हैं। वास्तव में इस धराधाम से हिन्दू जाति का अस्तित्व मिटा डालने के लिए ये तदबीरें हो रही हैं। मोहग्रस्त, रूढ़िवादिनी हिन्दू-जाति इन बातों को समझती है, देखती है, परन्तु अपनी दुर्बलता के कारण अछूतों को अपनाने की चेष्टा नहीं करती।

अभी हाल में ही बम्बई प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमिटी ने हिन्दुओं का ध्यान इधर आकर्षित किया है और प्रार्थना की है कि उच्च जाति के हिन्दू अपने निम्न श्रेणी के भाइयों को नौकर रक्खें और छुआछूत के भेद-भाव को मिटाने के लिए उन्हें अपने संसर्ग में रक्खें। उच्च जातियों के संसर्ग में आने से अछूत भी सफ़ाई और सभ्यता से रहना सीख सकेंगे और धीरे-धीरे अछूतपन का भेद-भाव भी तिरोहित हो जाएगा। निस्सन्देह यह युक्ति अच्छी है और हमें आशा है कि उच्च श्रेणी के हिन्दू बम्बई प्रान्त की कॉङ्ग्रेस कमिटी की इस समयोचित प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे।

साथ ही हम 'भविष्य' के पाठकों का ध्यान कलकत्ते की दलित-सुधार सोसाइटी की ओर भी आकर्षित करना चाहते हैं, क्योंकि सोसाइटी ने इस सम्बन्ध में सुन्दर और अनुकरणीय आदर्श हिन्दू-जनता के सामने
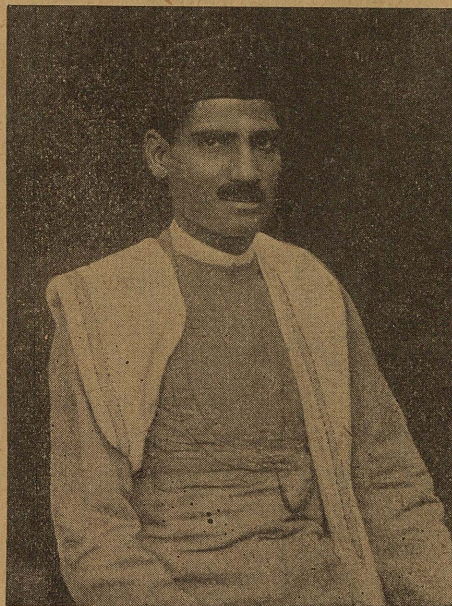
श्री० भोलानाथ जी बर्मन

रक्खा है। हम समझते हैं कि अगर सोसाइटी के आदर्शानुसार कार्य हो तो बड़ी जल्दी यह घोर कलङ्क हमारे सिर से मिट सकता है।

कलकत्ता बड़ा बाज़ार के मशहूर दानी श्री० घनश्यामदास जी बिड़ला, श्री० प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंहका, श्री० दुर्गाप्रसाद जी खेतान, श्री० पद्मराम जी जैन तथा श्री० बसन्तलाल जी मुरारका के दान, उद्योग और प्रयत्न से गत सन् १९२६ के जून मास में सोसाइटी की स्थापना हुई थी। सबसे पहले सोसाइटी ने अछूतों में शिक्षा-प्रचार का काम आरम्भ किया। कलकत्ता के आस-पास की अछूत बस्तियों में कई रात्रि और दिवस-पाठशालाएँ खोली गईं। जिनकी संख्या इस समय १९ है और उनमें प्रायः ७०० अछूत (मेहतर, चमार, डोम और दुसाध आदि) बालक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विद्या-शिक्षा के साथ ही उन्हें सफ़ाई और स्वास्थ्य की भी यथासम्भव शिक्षा दी जाती है। इसके सिवा सोसाइटी ने शिल्पकला और उद्योग-धन्धों के प्रचार-कार्य की ओर भी ध्यान दिया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कलकत्ता के १४० सरकार लेन में सोसाइटी की ओर से एक शिल्प-विद्यालय की भी स्थापना की गई है, जहाँ शिक्षार्थियों को सिलाई, मोज़े बुनना, टीन के खिलौने बनाना, छापेख़ाने का काम और बढ़ई का काम सिखाया जाता है। इस विद्यालय से अब तक २५० विद्यार्थी सिलाई का काम सीख कर निकले हैं, जो देश के विभिन्न स्थानों में दूकानें खोल कर स्वतन्त्र-रूप से जीविकार्जन कर रहे हैं।

सोसाइटी का प्रचार-विभाग सुयोग्य उपदेशकों द्वारा जन-समाज में सोसाइटी के उद्देश्यों का प्रचार करता है। मौखिक उपदेशों, व्याख्यानों और छाया-चित्रों के प्रदर्शन द्वारा अछूतों को मद्यपान तथा गोमांस भक्षण आदि निन्दनीय कृत्यों से बचने और मायावी विधर्मियों के मायाजाल में न फँसने का उपदेश दिया जाता है। इस सम्बन्ध में सोसाइटी ने आशातीत सफलता भी प्राप्त की है। स्थायी प्रचार के लिए प्रत्येक बस्ती में पञ्चायतें क़ायम की गई हैं, जो बड़ी मुस्तैदी से अछूतों को जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करती हैं।

शिल्पकला के प्रचार तथा गृहशिल्प की उन्नति के लिए सोसाइटी ने 'उद्योग-धन्धा' नाम के एक मासिक पत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ कर दिया है। इस सुन्दर और अत्यावश्यक मासिक पत्र में कृषि, शिल्प और वाणिज्य सम्बन्धी लेखादि छपा करते हैं। यदि सोसाइटी ने इस प्रयत्न में सफलता प्राप्त की तो वह केवल अछूतों का ही नहीं, वरन् समस्त हिन्दू जाति का महान उपकार कर सकेगी।

इस सोसाइटी ने जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह है सहयोग समिति द्वारा आर्थिक सहायता-कार्य। इस समिति द्वारा अछूतों को बिना व्याज के ही रुपए उधार दिए जाते हैं, जिससे सूदख़ोर काबुली मुसलमानों से उनकी रक्षा होती है और उनके नाना प्रकार के अत्याचारों से परित्राण पाते हैं। इसके साथ ही सोसाइटी के सुयोग्य कार्यकर्त्ता अछूतों को लागत मूल्य में खाद्य-पदार्थ और कपड़े देने की व्यवस्था के सम्बन्ध में भी विचार कर रहे हैं।

इस सोसाइटी के वर्तमान कार्यकर्त्ता और 'उद्योग-धन्धा' नामक मासिक पत्र के सञ्चालक श्री० भोलानाथ जी बर्मन एक सच्ची लगन वाले राष्ट्रीय सैनिक हैं। इस वीर सिपाही ने देश-सेवा की धुन में अपना लाखों रुपए का कारबार चौपट कर दिया है और देश-सेवा के पुरस्कार-स्वरूप एकाधिक बार जेल-यातना भी भोग चुके हैं। आप शिल्पकला के प्रेमी ही नहीं, स्वयं कई प्रकार की कलाओं के जानकार भी हैं। आपका जीवन त्यागमय है और आजकल तन-मन से दलितों के उद्धार-कार्य में लगे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि कलकत्ते के उत्साही और जाति-प्रेमी धनवानों की सहायता से आप इस सोसाइटी को तथा शिल्प-विद्यालय को एक आदर्श संस्था के रूप में परिणत कर डालेंगे।

अब देशवासियों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि जब तक अछूत जाति में विवेक, सम्मान और धर्म के भावों का उदय न होगा, तब तक हिन्दू जाति भी पददलित और निर्बल बनी रहेगी। जब तक हम अपने त्याग और सेवा-भाव द्वारा अछूतों को न अपनाएँगे, तब तक स्वतन्त्रता या स्वराज्य हमारे लिए आकाश कुसुमवत् ही रहेगा। अपने सात करोड़ भाइयों को पददलित और पराधीन रख कर हम कदापि स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त कर सकेंगे। क्योंकि वे हमारी जाति के प्रधान अङ्ग हैं, हमारे बाहुबल हैं।

* * *

१९वीं शताब्दी की धार्मिक जागृति

(१८वें पृष्ठ का शेषांश)

और सङ्गठित होकर तिया लोग उन्नति की ओर बढ़ने लगे। इसी प्रकार मैसोर और मद्रास प्रान्त में भी कई अछूत जातियों के सङ्गठन हुए।

यह देश-व्यापी धार्मिक जागृति राष्ट्रीय जागृति का प्रथम-चरण था। यूरोप में भी प्रथम धार्मिक जागृति ही हुई थी। तदनन्तर लोग राजसत्ता का विरोध करने लगे थे और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने लगे थे। वास्तव में मानसिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुए बिना अन्य किसी प्रकार की भी स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। पुरोहित और पण्डों से पिण्ड छुट जाने के बाद जब मानव-मस्तिष्क स्वतन्त्र हो जाता है और सामाजिक कुरीतियों के निवारण से जन-समाज उन्नत और स्वतन्त्र बन जाता है तब राजनैतिक स्वतन्त्रता की चिन्ता होने लगती है। यूरोप और एशिया का इतिहास इसका साक्षी है।

* * *

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

बाईं ओर से—(१) पञ्जाब नौजवान सभा की प्रधाना—श्रीमती शकुन्तला देवी तथा (२) शिमला ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान की धर्मपत्नी—श्रीमती लक्ष्मी देवी ; जिनसे हाल ही में भारतीय दण्ड-विधान को १०८ वीं धारा के अनुसार ज़मानत तलब की गई थी और ज़मानत देने से इन्कार करने पर इन दोनों देवियों को १-१ वर्ष का कारावास दण्ड दिया गया था। इन दोनों देवियों की ओर से हाईकोर्ट में अपील की गई है।

अभी हाल ही में महात्मा गाँधी कपड़े की मिलों के निरीक्षणार्थ डारवेन (ब्लैकबर्न के समीप) तथा लङ्काशायर आदि स्थानों में गए थे। आपका यह चित्र उसी समय लिया गया था। इस चित्र में पाठक बाईं ओर से—(१) श्री० सी० एफ़० एण्ड्र्यूज़, (२) महात्मा गाँधी, (३) महात्मा गाँधी की एक भक्त-रमणी तथा (४) कुमारी मीराबाई (मिस स्लेड) को देखेंगे। आपके पीछे श्री० महादेव देसाई आदि कई सज्जन खड़े हैं। दाहिनी ओर पाठक उन महिलाओं को भी चित्र में खड़ी देखेंगे, लङ्काशायर में महात्मा गाँधी जिनके मेहमान थे।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

इङ्गलैण्ड में बेकारी की समस्या दिनों-दिन गम्भीर होती जा रही है। बेकारों के जुलूसों से पुलिस का मुठभेड़ हो जाना एक साधारण बात हो गई है। इस चित्र में पाठक देखेंगे, लन्दन की कुछ 'उपद्रवी' महिलाओं को पुलिस गिरफ़्तार किए ले जा रही है, जो बार-बार रोकने पर भी पुलिस की आज्ञाओं की अवज्ञा कर रही थीं।

कलकत्ता दलितोद्धार सोसाइटी के प्रमुख कार्य-कर्त्ता, शिक्षक-गण और दलित भाई-बहिनों का एक ग्रुप। इस संस्था द्वारा सैकड़ों दलितों को जीवनोपयोगी शिक्षा प्राप्त हो रही है। संस्था का पूरा विवरण अन्यत्र प्रकाशित लेख में देखिए।

मैनचेस्टर (इङ्गलैण्ड) के बेकारों का एक भारी जुलूस, जो पेट की ज्वाला से पीड़ित होकर सड़कों पर नाना प्रकार के प्रदर्शन कर रहा था। पाठक इस चित्र में देखेंगे, पुलिस और सवार जुलूस को भङ्ग करने का प्रयत्न कर रहे हैं। जब इनके सारे उपाय निष्फल हुए तो अन्त में आग बुझाने वाली मोटरों को लाकर इनके पाइप द्वारा इन पर जल-वर्षा की गई तब कहीं जुलूस भङ्ग हो सका।

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ
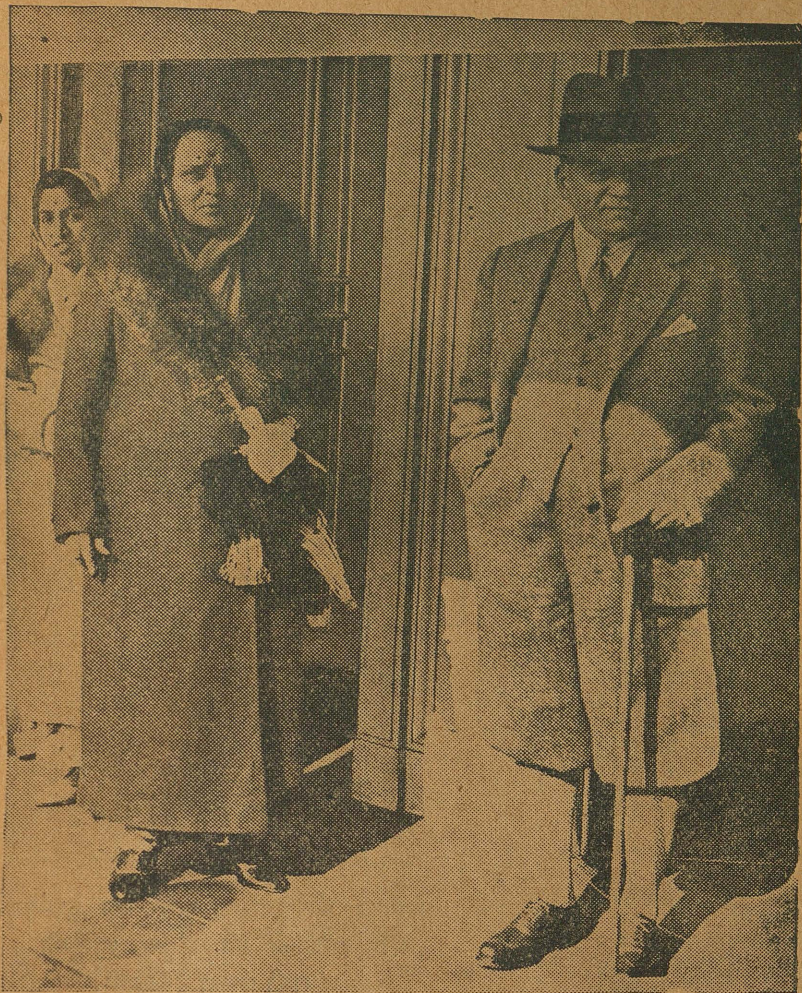
अपने होटल से निकल कर गोलमेज़ परिषद् में जाने के लिए तैयार खड़े श्रीमती महारानी साहबा सहित, बड़ोदा के महाराजा साहब बहादुर।

श्री० सी० एल० सिंह तथा श्रीमती नेरिसा पी० सिंह, जो दक्षिण अमेरिका और भारत में व्यापार-सम्बन्ध स्थापित करने के सम्बन्ध में आजकल विशेष रूप से प्रचार-कार्य कर रहे हैं।

कलकत्ता के हिन्दू-शिल्प-विद्यालय के कार्यकर्त्ताओं, शिक्षकों और शिक्षार्थियों का एक ग्रूप। बीच में प्रमुख कार्यकर्त्ता और स्थानापन्न मन्त्री श्री० भोलानाथ जी वर्मन विराजमान हैं। यह संस्था आपके ही अटूट लगन का फल है।

मैनचेस्टर (इङ्गलैण्ड) के 'हेज़ फ़ार्म' नामक अतिथि-गृह में एक यूरोपियन परिवार सहित महात्मा गाँधी—जहाँ वे हाल ही में निरीक्षणार्थ गए थे।

कानपुर की सुप्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्री और कॉङ्ग्रेस की संयुक्त मन्त्रिणी—श्रीमती सरला देवी शर्मा
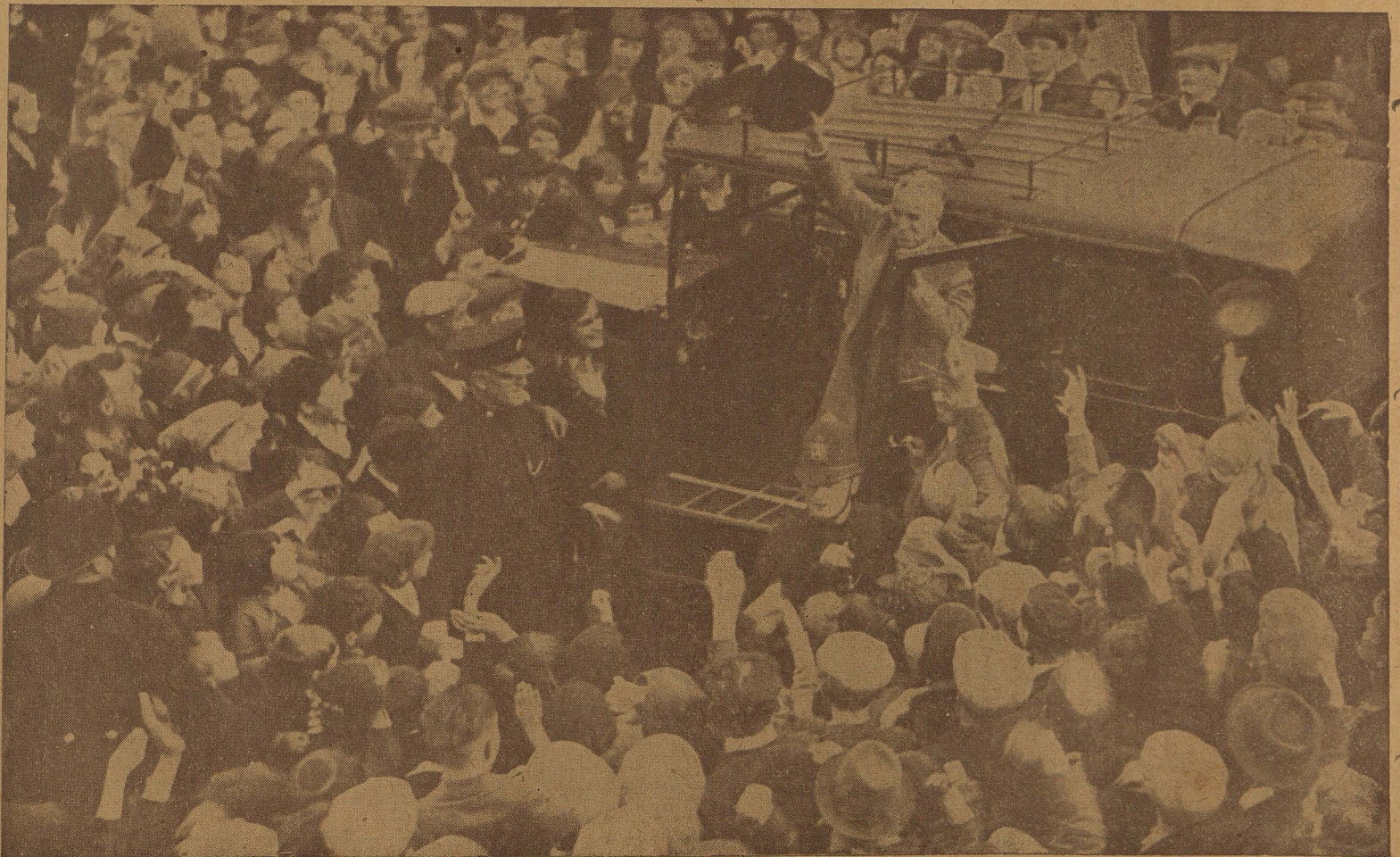
संसार के सुप्रसिद्ध सिनेमा-विदूषक चार्ली चेपलिन के अभूतपूर्व स्वागत का दृश्य; जब कि हाल ही में महात्मा गाँधी से मिलने के लिए वे डॉक्टर कटियाल के निवास-स्थान पर पधारे थे।
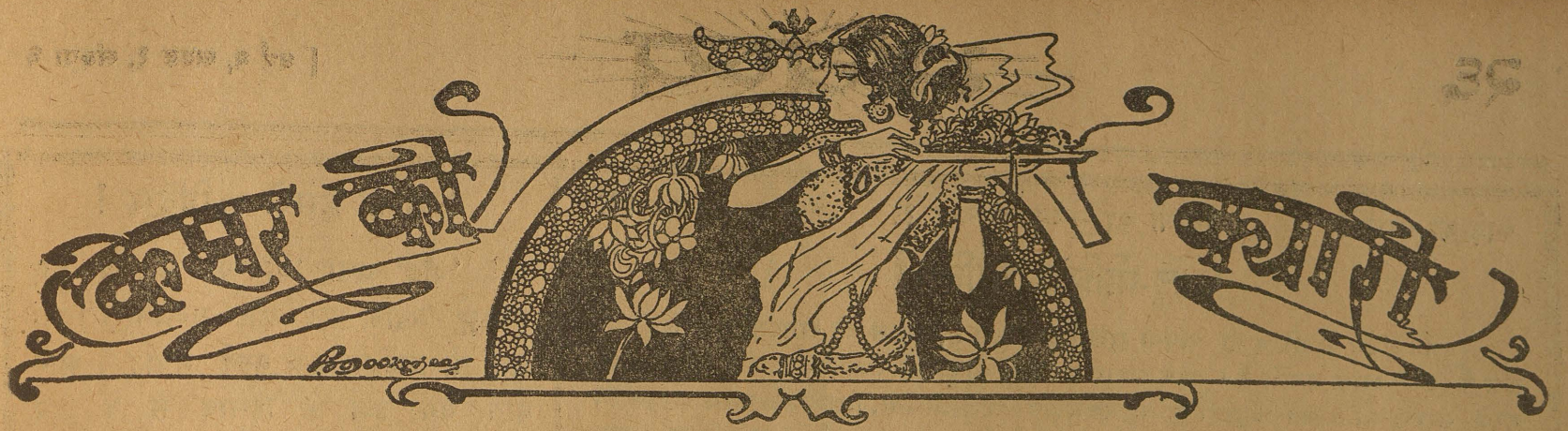
हर दिल में नए दर्द से है याद किसी की, मिलती नहीं फ़रियाद से फ़रियाद किसी की।
क़ातिल की भी आँखों से कुछ आँसू निकल आए, गर्दन हुई जिस दम तहे-शमशीर किसी की॥

क्या ज़ौक़ है उनको जो मिले दाद[१] किसी की,
कुछ खाए तो जाती नहीं फ़रियाद किसी की!
हर दिल में नए दर्द से है याद किसी की,
मिलती नहीं, फ़रियाद से फ़रियाद किसी की।
मुन्सिफ़ हो अगर, दोहीगे तुम दाद किसी की,
सुननी ही पड़ेगी तुम्हें फ़रियाद किसी की।
जब क़तआ[२] तआल्लुक़ है तो फिर पास[३] कहाँ का,
रखता लगी-लिपटी नहीं आज़ाद किसी की।
उस हुस्ने जहाँ सोज़[४] से बरपा है क़यामत,
ऐसे में करे क्या कोई इम्दाद किसी की?
बढ़ती है मुहब्बत की असीरी[५] में असीरी,
पूरी नहीं होती कभी मीयाद किसी की।
पड़ती ही नहीं कल किसी करवट, किसी पहलू,
आए तुझे आई दिले-नाशाद[६] किसी की।
निकली तो सही जान अगर सहल न निकली,
अटकी नहीं रहती मेरे जल्लाद किसी की!
जब देखती है नालए[७] बुलबुल में असर कुछ,
उसको भी उचक लेती है फ़रियाद किसी की।
अल्लाह करे ज़िन्दा रहें देखने वाले,
उफ़-उफ़ वह हसीं-शक्ल ख़ुदा-दाद[८] किसी की।
घबरा के अगर मौत भी माँगूँ तो कहें वह,
जागीर नहीं है अदम-आबाद[९] किसी की।
क्या ऐश[१०] भुला देगा यह आज़ार[११], यह तकलीफ़,
जन्नत में भी याद आएगी बेदाद[१२] किसी की।
है उल्फ़ते-दुश्मन में बुरा हाल किसी का,
ऐ हज़रते दिल कीजिए इम्दाद किसी की!
ईमान तो जब लाएँ हम ऐ शाने करीमी[१३],
मिट जाय अगर लज़्ज़ते बेदाद[१४] किसी की।
कमबख़्त[१५] वही "दाग़" न हो देखो तो चल कर,
बेचैन किए देती है फ़रियाद किसी की।

—(महाकवि) "दाग़" देहलवी

मशहूरे जहाँ क्यों न हो बेदाद किसी की,
फिरती है उड़ाए हुए फ़रियाद किसी की।
सुनते नहीं तुम किस लिए फ़रियाद किसी की,
पुरदर्द है, पुरलुत्फ़ है रूदाद[१६] किसी की।

१—वाहवाही, २—अलग हो जाना, ३—ध्यान, ४—संसार को जलाने वाला, ५—बन्दी-जीवन, ६—दुखी हृदय, ७—कराहना, ८—ईश्वरी देन; ९—स्वर्ग, १०—आनन्द, ११—दुख, १२—ज़ुल्म, १३—ईश्वरी महिमा, १४—ज़ुल्म का मज़ा, १५—बुरी क़िस्मत वाला, १६—कहानी,

अन्दाज़े तग़ाफ़ुल[१७] से कहाँ इतनी है फ़ुरसत,
तुम बैठते-उठते, जो करो याद किसी की।
तू भी तो हो वाक़िफ़ कि सितम सहते हैं क्योंकर,
उल्फ़त हो तुझे भी सितम ईजाद[१८] किसी की।
इस नाज़ो-नज़ाकत पे यह दावा ही अबस[१९] है,
तुमसे न सुनी जायगी फ़रियाद किसी की।
वह अन्जुमने[२०] नाज़ में तस्वीर बने हैं,
शायद उन्हें फिर आ गई है याद किसी की।
महशर[२१] में भी अल्लाह से फ़रियाद करेंगे,
हम भूलने वाले नहीं बेदाद किसी की।
सब कहते हैं तू हाथ मुहब्बत से उठा ले,
सुनता नहीं क्यों ऐ दिले-नाशाद किसी की!
ऐ भूलने वाले यह तग़ाफ़ुल नहीं अच्छा।
तू आठवें दसवें तो करे याद किसी की!
क्या इससे यह मतलब है कि गुलशन[२२] को भुला दे,
ख़ातिर जो किया करता है सय्याद किसी की।
मग़रूर न क्यों ख़ूबिए क़िस्मत पे कोई हो,
वह भूलने वाला जो करे याद किसी की।
वह नाज़ से चलते हैं लरज़ता है मेरा दिल,
मिट्टी कहीं हो जाय न बरबाद किसी की।
सय्याद यह कहता है असीराने चमन से,
कम हो नहीं सकती कभी मीयाद किसी की!
कल रात तड़पते रहे तुम बिस्तरे-ग़म पर,
"बिस्मिल" तुम्हें क्या आ गई थी याद किसी की?

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

है कौन बला ज़ुल्फ़े गिरहगीर[२३] किसी की,
सौ पेच दिखा सकती है तक़दीर किसी की।
हर रोज़ तरक़्क़ी पे जो है हुस्न की सूरत,
एक-एक से मिलती नहीं तस्वीर किसी की।
क्या हो जो ज़रा हाथ जनाज़े को लगा दो,
इतने में हुई जाती है तौक़ीर[२४] किसी की?
अब फ़र्ज़ मेरे घर में है बस दिन की नमाज़ें,
शब[२५] होने नहीं देती है तनवीर[२६] किसी की।
अक्सीर है गोया तपे[२७] दीवानगीए इश्क़,
सोने की हुई जाती है ज़ञ्जीर किसी की।
पहुँची है तेरे हुस्न की शुहरत के बराबर,
क्या नामवरी पा गई तशहीर[२८] किसी की।

१७—बेपरवाही, १८—ज़ालिम, १९—बेकार, २०—सभा, २१—प्रलय, २२—बाग़, २३—उलझे हुए केश, २४—आदर, २५—रात, २६—ज्योति, २७—गरमी, २८—बदनामी,

पहुँचा है जुनूँ तक असरे जोशे गुल[२९] ऐसा,
बुलबुल-सी चहकने लगी ज़ञ्जीर किसी की।
कुछ देर है "शौक़" उसको न बनते न बिगड़ते,
लड़कों का घिरौंदा हुई तक़दीर किसी की।

—"शौक़" क़िदवाई

कुछ भी न चली इश्क़ में तदबीर किसी की,
तदबीर पे हँसती रही तक़दीर किसी की।
जादू यह अजब कर गई तक़रीर[३०] किसी की,
सुनता नहीं अब आशिक़े दिलगीर किसी की।
कहती है न अपनी, न यह सुनती है हमारी,
यूँ हमसे खिंची रहती है तस्वीर किसी की।
मिल-मिल के शबे वस्ल[३१] जुदा होता है कोई,
बन-बन के बिगड़ जाती है तक़दीर किसी की।
नज़रों को तो जलवा नज़र आता नहीं लेकिन,
आँखों में फिरा करती है तस्वीर किसी की।
दिल में है मेरे काकुले पेचाँ[३२] का तसव्वर[३३],
पड़ने को है अब पाँव में ज़ञ्जीर किसी की।
बहलाते हैं हम यूँ दिले-बेताब को अपने,
हाथों में लिए बैठे हैं तस्वीर किसी की।
दुनिया से निराला है यह इन्साफ़े-मुहब्बत,
मिलती है सज़ा मुझको हो तक़सीर[३४] किसी की।
होता है जो बेताब दिले-ज़ार हमारा,
सीने से लगा लेते हैं तस्वीर किसी की।
कोशिश तो बहुत की गई मिलने की किसी से,
तदबीर पे ग़ालिब रही तक़दीर किसी की।
करती ही नहीं बात कभी फ़र्ते[३५] हया से,
अल्लाह रे! अल्लाह रे!! तस्वीर किसी की।
क़ातिल की भी आँखों से कुछ आँसू निकल आए,
गर्दन हुई जिस दम तहे-शमशीर[३६] किसी की।
सीने पे मेरे लोट गया साँप शबे-हिज्र,[३७]
याद आ गई जब ज़ुल्फ़े गिरहगीर किसी की।
दुनिया में कोई शाद, हो नाशाद हो कोई;
क़िस्मत यह किसी की है, यह तक़दीर किसी की।
"बिस्मिल" है यही सिर्फ़ मेरे दिल की तमन्ना[३८],
चलती रहे, फिरती रहे, शमशीर किसी की!

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२९—फूल, ३०—बातचीत, ३१—मिलन की रात, ३२—घूँघर वाले केश, ३३—ध्यान, ३४—दोष, ३५—लज्जा, ३६—तलवार के नीचे, ३७—विरह की रात, ३८—इच्छा।

❀ ❀ ❀

जाड़े की बहार ! जवानी का सच्चा आनन्द !! शक्ति का सञ्चार !!!

धातु-पौष्टिक गोलियाँ

तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखा देती हैं, पेशाब की समस्त बीमारियों को हटा के दस्त साफ़ करती हैं। सब प्रकार का दर्द; पीड़ा को रोकती हैं, शरीर को बलवान करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाती हैं, यह स्वप्नदोष, धातु-क्षीणता, पेशाब के साथ धातुपात, अधिक विलासिता के कारण उत्पन्न हुई कमज़ोरी के कारण हाथ-पैरों का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना, ये सभी बीमारियाँ दूर होती हैं। दाम २॥) रु० डिब्बा, डा० म० ।) अवश्य लीजिए। इन गोलियों को हर मौसम में खा सकते हैं। और आयुर्वेदिक औषधियाँ भी सब प्रकार की सदा तैयार मिलती हैं। सूचीपत्र मुफ़्त !

विजय ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़

'ब्लॉक' हमसे ख़रीदिए !

'चाँद' तथा 'भविष्य' में छपे हुए इकरङ्गे ब्लॉक यदि कोई सज्जन ख़रीदना चाहें तो उन्हें वे आधे मूल्य अर्थात् ३ आने प्रति वर्ग इञ्च के हिसाब से दे दिए जावेंगे; किसी भी छोटे ब्लॉक का मूल्य २) से कम न होगा। डाक-ख़र्च ख़रीदार को देना होगा।

'भविष्य' चन्द्रलोक—इलाहाबाद

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

जो कवच २) में मिलता था, आज वह सिर्फ़ १५ दिन के वास्ते मुफ़्त भेजा जाता है। यह कवच संसार भर के जादू, तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष-चमत्कारों से परिपूर्ण है, इसके धारण करने से हर तरह के काम सिद्ध होते हैं। जैसे रोज़गार में लाभ, मुक़दमे में जीत, सन्तान-लाभ, हर तरह के सङ्कटों से छुटकारा, इम्तिहान में पास होना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे बस कर लेना, हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, देश-देशान्तरों का हाल क्षण भर में जान लेना, भूत-प्रेतों को वश में कर लेना, स्वप्न-दोष का न होना, मरे हुओं से बातचीत करना, राज-सम्मान होना, कहाँ तक गिनाएँ, बस जिस काम में हाथ डालिएगा, फ़तह ही फ़तह है। १५ दिन तक फ़्री, बाद १५ दिन के १ कवच का मूल्य २), तीन का ५॥), डाक-महसूल ॥=); ध्यान रहे, मरे हुओं की १ पुश्त तक का हाल बतावेगा, दूसरे के ज़िम्मेदार हम नहीं। अगर कोई झूठा साबित करे तो १५) इनाम। सन्तान चाहने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही कवच मँगावें।

पता—एस० कुटी, हाटखोला (कलकत्ता)

मेरी लकड़ी छूट गई

नवाब मीर महमूद अली खाँ उमर ७० साल हैदराबाद दक्षिण फरमाते हैं कि मैं बेहद कमजोर हो गया था, लकड़ी के सहारे चलता था बहुत सी इश्तिहारी दवायें इस्तेमाल किया कोई फायदा नहीं, आखिर मैंने (मनोहर पिल्स चन्द्रप्रभा) एक शीशी इस्तेमाल किया कि जिसने मुझे पूरा ताकतवर बना दिया और मेरा लकड़ी पकड़ना छूट गया, कीमत ५) छोटी शीशी २॥)

महासिव साहब खुफ़िया पुलिस

मुहम्मद करीमुल्ला हैदराबाद दक्षिण व मीर कुरसिह अली इन्स्पेक्टर सी०आई०डी० परभनी तहरीर फरमाते हैं कि हम बवासीर से बेहद परेशान थे, लेकिन वै० भू० पं० मनोहरलाल की दवा (अर्श कुठार) ने २४ घन्टे में मेरी तकलीफ दूर कर दी और मुझे कामिल सेहत है कीमत ५) छोटी शीशी २॥)

आयुर्वैदिक मेडिकल हाल चौक मैदान ख़ाँ
हैदराबाद दक्षिण

बीसों प्रकार के प्रमेहों पर विजय प्राप्त कराने वाला

(रजिस्टर्ड) धातु पौष्टिक चूर्ण

यह चूर्ण जङ्गल की जड़ी-बूटियों एवं अष्टवर्गादि द्वारा धातु रहित शुद्ध बनाया गया है। सब के खाने योग्य है। केवल २१ दिन के सेवन से पानी के समान पतले वीर्य को घन तुल्य गाढ़ा बना कर समस्त प्रकार के प्रमेहों को जड़ से खोकर वीर्य-विकारों को दूर कर नपुंसकता, नामर्दी को नष्ट कर पुरुषत्व एवं सौन्दर्यता को देने वाला है। मूल्य फ़ी डिब्बा २) मय डाक-ख़र्च, वी० पी० द्वारा। पेशगी १।।) भेजने से डाक-ख़र्च माफ़। नोट—स्वास्थ्योपयोगी मासिक पत्र 'रत्नाकर' का नमूना १ कार्ड डाल कर मुफ़्त मँगाइए।

पता—'रत्नाकर' भवन, इटावा—यू० पी०

३० साल पुरानी कलकत्ते की विश्वसनीय आढ़त

हमारे ज़रिए से कलकत्ते का कोई भी माल थोक या खुदरा १) से १ लाख रुपया तक का अपने शौक़ या घर के लिए अथवा व्यापार के लिए मँगाइए। अन्दाज़ चौथाई रक़म पेशगी आने से २४ घण्टे के अन्दर बाज़ार भाव माल भेजेंगे। चिट्ठी-पत्री से भाव वग़ैरह पूछ सकते हैं। खुदरा माल पर आढ़त -) फ़ी रुपया और थोक माल पर १) सैकड़ा लेंगे। याद रखिए ठगाए जाने की सम्भावना नहीं, पक्की गारण्टी से काम होता है।

भोलानाथ ब्रादर्स, २६ बलराम स्ट्रीट, कलकत्ता

दो दर्जन दाद की दवा और सब सामान ३॥)

"दाद की अक्सीर दवा"—कैसा ही पुराना दाद क्यों न हो, सिर्फ़ १२ घण्टे में जड़ से आराम हो जाता है। अगर आराम न हो तो पूरा दाम वापस, २४ डिब्बी का दाम ३॥) रु० साथ ही बेश क़ीमती सामान मुफ़्त, जो कि आज तक कहीं पाया न होगा और न सुना होगा, दो अदद सुन्दर "डमी रिस्टवाच", एक रेलवे टाइम 'डमी पाकिट वाच' एक मशहूर बरमा टाइमपीस गारण्टी १० साल, एक रूमाल, चश्मा, पिस्तौल, सेन्ट, फाउन्टेन पेन, शेरबीन, (बायसकोप), पाकिट चरखा, महात्मा गाँधी का फ़ोटो, एक जोड़ा बढ़िया जूता—आर्डर में पैर का नाप ज़रूर लिखें। पे० पो० अलग।

पताः—शरमा ब्रदर्स एण्ड को०
पो० ब० ६७१५, सेक्सन ७१, कलकत्ता।

भृगुसंहिता का

चमत्कारी, अपूर्व, बृहत् खण्ड हिन्दी में छप गया, अवश्य मँगा पूरा धन व यश कमावें मूल्य प्रचारार्थ २)

बिजली का

फ़्रान्स का नया आविष्कार, पति-पत्नी में दाम्पत्य सुख का स्वर्गीय आनन्द, सच्चा प्रेम व हर्ष उत्पन्न करता है, मुर्दा दिलों और शिथिल नाड़ियों में भी आनन्द और उमङ्ग की लहरें तथा नौजवानी की शक्ति पैदा करने में लासानी है, एक बार का ख़रीदा आयु भर काम देगा, मूल्य प्रचारार्थ ६)

सी० यस० एन्ड ब्रादर्स, महराजगञ्ज,
ज़िला सारन

आवश्यक सूचना

'चाँद' और साप्ताहिक 'भविष्य' में विज्ञापन देकर अपने कारबार में अपूर्व लाभ उठाइए ! इसका रेट बहुत ही सस्ता कर दिया गया है। आज ही पत्र भेज कर नियमावली मँगाइए।

'यदि ईसा ईसाई थे, तो गाँधी जी भी ईसाई हैं।'

पादरी होम्स की महात्मा जी से अपील

यदि गाँधी जी अमेरिका आवें तो सब से पहिला काम जो वे करेंगे, वह यह होगा कि हमको हमारे धर्म का अर्थ समझावें। यह कथन दो कारणों से विशेषतः अनोखा मालूम पड़ता है।

पहिला कारण तो यह है, कि गाँधी जी ईसाई नहीं, वरन् हिन्दू हैं। माना कि उनका अनुराग ईसाई-धर्म के साथ रह चुका है, वे कई बार कह भी चुके हैं कि इन्जील ने और विशेष रूप से प्रभु ईसा के पहाड़ वाले उपदेश ने मेरा बड़ा उपकार किया है। परन्तु वे आज भी बाल्यावस्था की भाँति अपने पूर्वजों के धर्म के अनुरक्त हैं।

दूसरा कारण यह है कि गाँधी जी की जीवन-प्रणाली तथा रहन-सहन में हमको कोई भी ऐसी (पूर्व परिचित) बात नहीं दिखाई देती, जिसको हम पश्चिमी रूप में ईसाई-धर्म से सम्बन्ध रखने वाली कह सकें। हाल में जब गाँधी जी जेल में थे, तो वे अपनी आत्मा की शान्ति के हेतु श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ा करते थे, न कि इन्जील। नित्य प्रति अपने आश्रम में सवेरे और शाम की प्रार्थना में भी वे ईसाई धर्मानुसार "आसमानी बाप" की याद न करके, अपने देश के ही ईश्वर की वन्दना करते हैं। मुझे तो बड़ा कठिन मालूम होता है कि उनको रोम के पोप जैसे कपड़े पहिनाए जा सकेंगे। गिर्जों की वेदी की जगमगाहट में देखा जा सके, अथवा प्रोटेस्टेण्ट मजमे में आराम से बैठ सकें।

उनके गिर्जे में आने की एक विख्यात घटना है। बात दक्षिण अफ़्रिका की है। जब गाँधी जी अपने अङ्गरेज़ मित्र श्री० सी० एफ़० एण्ड्रयूज़ का उपदेश वहाँ के एक प्रोटेस्टेण्ट गिर्जे में सुनने के लिए जाना चाहते थे। रविवार की शाम को उक्त गिर्जे में जाकर वे बैठना ही चाहते थे कि चुपके से धीमे स्वर में बताया गया कि वे उस गिर्जे में ठहर भी नहीं सकते, क्योंकि वह गोरों के लिए है, कालों के लिए नहीं।

गाँधी जी धर्मावलम्बी के रूप में ईसाई नहीं हैं और न वे ईसाइयों की उन रीतियों का ही प्रतिपालन करते हैं, जिनसे हम परिचित हैं। इसलिए यह प्रश्न हो सकता है कि ऐसी दशा में हम क्यों मान लें कि गाँधी जी हम लोगों को ईसाई-धर्म का अर्थ समझा सकेंगे?

परन्तु इस प्रश्न के साथ-साथ ही हमको ध्यान आता है कि गाँधी जी के सम्बन्ध में जो बातें हम ऊपर कह आए हैं वे प्रभु ईसा मसीह के लिए भी समान रूप से कही जा सकती हैं। वे भी यहूदी थे, न कि ईसाई और उनका पालन यहूदियों के मन्दिर में हुआ था, न कि ईसाई गिर्जे में; उन्होंने इन्जील का केवल पुराना भाग (Old Testament) ही पढ़ा था, न कि नया (New Testament); वे यहूदी-ईश्वर (Jehovah) का ही स्मरण किया करते थे न कि ईसाई-पिता का। साधु पीटर की गद्दी पर बैठे हुए देखना, मैं तो ईसा के लिए उतना ही कठिन समझता हूँ जितना कि गाँधी के लिए। यूरोप और अमेरिका के जिन-जिन गिर्जों में मैं गया हूँ, उनमें से किसी में भी ठीक-ठीक ईसा दृष्टिगोचर नहीं होता। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यदि आज न्यूयार्क नगर में ईसा आवें तो मेरे ध्यान में कोई भी ऐसा गिर्जा नहीं है, जहाँ उनका स्वागत हो सके। यह सब बातें हमारे विश्वास को अधिकाधिक दृढ़ करती हैं कि ईसाई-धर्म का तत्त्व, रीति-रिवाज, छोटे-बड़े गिर्जे इत्यादि में नहीं, बल्कि दया और सहानुभूति, बुराई से घृणा, अत्याचार से डर, मनुष्य-मात्र से प्रेम और बैरी के प्रति भी क्षमा का भाव ईसाई-धर्म के प्रमुख गुण हैं। आज इस पृथ्वी पर बसे हुए प्राणियों में सबसे अधिक महात्मा गाँधी ने इस भेद की व्याख्या की है और ईसा की भाँति जीवनचर्या पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है। मैं जानता हूँ कि आज ये हिन्दू-साधु अमेरिकावासियों को उस ईसाई-धर्म का अर्थ सिखा सकेंगे, जिसको हम स्वीकार तो करते हैं, परन्तु उसके अनुसार व्यवहार बिल्कुल नहीं करते।

इसके अतिरिक्त और जो काम गाँधी जी अमेरिका तथा सारे संसार के लिए कर सकेंगे वह होगा, सादे जीवन की शक्ति और उसका प्रभाव। एक समय था, जब साधारण जीवन हमारे अमेरिका के समाज का नियम था। उस समय अधिकाधिक (अनात्मीय) द्रव्यमय सामग्री के झन्झटों और उत्तरदायित्व से जीवन बचा हुआ था। कहना पड़ेगा कि यह नियम प्रबल आवश्यकता के कारण बना देना पड़ा था।

कई नसलों तक आगन्तुक तथा उनके उत्तराधिकारी कभी साधारण जीवन के उच्चतम उद्देश्यों का प्रतिपालन करते रहे। तत्पश्चात् जब वह आवश्यकता जाती रही तो वह अमल अमेरिका के धर्म का एक निस्तब्ध सिद्धान्त मात्र रह गया। वर्डस्वर्थ के सुविख्यात महावरे की याद दिलाते हुए श्री० राल्फ़ एमरसन अपने सहयोगियों से अनुरोधपूर्वक कहा करते थे कि "साधारण रूप से जीवनचर्या रखते हुए उच्च विचार रखना" अति आवश्यक है।

बहुत काल नहीं बीता, जब श्री० थियोडोर रुज़वेल्ट ने असाधारण बात यह की थी कि पादरी वेगनर (Pastor Wagner) द्वारा लिखित पुस्तक "साधारण जीवन" (The Simple Life) की जनता से बड़ी प्रशंसा की, यहाँ तक कि वह पुस्तक कई मास तक बड़ी कामयाबी के साथ अधिकाधिक बिकती रही। परन्तु अमेरिका के उक्त अध्यक्ष श्री० रुज़वेल्ट बढ़े हुए प्रभाव के कारण भी अपने अन्तिम समय में अमेरिकावासियों में साधारण जीवन बिताने की शैली प्रचलित करने में ठीक ऐसे ही नाकामयाब रहे, जैसे कि एमरसन और थोरियो अपने आरम्भ काल में। रुपया हमारे पास ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था और हम अपनी एकत्र की हुई सांसारिक सामग्री के बोझ से दब गए थे।

आज अमेरिका की बढ़ी हुई विलासप्रियता के कारण ही तो इस बात के विचार मात्र से हँसी सी आती है कि महात्मा जी लँगोटी लगाते हैं, पाँव और टाँगें नङ्गी रहती हैं, कुछ छुआरे खाकर ही सारा दिन बिता देते हैं। पलङ्ग छोड़ कर ऊँचे-नीचे फ़र्श पर ही सो जाते हैं।

महात्मा गाँधी को यह व्यक्तिगत आदतें जानने के साथ-साथ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उनके विचारों का आधार संन्यस्थ जीवन का सिद्धान्त है और यह सिद्धान्त पूर्वीय मनुष्यों में लगभग धर्म के रूप में ही माना जाता है।

यह आदतें महात्मा गाँधी ने सोच-समझ कर हथियारों के सदृश ग्रहण की हैं, जिनके द्वारा वे एक दरिद्र जाति का नेतृत्व करते हुए इतिहास के एक महान् साम्राज्य का मुक़ाबला करके, उसको राजनीतिक तथा आर्थिक लूट से रोकना चाहते हैं। सच तो यह है कि यह लँगोटी, नङ्गे पाँव, थोड़े से छुआरे (खजूर) तथा एक प्याला बकरी का दूध सारे भारत का प्रदर्शन नहीं करते और न भारत के स्वाधीनता-संग्राम का, बल्कि उस आत्मा को जिसने लगातार वर्षों तक नियमित रूप में जीवन-निर्वाह करके सत्य के अनन्त गौरव को प्राप्त कर लिया है। ठीक ऐसे ही, सदियों पहिले, ईसा ने भी किया था और कहा था कि "जीवन मांस से विशेष महत्व की चीज़ है और शरीर वस्त्रों से!"

परन्तु गाँधी जी ने केवल जीवन की सुन्दरता को ही प्राप्त और प्रदर्शित नहीं किया है, वरन् साधारण जीवन की महान् शक्ति को भी। आज महात्मा जी की सबसे प्रबल शक्ति केवल इस बात में है कि उस लड़ाई में, जो वे अपने देशवासियों के हेतु लड़ रहे हैं, उनकी कोई भी हानि नहीं हो सकती, इसलिए उनको परिणाम का कोई भय नहीं हो सकता। क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि जितनी अधिक सामग्री आप इस संसार में इकट्ठी करेंगे उतने ही अधिक आप निर्बल होंगे। वह मनुष्य, जिसकी सम्पन्नता से कोठार भरे हों, रात-दिन हानि और टोटे के भय से ग्रस्त रहता है तथा वह जाति जिसका साम्राज्य (राष्ट्र) सविस्तार हो, धन-दौलत भरी पड़ी हो, व्यापार उन्नति के शिखर पर हो, सदा युद्ध या युद्ध की अफ़वाहों से काँपा करती है। इस संसार में भयरहित तथा चैन से सोने वाले केवल सामग्री-हीन व्यक्ति तथा छोटे राष्ट्र ही हैं।

आप में से कितनों ने वह सुन्दर वार्तालाप पढ़ा है जो गाँधी जी और साम्यवादी नवयुवकों से कराची में हुआ था। महात्मा जी कॉङ्ग्रेस के लिए गए हुए थे और नवयुवक उनकी निन्दा ही नहीं करना चाहते थे, बल्कि कदाचित आक्रमण के लिए भी प्रस्तुत थे।

महात्मा जी कराची उस समय पहुँचे थे, जब अङ्ग्रेज़ी सरकार ने तीन हिन्दुस्तानियों को एक अङ्ग्रेज़ अफ़सर को मार डालने के अपराध में प्राण-दण्ड दिया था। साम्यवादियों ने यह दोष लगा कर कि उन्होंने उक्त तीनों की प्राण-रक्षा नहीं की, गाँधी जी पर कराची पहुँचते ही आक्रमण किया और सम्भव था कि वे (साम्यवादी) उनको मार डालते, या कम से कम बुरी तरह घायल कर देते, परन्तु साथियों ने उनको बचा लिया। फिर इन साम्यवादियों ने अनुरोध किया कि उनके प्रतिनिधियों को गाँधी जी से मुलाक़ात करने का अवसर दिया जाए, जिससे गाँधी जी को उनकी वेदना का ठीक-ठीक पता लगे। गाँधी जी ने केवल यह स्वीकार ही नहीं किया, बल्कि उनसे अकेले ही मिले। जब कि ये उग्र भारतीय नवयुवक सामने आए तो गाँधी जी ने उनके कथन को बड़ी सौम्यता तथा सन्तोष के साथ सुना। तब वे अपने असली रूप में बातचीत करने लगे। गाँधी जी कहने लगे—"यदि आप लोग मुझे पीटें भी तो मैं कोई शिकायत न करूँगा। ईश्वर के

अतिरिक्त मेरा कोई शरीर-रक्षक नहीं है। मैं अपने दुश्मनों से भी प्रेम करता हूँ—इसलिए कोई मुझे पागल और मूर्ख समझता है, परन्तु यही वह सिद्धान्त है जिस पर मेरा मत तथा सारे जीवन का कार्यक्रम निर्माण किया गया है। त्याग करने के लिए मेरे पास कुछ शेष नहीं रहा—मेरे पास सांसारिक सामग्री कुछ भी नहीं—मैं भिक्षुक हूँ। परन्तु जिस दिन भी भारत अहिंसा के पवित्र सिद्धान्त को त्याग देगा, उसी दिन मैं अपने क्षीण शरीर का अस्तित्व मिटाने के लिए तैयार हो जाऊँगा। यदि आप कहें कि मेरे द्वारा भारत का अहित हो रहा है, तो आपको यह कहने का अधिकार है। परन्तु मेरा यह धर्म है कि मैं आपको प्रेम और सत्य के मार्ग पर अग्रसर कराऊँ। आपका विरोध करने के लिए मेरे पास प्रेम के सिवा और कोई हथियार नहीं। मेरी रक्षा का भार कोई भी अपने ऊपर न ले, यह कार्य केवल ईश्वर ही कर सकता है।"

समाचार-पत्र का कहना है कि गाँधी जी का वक्तव्य समाप्त होने के पूर्व ही सब विरोधी पश्चात्ताप करने लगे थे और वे सब अनुताप करते हुए विनीत भाव से लौटे।

मैं अमेरिकावासियों के साथ अन्याय नहीं करना चाहता। मुझे गर्व है कि मैं भी उनमें से ही एक हूँ। परन्तु हम लोग अनात्मवाद के पूरे-पूरे शिकार हो गए हैं, इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि वर्तमान व्यावहारिक हीनता को हम जाति तथा सरकार की सबसे भयावनी आपत्ति मान रहे हैं। हम इस बात से इतने अधिक व्यथित हो रहे हैं कि अपने अध्यक्ष पर रुष्ट हैं, यद्यपि इसमें उनका कोई भी हाथ नहीं। हम उन पर यह दोष भी लगाने को तैयार हैं कि उन्होंने अपने अध्यक्ष-काल में व्यवसाय-सम्बन्धी सङ्कट उपस्थित होने दिया। इसके अतिरिक्त और कोई ऐसी घटना नहीं, जिसके कारण हम उत्तेजित हो रहे हैं। राजनीतिक भ्रष्टता तथा विलास-प्रियता का हम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ख़्याल तो कीजिए कि Warren Gamalial Harding के शासन-काल में क्या हुआ था।

वर्तमान व्यापारिक हीनता निस्सन्देह दुर्घटना है और विशेषकर इसलिए कि उसके ही कारण लाखों जन बेकार हो गए हैं। परन्तु ऐसी समृद्धि-वृद्धि की अवनति, जिसमें हम कुछ वर्षों से गिरते चले जा रहे हैं, स्वयं कदापि आपत्ति नहीं कही जा सकती। इसके विपरीत यदि हममें आत्मिक श्रद्धा कुछ भी होती तो हम इस अवनति को निश्चय ही शुभ समझते और अपनी उन्नति का कारण मानते। तीन वर्ष हुए, जब एक महान अमेरिकन व्यक्ति, जो बड़े अच्छे ईसाई-नेता तथा महाचरित्रवान श्रद्धालु सज्जन भी थे, भारत जाकर गाँधी जी से मिले। ये महाशय भी अपने रहन-सहन में कुछ स्वाभाविक विशेषता रखते थे—जैसे कि हम सब अमेरिका-निवासी रखते हैं। जब उनसे पूछा कि गाँधी जी के सामने बैठते समय आपका विचार क्या हो रहा था, तो कहने लगे—"जब मैंने उनकी लँगोटी देखी तो मुझे अपने बढ़िया पोशाक के सिवा और कुछ ध्यान न हुआ तथा जब मैंने उनके (गाँधी जी के) पवित्र और नग्न शरीर को देखा तो मेरे पापी शरीर में एक बिजली सी दौड़ गई। अपने समृद्ध भद्देपन का स्मरण करके पापमय शरीर की नसों में उत्तेजना पैदा हुई और बिजली सी दौड़ गई।"

"हमारे अनात्मवाद से सबसे अधिक हानि क्या हो सकती है? हम अपनी सांसारिक वृद्धि का भोग करते हुए भी अन्तर्गत भयभीत क्यों हैं? हम उसको प्राप्त करने की चेष्टा करते हुए भी उसकी निन्दा क्यों करते हैं? क्या इन प्रश्नों का उत्तर हमें मनुष्य-प्रकृति के उन उच्चतम गुणों तथा स्वभाव के लोप होकर धन-प्रेम तथा दौलत सञ्चय करने की चेष्टा के भावों की उत्पत्ति में नहीं मिलता?"

इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि मनुष्य-प्रकृति परिवर्तित हो गई है। प्रकृति का उच्चतम गुण तथा स्वभाव अब रह गया है, केवल दौलत से प्रेम तथा धन-सञ्चय करने की नव-विकसित भावनाओं में।

श्री० मेथ्यू ऑरनॉल्ड ने इसी उदासीन सत्यता का गान अपनी "Buried Life" नामक कविता में किया है। अपने समय के व्यवसायी इङ्गलैण्ड को देख कर उनका विचार हुआ कि सांसारिक आकृति को देख कर मनुष्य-जीवन का उच्च आदेश दब गया है और इतना नीचे गिर गया है कि उसके पुनः विकास और ज्ञान की कदाचित सम्भावना ही नहीं। परन्तु उसका बिल्कुल लोप नहीं हुआ है। वे कहते हैं, संसार के उन बाज़ारों में, जहाँ सदा चहल-पहल नहीं रहती है तथा जीवन-संग्राम के मध्य में भी इस बात की प्रबल आकांक्षा उत्पन्न होती है कि अपने निर्जीव जीवन का ज्ञान तो प्राप्त करें। आकांक्षा होती है कि हमारे हृदय का भेद क्या है, जो कभी आवारा मालूम होता है और कभी इतना गहरा—हमारा "जीवन" कहाँ से आता है और कहाँ जाता है, हमारे जीवन का आदि और अन्त क्या है?"

आज भी हम अपने जीवन-संग्राम की व्यस्त दशा में एक अकथनीय अभिलाषा का अस्तित्व अनुभव कर रहे हैं, जो यह जानने के लिए व्यग्र है कि आख़िर हमारा यह निर्जीव और निस्वार्थ जीवन है क्या? यह भावना इस भय के कारण और भी तीव्र हो रही है कि कहीं जीवन के ज्ञान को न भुला बैठें। यदि गाँधी जी यहाँ आ गए तो वे निश्चय ही हमें इसका स्मरण करा सकेंगे; क्योंकि वे स्वयं इसके गहरे मर्म को नहीं भूलते। वे नियम-बद्ध होकर स्मरण करते हैं, जिससे भूलने की सम्भावना ही जाती रहे। आश्रम में रहते समय नित्य-प्रति प्रातः सूर्योदय के समय वे अपने चेलों के साथ आश्रम के नीचे बहती हुई नदी से मिली हुई छोटी सी पहाड़ी पर जाते हैं। वहाँ नग्न पृथ्वी पर पूर्व की ओर मुँह करके बैठ जाते हैं और अपने देश की बनाई हुई प्रार्थना द्वारा ईश्वर की वन्दना करते हैं। इसी भाँति सायङ्काल को भी सूर्यास्त के समय अपने आश्रमवासियों को इकट्ठा करके बैठ जाते हैं और पश्चिम की ओर मुँह करके फिर प्रार्थना करते हैं। सात दिन में एक दफ़े गाँधी जी अपने संसार के अनेक झगड़ों को भूल कर भगवद्भक्ति में लीन रहते हैं। सप्ताह में एक दिन वे मौन रहते हैं। उस समय न किसी से मिलते हैं और न एक शब्द उच्चारण करते हैं; क्योंकि उस दिन वे अपने मतानुसार अपनी आत्मा से साक्षात करके अपने में उस शक्ति के अस्तित्व का अनुभव करते हैं, जो संसार और मनुष्य-मात्र को एक करती है। इस मौन व्रत का वे कभी परित्याग नहीं करते, चाहे क्रान्ति की प्रचण्ड ज्वाला धधक रही हो और चाहे राजनीतिक समस्याओं का भारी बोझ सर पर हो।

आप चाहें तो इसको मिथ्यावाद कह दें। मैं मानता हूँ कि हमारे निश्चिन्त मनोवृत्ति वाले, अनात्मवादी अमेरिका-निवासी प्रार्थना और मौन व्रत में भी विनोद की सामग्री पा लेंगे, परन्तु इस उथले निर्मूल सत्याभास के साथ मैं महात्मा जी के प्रमाण की तुलना करने को तैयार हूँ और विश्वास है कि उक्त प्रमाण प्रार्थना के बिना मैं कुछ भी नहीं कर सकता।

गाँधी जी अपने देश में जो कुछ भी कर सके हैं तथा हमारे देश में कर सकेंगे, वह यह है कि अपने अस्तित्व का दैविक कारण पुनः विकास करें। उन्होंने विश्व की आध्यात्मिक वास्तविकता को जान लिया है और प्रमाणित कर दिया है। उक्त कविता में मेथ्यू ऑरनॉल्ड ने जिस भाव को अन्तिम पंक्तियों में दर्शाया है, उसको गाँधी जी ने अपने ही जीवन में अनुभव कर लिया है। मेथ्यू ऑरनॉल्ड ने आत्मा को पहिचान लेने पर जो मुक्ति प्राप्त होती है, उसी का उल्लेख किया है।

यही वह जानकारी है, जो महात्मा गाँधी अमेरिका के भटके हुए निवासियों को आज प्रदान कर सकते हैं। सारे विश्व में केवल वे ही एक व्यक्ति हैं, जो हमारी आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं।

गाँधी जी के इस देश में आने के बाद जो उत्तेजना फैलेगी, मेरे विचार में उसको सहन करना चाहिए; क्योंकि उसके बदले में वे हमारी आत्माओं को आराम, शान्ति और शक्ति प्रदान करेंगे।

इस भारतीय महान पुरुष और अङ्गरेज़ी वायसरॉय लॉर्ड इर्विन के मध्य जो लगातार परामर्श होते रहे, उनके पश्चात् लॉर्ड इर्विन पूरी तरह थक गए थे, परन्तु गाँधी जी इसके विपरीत बिल्कुल ताज़ा और वैसे के वैसे ही बने रहे। यह सब कुछ उस समय हुआ जब उनका शरीर दुर्बल था। वे ८ मास का कारावास काटकर निकले थे, जिसमें कि उन्हें भारतीय प्रचण्ड गर्मी भी बितानी पड़ी थी।

गाँधी जी से इस सम्बन्ध में पूछा गया कि आप में इतना बल कहाँ से आ गया है कि आप वर्तमान आनन्द और अपने करोड़ों देशवासियों के उज्ज्वल भविष्य का उत्तरदायित्व ग्रहण किए हुए हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया कि इसका भेद यह है :—
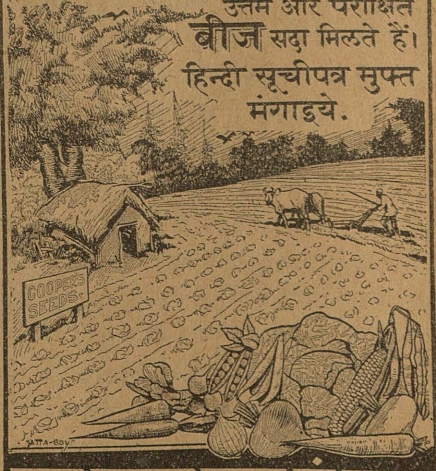
"एक स्वच्छ हृदय। पवित्र अन्तःकरण। शान्त चित्त। ईश्वर से लगातार सम्बन्ध। उत्तेजक भोजन और विषय-वासना से परहेज़। शराब, तम्बाकू और मसालों से बचाव। पूर्णतया शाकाहारी भोजन और सब साथियों से प्रेम।"

* * *

नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत "नूह" नारवी

[मुन्शी सुखदेवप्रसाद जी सिन्हा "बिस्मिल" इलाहाबादी]

हज़रत नूह नारवी के पूज्य पिता का नाम मौलवी अब्दुल मजीद था। १८५७ के ग़दर में सरकार ने ख़ैर-ख़्वाही के उपलक्ष्य में आपको एक इलाक़ा दिया, जिसकी सालाना आमदनी दस हज़ार रुपए से अधिक है। हज़रत "नूह" सन १८७९ में भवानीपूर ज़िला रायबरेली में पैदा हुए। अभी आपका बचपन ही था कि आपके पूज्य पिता सब-जजी के ओहदे तक पहुँच कर २६ जून, सन् १८८३ को स्वर्गवासी हो गए। तमाम रियासत का इन्तज़ाम रिश्तेदारों के हाथ में पड़ा और ख़ान्दान के पारस्परिक झगड़े में बड़ी आर्थिक क्षति हुई। चौदह साल की उम्र में आपने अपनी जायदाद का इन्तज़ाम अपने हाथ में लिया और बड़ी ख़ूबी से उसकी देख-भाल आज तक करते चले आते हैं। कविता का शौक़ आपको मीर नजफ़ अली साहब के सत्सङ्ग से हुआ। पहले आप इन्हीं से अपनी कविता का संशोधन कराते थे, परन्तु आप इतने तेज मेधावी और उच्च विचार के थे कि उस्ताद ने दूसरे उस्ताद से कविता संशोधन के लिए आपको आज्ञा दी। इसलिए बहुत सोच-विचार के बाद महाकवि "दाग़" देहलवी के शिष्य हुए। कविता संशोधन कराते हुए दो साल भी न बीते थे कि उस्ताद दाग़ के चरणों में उपस्थित होने की अभिलाषा पैदा हुई और आप हैदराबाद पहुँचे।

आपको देख कर महाकवि 'दाग़' ने कहा, मुझे तुम्हारे 'नूह' होने में शक है, क्योंकि तुम्हारी कविता से मुझे मालूम होता था कि नूह कोई वृद्ध पुरुष होंगे। मगर जब आपने विश्वास दिलाया तो हज़रत दाग़ बड़ी ख़ातिर से पेश आए और व्यङ्ग के तौर पर कहा कि हम जानते थे कि 'नूह' हज़रत नूह की अवस्था के होंगे, परन्तु आपकी अवस्था बहुत कम है। आपको उस्ताद का कलाम बहुत याद था, इसलिए आपके सम्बन्ध में हज़रत दाग़ का यह क़िस्सा भी याद रखने के क़ाबिल है कि दीवाने-हाफ़िज़ (हाफ़िज़ कवि की कविताओं का संग्रह) पहले देखा था, परन्तु 'हाफ़िज़े दीवान' (संग्रह को कण्ठस्थ करने वाला) आज देखा। अस्तु, कुछ दिनों के बाद अपने वतन नारा वापस आए और पत्र द्वारा कविताओं का संशोधन कराते रहे। जब तक हज़रत दाग़ ज़िन्दा रहे, तब तक यही सिलसिला बराबर जारी रहा। आपकी कविता से प्रसन्न होकर महाकवि दाग़ ने आपको एक सनद दी थी, जिसमें का एक शेर उल्लेखनीय है—

एक से होता है हासिल एक को फ़ैज़े सख़ुन,
मैंने सीखा "ज़ौक़" से और मुझसे सीखा 'नूह' ने।

हज़रत नूह हिन्दोस्तान के बड़े-बड़े मशायरों में शरीक होकर अपनी तूफ़ानी कविता की धाक जमा चुके हैं। आपके दो दीवान प्रकाशित होकर कविता-प्रेमी जनता द्वारा पसन्द किए जा चुके हैं और तीसरा संग्रह भी बहुत शीघ्र जनता में आने वाला है। मेरे ख़्याल में इस समय कोई ऐसा बड़ा शहर न होगा, जहाँ कोई न कोई आपका शिष्य न हो। आपके शिष्यों की तादाद तीन-चार सौ के लगभग है और इनमें से बीस-पचीस शिष्य तो बहुत ही अच्छे कवि समझे जाते हैं। हज़रत नूह की कविता उर्दू और हिन्दी पत्रों में बहुतायत से प्रकाशित होती है। हिन्दोस्तान भर में आपकी कविताओं की

नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत 'नूह' नारवी

प्रशंसा होती है। प्रसाद-गुण आपकी कविता की विशेषता है। आपकी कविता समझने में दिल और दिमाग़ को अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत नहीं पड़ती। भाषा में सादगी इतनी है कि एक दरिया अपनी मौज (लहर) में दिखाई देता है। भाव इतना साफ़ और सुलझा हुआ होता है कि शेर पढ़ा और दिल में उतरा। बन्दिशें इतनी ठोस कि कोई शब्द अपनी जगह से नहीं हिलाया जा सकता, भरती का कहीं नाम भी नहीं। जिस कविता को देखिए, अपने रङ्ग में सराबोर है। प्रत्येक शब्द से उस्तादी टपकती है। हज़रत नूह ने महाकवि दाग़ के पथ पर चल कर भाषा को बिलकुल परिमार्जित कर दिया है। आपकी कविता दिल्ली की टकसाली ज़बान का नमूना है। जिस महावरे को कविता में बाँधते हैं, वह मानो साँचे की तरह ढल जाता है। मिसरे पर मिसरा इस ख़ूबी से लगते हैं कि जिसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। आपकी कविता में काव्य सम्बन्धी गुण भी मौजूद हैं। जिस रङ्ग में कलम उठाते हैं उसमें तूफ़ान उठा देते हैं। आपका कलाम सुनते या पढ़ते वक़् यह मालूम होता है कि इस तरह जो चाहे लिख सकता है। मगर जो उस रङ्ग के कहने वाले हैं, वही जान सकते हैं कि हज़रत नूह के रङ्ग में कहना कितना कठिन है। भाषा इतनी सरल और साफ़ होती है कि गद्य और पद्य में कुछ अन्तर नहीं मालूम होता। सीधी-सादी भाषा में—रोज़ की बोल-चाल में—अनूठे भावों को कूट-कूट भर कर देना आपके लिए खेल है। शब्दों के उलट-फेर में कमाल कर देते हैं, इसका सेहरा इन्हीं के सर है। हज़रत नूह अपने दिल से निकली हुई बातें कहते हैं और यही वजह है जो उनके शेर लोगों की ज़बान पर आ जाते हैं। इस वक़् हिन्दोस्तान के कवियों में आपकी गणना उच्चकोटि के कवियों में की जाती है। ज़बान के आप बादशाह समझे जाते हैं और महाकवि दाग़ के जानशीन हैं। स्वर्गीय महाकवि अकबर इलाहाबादी इनकी बड़ी क़द्र करते थे और जब तक जीवित रहे, इनको अपनी कोठी पर ठहराते रहे। नूह साहब जब इलाहाबाद आते थे, तो बराबर महाकवि अकबर ही के मेहमान होते थे। महाकवि अकबर ने हज़रत नूह की प्रशंसा इस तरह की है, जो नूह साहब के दूसरे दीवान 'तूफ़ान नूह' में दर्ज है। पाठक महाकवि अकबर के इस लिखने से समझ सकेंगे कि हज़रत नूह क्या हैं और किस कोटि के शायर हैं। अकबर फ़रमाते हैं—"हज़रत नूह को मैं बहुत दिनों से जानने की तरह जानता हूँ। ये इलाहाबाद जब आते हैं, मेरी कोठी ही पर ठहरते हैं और जितने दिनों तक रहते हैं, यहीं रहते हैं। मनुष्य के गुण-दोष जाँचने के लिए, बशरते कि जाँचने वाला भी कुछ क़ाबिलियत रखता हो, बहुत कम समय की ज़रूरत है।

"मैंने इनको इस मुद्दत में हर तरह देखा-भाला, जाँचा-परखा है और दृढ़ता के साथ कहने के लिए तैयार हूँ कि वंश-परम्परागत विशेषताओं और सम्मान के अतिरिक्त यह एक प्रशंसनीय और उच्चकोटि के कवि हैं। परमात्मा ने इस काम के लिए इनको विशेष योग्यता प्रदान की है। इनको ख्याति और इनकी कविता अब किसी परिचय की अपेक्षित नहीं है। इनकी कविता के बारे में ख़ुद उनके उस्ताद नवाब मिर्ज़ा दाग़ देहलवी की तहरीर, जो इनके पास मौजूद है, और जो मैंने देखा है, उससे पता लगता है कि यह क्या चीज़ हैं। ख़ुदा इनको चिरायु रक्खे, क्योंकि इन पर शायरी दुनिया की हज़ारों आशाएं निर्भर हैं।"

अब पाठकों के सामने मैं महाकवि नूह की हर रङ्ग की कविताओं के कुछ नमूने पेश करता हूँ, जिससे पाठकों को ख़ुद अन्दाज़ा हो जायगा कि हज़रत नूह के क़लम में क्या असर और कैसा जादू है :—

जो किसी की अदा पे फ़िदा न हुआ,
जो किसी की अदा पे फ़िदा न रहा।
वह जिगर ही नहीं, वह तो दिल ही नहीं,
वह रहे न रहे, वह रहा न रहा।
मेरे ज़ेहन में है, मेरे होश में है,
मेरी अक़्ल में है, मेरी याद में है।
वह अलग भी हुआ तो अलग न रहा,
वह जुदा भी हुआ तो जुदा न रहा।
जो वह ग़म न रहा, तो वह दिल न रहा,
जो वह दिल न रहा तो वह हम न रहे।
जो वह हम न रहे, तो वह तुम न रहे,
जो वह तुम न रहे तो मज़ा न रहा।

ताबे सितम अगर न हो तो कोई दिल लगाए क्या,
रोज़ की आह-आह क्यों, रोज़ की हाय-हाय क्या।
मैंने न कुछ कहा अभी तुमने न कुछ सुना अभी,
यों जो मिले तो क्या मिले, आए जो यूँ तो आए क्या।
आतिशे इश्क़ क्या है कम, उसपे है सोजे दिल सितम,
आप ही जल रहा हूँ मैं, कोई मुझे जलाए क्या।

❀

मिला न आराम मुझको दम भर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
इलाही मैं क्या करूँ ठहर कर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
न ज़िन्दगानी में लुत्फ़ उठाया,
न बाद मरने के चैन पाया,
ज़मीं के नीचे फ़लक के ऊपर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
वह दूसरी कौन सी जगह है,
जहाँ रहें हम जहाँ बसें हम,
ज़मीं से हट कर फ़लक से बच कर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।

देखिए, क्या महकते हुए पद हैं जिनके पढ़ने से दिल और दिमाग़ दोनों बाग़-बाग़ हो जाते हैं :—

बुलबुल का चुराया दिल नाहक़
यह ख़ाम-ख़याली फूलों की,
लेती है तलाशी बादे सबा
अब डाली-डाली फूलों की।
माना कि लुटाया रातों को,
गुलज़ार में मोती शबनम ने,
जब सुबह हुई सूरज निकला
तो जेब थी ख़ाली फूलों की।
आती है ख़िज़ाँ अब रुख़सत कर,
ज़िन्दा जो रहे फिर आएँगे,
हमसे तो न देखी जाएगी
माली पामाली फूलों की।
फिर रुत बदली फिर अब्र उठा,
फिर सर्द हवाएँ चलने लगीं,
हो जाए परी बन जाए दुलहन
अब डाली-डाली फूलों की।
हारों में गुँधे जकड़े भी गए,
गुलशन भी लुटा सीना भी छिदा,
पहुँचे मगर उनकी गर्दन तक
यह ख़ुश-इक़बाली फूलों की।
बुलबुल को यह समझा दे कोई
क्यों ख़ून के आँसू रोती है,
उड़ जाएगी सुर्ख़ी फूलों से
मिट जाएगी लाली फूलों की।
गुलशन में कभी हम सुनते थे,
वह क्या था ज़माना फूलों का,
कलियों से कहानी कलियों की
फूलों से फ़िसाना फूलों का।
क्या मौसिमे गुल पर इतरा कर
हम गाएँ तराना फूलों का,
दो रोज़ में आने वाला है,
एक और ज़माना फूलों का!
जब अहले-चमन सो जाते हैं
तो हुस्न के डाकू आते हैं,
कुछ रात गए, कुछ रात रहे
लुटता है ख़ज़ाना फूलों का!
अय्यामे ख़िज़ाँ में ऐ बुलबुल,
तकलीफ़ मेरी बढ़ जाएगी,
फूलों की क़सम देता हूँ तुझे
छेड़ अब न तराना फूलों का!
ऐ "नूह" असर तुम पर भी किया,
इतना तो चमन के मन्ज़र ने,
तूफ़ान उठाना भूल गए,
ले बैठे फ़िसाना फूलों का।

❀

जो तेरी समझ में न आ सके
तेरे आशिक़ों का वह हाल है।
कभी मरते हैं, कभी जीते हैं,
यह बड़ा ही इनमें कमाल है।
वह करम, वह लुत्फ़ किधर गया,
वह ख़ुशी का वक़्त गुज़र गया,
उन्हें अब जो नहीं मलाल भी
मुझे एक यह भी मलाल है।
न वह आएँगे, न बुलाएँगे,
यूँ ही जान लेंगे सताएँगे,
उन्हें और धुन है बँधी हुई,
मेरे दिल को और ख़याल है।

❀

तेरी नज़र है मेरी तबीयत,
मेरी तबीयत तेरी नज़र है,
कभी यहाँ है, कभी वहाँ है,
कभी इधर है कभी उधर है।
तुम्हें मुबारक हो ऐशो-इशरत,
इलाही रक्खे तुम्हें सलामत,
जो रञ्ज है वह है मेरे दिल को,
जो ग़म है वह मेरी जान पर है।
यह छुपके ग़ैरों से क्या मिलेगा,
यह मिल के औरों से क्या लड़ेगी,
मेरी नज़र में तेरी नज़र है
तेरी नज़र पर मेरी नज़र है।

❀

हम अपनी क़ज़ा का ग़म न करें
मरने का हमें क्यों रोना है।
वह एक न एक दिन आनी है,
यह एक न एक दिन होना है।
मरना है तेरी शोख़ी पे हमें,
क़ुर्बान हया पर होना है,
यह भी है सितम, वह भी है ग़ज़ब,
यह जादू है, वह टोना है।
कोई न यहाँ ठहरा अब तक,
कोई न यहाँ ठहरेगा कभी,
दुनिया में हमें दो दिन के लिए,
क्या हँसना है क्या रोना है।
दस-बीस अगर बह जाते थे,
तो हलका जी हो जाता था,
आँसू भी नहीं अब आँखों में,
अब इसका हमको रोना है।

सर देकर हमने रञ्ज लिया,
उनको पाया दिल को खोकर,
यह देना है, यह लेना है,
यह पाना है, यह खोना है!

❀

फ़लक के पार होती है कलेजे में उतरती है,
हमारी एक-एक फ़रियाद दो-दो काम करती है।
ख़ुदा रक्खे मेरी हसरत भी क्या-क्या रूप भरती है,
यह अक्सर मर के जीती है, यह अक्सर जी के मरती है!
उठाई थी हमारी लाश किसने अपने हाथों से,
ज़मीं भी गोद में ले-लेकर इसको प्यार करती है!
पतिङ्गों की तो बेताबी है दुनिया की निगाहों में,
कोई यह शम्अ से पूछे कि तुझ पर क्या गुज़रती है!

❀

मिज़ाज उनका बिगाड़ा है, उन्हें दे-दे के दिल किसने,
कभी हमने कभी तुमने, कभी उसने कभी इसने।
हसीनाने जहाँ के चाहने से फ़ायदा क्या है,
उसी को क्यों न चाहें हुस्न को पैदा किया जिसने।

❀

साथ है जिसके कोई या जो किसी के साथ है,
ज़िन्दगी का लुत्फ़ उसकी ज़िन्दगी के साथ है।
मर भी जाऊँ तो न रोए कोई मेरी मौत पर,
आदमी को लाग कितनी आदमी के साथ है।
उसका ग़म, उसका तसव्वुर, उसकी याद, उसकी तलाश,
एक हङ्गामा हमारी ज़िन्दगी के साथ है।

❀

लोग कहते थे कि यह नाज़ों के हैं पाले हुए,
दिल किसी ज़ालिम को देकर हम भी दिल वाले हुए।
हम यह कहते हैं कि दिल अब दीजिए वापस हमें,
वह यह फ़रमाते हैं कब से आप दिल वाले हुए?

❀

बाद मरने के भी दिल लाखों तरह के ग़म में है,
हम नहीं दुनिया में लेकिन, एक दुनिया हममें है।
पड़ गए लेने के देने और भी मरने के बाद,
हम हैं अपने दिल के ग़म में दिल हमारे ग़म में है।
और तो उल्फ़त न निभने का सबब कोई नहीं,
या बुराई आप में है या बुराई हममें है।

❀

वह जवानी हो चुकी वह नौजवानी हो चुकी,
सिर्फ़ मरना रह गया अब ज़िन्दगानी हो चुकी।
क्या कहें क्या-क्या कहा, क्या-क्या सुना, क्या-क्या किया,
होश भी आया न हमको ज़िन्दगानी हो चुकी।

❀

बदली हुई निगाह की तासीर देख ली,
आँखों से मैंने गर्दिशे तक़दीर देख ली।
आया न जब क़रार दिले बेक़रार को,
हमने उठा कर आपकी तस्वीर देख ली।

❀

बदल कर भेस अरमाने दिले मुज़्तर निकलते हैं,
अदा होकर समाते हैं, दुआ बन कर निकलते हैं।
मेरे तलवों से काँटे टूट कर अक्सर निकलते हैं,
जो नावक दिल में चुभ जाते हैं वह क्योंकर निकलते हैं।

❀

अच्छी-अच्छी प्यारी-प्यारी भोली-भाली सूरतें,
एक से हैं एक दुनिया में निराली सूरतें।
हम वहाँ रहते नहीं होती नहीं हैं जिस जगह,
रूप वाली, हुस्न वाली, नाज़ वाली सूरतें।
गुलशने आफ़ाक़ भी गोया है कोई बुतकदा,
पत्ती-पत्ती मूरतें हैं डाली-डाली सूरतें।

❀

विशेषांकों की धूम !! [बिना मूल्य भेंट]

साहित्य-अङ्क	कला-अङ्क	प्रवासी-अङ्क
मूल्य १)	मूल्य २)	मूल्य १)

१५ नवम्बर तक नए ग्राहक बनने वालों को उक्त तीनों विशेषाङ्क बिना मूल्य भेंट !

"मासिक पत्रों में 'विशाल-भारत' ही एक ऐसा पत्र है, जिसके विचारों की गम्भीरता, लेखों का चुनाव और हर तरह की उपयोगी सामग्री सङ्कलित करने की परिपाटी बहुत ही उत्तम है।........हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में 'विशाल-भारत' अपना सानी नहीं रखता—यह सर्वोत्कृष्ट पत्र है।"

—'प्रताप'

विशेषाङ्कों का पोस्टेज सहित वार्षिक मूल्य ६।=) मनीऑर्डर से भेजिए, या वी०पी० से मँगाइए।

'विशाल-भारत' के ग्राहक बनने वालों के लिए पुस्तकों का मूल्य घटाया गया

१ 'कुमुदिनी' (उपन्यास) ले० श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, धन्यकुमार जैन, मू० ३) ग्राहकों को २॥=)
२ 'गल्पगुच्छ' कहानियाँ— " " मू० १॥) " १।-)
३ 'षोड़शी' (कहानियाँ)— " " मू० १॥) (छप रही है)
४ 'रूस की चिट्ठी' (भ्रमण-कहानी) " " मू० १॥।) ग्राहकोंको १॥-)
५ 'भेड़ियाधसान' (हास्यरस)—ले०, "परशुराम" " मू० १॥) " १।-)
६ 'लम्बकर्ण' (सचित्र हास्य)— " " मू० १।) " १=)
७ 'प्रेम-प्रपञ्च' (उपन्यास)—ले० तुर्गनेव; अनुवादक, जगन्नाथप्रसाद मिश्र, बी० ए०, मू० १।) " १=)
८ 'मुसोलिनी और नवीन इटली'—ले० पो० एन० राय; अनुवादक ब्रजमोहन वर्मा, मू० २॥) (छप रही है)

पता—'विशाल-भारत' कार्यालय, १२०।२, अपर सरकूलर रोड, कलकत्ता

पढ़ कर गुप्त विद्या द्वारा जो चाहोगे वह जाओगे जिस की इच्छा करोगे मिल जायेगी या मुफ़्त मंगवाओ पता साफ़ लिखो।

गुप्त विद्या प्रचारक आश्रम, लाहौर

आप व्यापारी हैं

तो थोड़ी ही पूँजी में अधिक लाभ और नाम कमाने के लिए हमारी दवाओं की एजेन्सी लीजिए, बहुत जल्द मशहूर और मालामाल हो जाएँगे।

पता—श्री० जगदीश औषधालय, डालीगञ्ज, लखनऊ

१) में ४ घड़ियाँ, दो जूते सैकड़ों इनाम

आश्चर्य नहीं, बात सच्ची है !

मस्तान सीमसीम—इसकी ख़ुशबू का गुण जो ख़रीदे वही जाने, १ शीशी का १) तसवीर की सारी चीज़ें दिवाली के उपलक्ष में मुफ़्त भेजी जाती हैं। एक सप्ताह के अन्दर ऑर्डर आने से रिस्ट-वाच, पाकेट-वाच और सच्चा टाइम बताने वाली १ जर्मन बुल सण्ड घड़ी
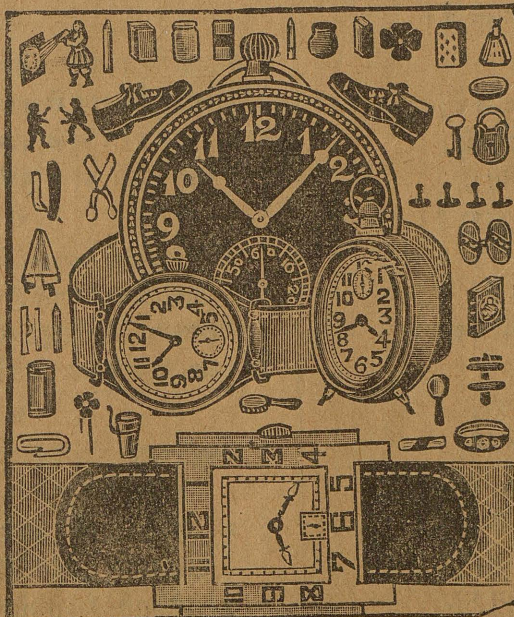
तीन वर्ष की गारण्टी सहित और दो जूता, बायसकोप, कहाँ तक गिनावें, तसवीर में जितनी चीज़ आप देखते हैं, सभी इनाम में भेजी जाएँगी। डाक-व्यय १॥।-) प्रति सप्ताह की देरी करने से एक एक घड़ी इनाम कम मिलेगा और ५ सप्ताह के बाद इनाम कुछ नहीं।

पता—एल० एक्स० फ़ोर्ड वाच कं०, हाटखोला, कलकत्ता

मुफ़्त ! मुफ़्त !! मुफ़्त !!!

मशहूर दाद की दवा। २४ घण्टे में दाद को आराम करती है ! १ डब्बी का दाम ।=), एक साथ १२ डब्बी दाद की दवा मँगाने से तीन सच्ची घड़ियाँ ; गारण्टी ३, ४, ५ वर्ष। और डेढ़ दर्जन मँगाने से १ किडो ग्रामोफ़ोन इनाम। डाक-व्यय १।) पृथक।

पता—बी० बी० भवन,
हाटखोला, कलकत्ता

५) की पुस्तकें १॥) में

१ विश्वव्यापार—सोडावाटर, ख़िज़ाब इत्र, बालसफ़ा, रबड़ की मुहर, अञ्जन, मञ्जन बना धन कमाओ मू० १।)
२ नवीन कोकशास्त्र—८४ आसनों के चित्र, स्त्री-पुरुष सर्व गुप्त भेद, ज्योतिष, सामुद्रिक, शकुन का पूरा वर्णन मू० १।)
३ इङ्गलिशटीचर—घर बैठे अङ्गरेज़ी पढ़ना सीख लो मू० १।)
४ करामात—मैस्मेरिज़्म, हिप्नोटिज़्म, छाया-पुरुष वर्णन मू० १।)

सब पुस्तकें एक साथ १॥) में डाक-व्यय ॥)

पता—बी० आर० जैसवाल, पोस्ट-डिबाई (E.I.R)

बेरोज़गारों का शुभ समाचार

भारतवर्ष भर में अपनी तरह का पहला कॉलेज है, जो निर्धनों के साथ विशेष रियायत करता है, व आसूदा सज्जनों से केवल ८०) रुपया फ़ीस दाख़िला रूप में लेकर दो माह के मामूली समय में ड्राइवरी और फ़िटर का पूरा काम सिखा देता है। यह सरकार से रजिस्ट्री शुदा कॉलेज है। नियमावली आज ही पत्र लिख कर मुफ़्त मँगा कर देखिए।

नोट—नियमावली के लिए पता पूरा और साफ़-साफ़ लिखें।

पता—मैनेजर, इम्पीरियल मोटर ट्रेनिङ्ग कॉलेज, नं० १, चाँदनी चौक, नियर इम्पीरियल बैङ्क, देहली

असल रुद्राक्ष माला

-) आना का टिकट भेज कर १० दाना नमूना तथा रुद्राक्ष-माहात्म्य मुफ़्त मँगा देखिए।

रामदास एण्ड को०
३ चोरबागान स्ट्रीट, कलकत्ता

होमियोपैथिक दवाइयाँ

विशुद्ध अमेरिकन दवाइयाँ प्रति ड्राम -)।, -)॥ व अमेरिका से असली दवा अङ्गरेज़ी पुस्तक, शीशी, काग, गोली आदि मँगा कर सस्ते दर में बेचते हैं। हैज़ा व सब बीमारियों की दवा, हिन्दी में किताब ड्रापर सहित १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०४ दवाओं का दाम केवल २), ३), ३॥), ४॥), ६॥), ८), ११) रु० डाक-ख़र्च अलग। बायोकेमिक दवाइयाँ प्रति ड्राम -)॥। बायोकैमिक दवाइयों का बक्स, एक किताब व १२ दवाइयों के साथ मूल्य २॥) डाक-ख़र्च ॥।-) अलग।

सूचीपत्र मुफ़्त

पता—मजुमदार चौधुरी एण्ड कम्पनी
नं० ९८, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

मैं वजहे रौनक़े चमने रोज़गार हूँ,
खिलने को फूल हूँ तो खटकने को ख़ार हूँ।
कहती है ख़ाक क़ब्र पे उड़-उड़ के बार-बार,
मैं भी किसी मिटे हुए की यादगार हूँ।

❀

अहद में, कौल में, इक़रार में, पैमाँ में नहीं,
जो मज़ा तेरी नहीं में है, तेरी हाँ में नहीं!
आशियाँ बादे मुख़ालिफ़ ने उजाड़ा मेरा,
मुझको तिनके का सहारा भी गुलिस्ताँ में नहीं!

❀

तुम्हारे मूए मिज़गाँ हर तरह तड़पाने वाले हैं?
यह घट जाएँ तो नश्तर हैं, यह बढ़ जाएँ तो भाले हैं।
वहीं तक आप समझें ख़ैर जब तक दिल में नाले हैं,
मेरे आगे यह सातों आस्माँ मकड़ी के जाले हैं।
न पूछा हमको इतना भी किसी ने उनकी महफ़िल में,
कहाँ से आप आए हैं, कहाँ के रहने वाले हैं!

❀

आप ही आप कभी जी से गुज़र जाते हैं,
मरने वाले तेरे बेमौत भी मर जाते हैं।
कभी अपना था यही शग़ल मगर, अब है यह हाल,
इश्क़ का नाम जो सुनते हैं, तो डर जाते हैं!
आज तक उनकी वही छेड़ चली जाती है,
फूल काग़ज़ के मेरी क़ब्र पे धर जाते हैं!

❀

या ख़ुदा मैं किसी काफ़िर की अदा बन जाऊँ,
दिल में शोख़ी बनूँ आँखों में हया बन जाऊँ!
हर घड़ी अब यही क़ौल उस बुते मग़रूर का है,
कोई सिजदा करे मुझको तो ख़ुदा बन जाऊँ!
क्या चला मैं जो रहे शौक़ में रुक-रुक के चला,
लुत्फ़ चलने का तो जब है कि हवा बन जाऊँ।
ज़ब्ते दिल का यह तक़ाज़ा है कि न निकले कोई अश्क,
चश्मेतर की यह तमन्ना कि घटा बन जाऊँ!
मर्तबा ख़ाक का ऐसा है कि ऐ हज़रते "नूह",
ख़ाक बन जाऊँ तो क्या जानिए क्या बन जाऊँ।

❀

रोने वालों से यह बे मौक़ा हँसी अच्छी नहीं,
आप तो अच्छे हैं, आदत आपकी अच्छी नहीं!

❀

कभी दर्दे दिले बेताब जताया न गया,
उनसे देखा न गया, हमसे दिखाया न गया!
बे तलब अन्जुमने नाज़ में क्यों जाए कोई,
जब बुलाया तो गया, जब न बुलाया न गया।

❀

हर तलबगार को मेहनत का सिला मिलता है,
बुत हैं क्या चीज़ कि ढूँढे से ख़ुदा मिलता है।
यह क़ुदूरत, यह अदावत, यह जफ़ा ख़ूब नहीं,
मुझको मिट्टी में मिला कर तुम्हें क्या मिलता है!
शर्त है इश्क़ हक़ीक़ी के लिए इश्क़े मजाज़,
बे वसीला कहीं बन्दे को ख़ुदा मिलता है!
हमने यह बात मुहब्बत में निराली देखी,
रोज़ गुम होता है दिल रोज़ नया मिलता है!
"नूह" हमको नज़र आया न यहाँ बुत भी कोई,
लोग कहते थे कि काबे में ख़ुदा मिलता है!

❀

इस तरह इज़हारे उल्फ़त कर गया,
खींच कर एक आह कोई मर गया।
मैं किसी को देखते ही मर गया,
कुछ न करने पर भी सब कुछ कर गया!

❀

उस सितम ईजाद पर मरते हैं हम,
फिर हमीं कहते हैं क्या करते हैं हम!
आपका यह हुक्म था मर जाइए,
लीजिए, अब देखिए मरते हैं हम!

❀

कुछ ऐसे हो गए ज़ारो हज़ीं हम,
कि हैं भी और दुनिया में नहीं हम!
हमारी ज़िन्दगी क्या और हम क्या,
बहुत कुछ हों, मगर कुछ भी नहीं हम!

❀

दिल चुरा ले जाने वाला कौन है,
आप हैं और आने वाला कौन है!
कोई नासेह को यह समझाता नहीं,
यह मेरा समझाने वाला कौन है?
आईना भी आज तक देखा नहीं,
आपसा शरमाने वाला कौन है?

❀

जो दिल में आरज़ूए दिल नहीं है,
कोई क़ातिल कोई बिस्मिल नहीं है!
गुज़रती है बड़े आराम के साथ,
मेरे पहलू में जब से दिल नहीं है!

❀

दिल कहाँ हर किसी से मिलता है,
अच्छे ही आदमी से मिलता है।
जिस तरह मुझसे आप मिलते हैं,
यूँ भी कोई किसी से मिलता है?
क्यों इताअत से बुत हमें न मिलें,
जब ख़ुदा बन्दगी से मिलता है।

❀

यह समझ लो ख़ाक में अब मिल गया,
दिल नहीं आया हमारा दिल गया।
वह जो परदे थे दुई के उठ गए,
मैं मिला उससे वह मुझसे मिल गया।

❀

देख सकता है कौन जलवए यार,
यही बाइस है मुँह छुपाने का।

❀

क़यामत में तो अब वादा वफ़ा हो,
कहूँगा थाम कर दामन किसी का।

❀

लीजिए-लीजिए मेरे दिल को,
देखिए-देखिए पछताइएगा।
चुप रहें आप जनाबे नासेह,
मैं समझता हूँ जो समझाइएगा।
"नूह" मैख़ाने से मस्जिद की तरफ़,
कभी फ़ुरसत हो तो हो आइएगा।

❀

रोज़ आने ही को फ़रमाएँगे आप,
या मेरे घर भी कभी आएँगे आप?

❀

क्यों मुझे आप क़त्ल करते हैं,
मरने वाले पे लोग मरते हैं!

❀

क्यों न दिल इस ख़्याल से ख़ुश हो,
कि तुम्हारा ख़्याल है दिल में।
मेरे पहलू में जिस तरह दिल है,
यूँ तुम्हारा ख़्याल है दिल में।
क्यों न दिल इस ख़्याल से ख़ुश हो,
कि तुम्हारा ख़्याल है दिल में।

❀

सुना करता हूँ बातें प्यारी-प्यारी,
किसी की गुफ़्तगू है और मैं हूँ।
न तुझसा है न अब कोई है मुझसा,
ज़माने भर में तू है और मैं हूँ।

❀

सब अदा को अदा समझते हैं,
हम अदा को क़ज़ा समझते हैं।
हम तो क्या जाने कह रहे हैं क्या,
आप क्या जाने क्या समझते हैं।
मेरे नाले ग़ज़ब के हैं लेकिन,
वह इन्हें भी हवा समझते हैं।
दिल अगर है तो ख़ूबरू लाखों,
आप अपने को क्या समझते हैं?

❀

इस तरफ़ उस तरफ़ नज़र डाली,
उम्र योंही तमाम कर डाली।
दिल न था आईने के पहलू में,
किस नज़र से उधर नज़र डाली।
पत्ती-पत्ती में तुझको देख लिया,
डाली-डाली पे यूँ नज़र डाली।
पढ़ रहे थे वह ग़ैर की तहरीर,
छीन कर हमने चाक कर डाली।
सामना जब हुआ क़यामत में,
"नूह" पर "नूह" ने नज़र डाली।

❀

कोई देखे रूए जाना की बहार,
यह चमन है वह जहाँ माली नहीं।
लोटता है दिल तड़पता है जिगर,
कोई अपने काम से ख़ाली नहीं।
"नूह" को तूफ़ाने ग़म से ख़ौफ़ क्या,
उसकी कश्ती डूबने वाली नहीं।
मैं उन्हें पाकर इसे पाता नहीं,
वह जब आते हैं तो होश आता नहीं।
बस मुझी को लोग समझाते हैं सब,
कोई उस ज़ालिम को समझाता नहीं।

❀

पाठक हज़रत "नूह" की शायरी का अन्दाज़ा कर चुके होंगे। जो शैर है अपनी जगह लाजवाब है। ज़बान की सफ़ाई महाकवि "दाग़" से मिलती हुई है। इनका कलाम और उनका कलाम मिला कर देखा जाए तो एक ही मालूम होता है। एक जगह हज़रत "नूह" ख़ुद फ़रमाते हैं। और बजा फ़रमाते हैं।

वह कहते हैं बताओ फ़र्क़ क्या है,
जनाबे 'दाग़ो' 'नूहे' नारवी में।

❀

अब हमें यह दिखाना है कि हज़रत "नूह" किसी की ग़ज़ल पर मिसरे लगा कर उसे किस ख़ूबी से ख़मसा बनाते हैं। देखिए महाकवि "दाग़" की यह ग़ज़ल दाग़ साहब का यह मतला है :—

तेरे कूचे में जो हम बादीदए तर बैठते,
सैकड़ों तूफ़ान उठते सैकड़ों घर बैठते।

इस पर हज़रत नूह के मिसरे :—

इस तरफ़ दीवार उठती उस तरफ़ दर बैठते,
फिर उठाते लोग उनको फिर मुक़र्रर बैठते।
अलग़रज़ बन कर बिगड़ते उठ कर अकसर बैठते,
तेरे कूचे में जो हम बादीदए-तर बैठते,
सैकड़ों तूफ़ान उठते सैकड़ों घर बैठते।

स्वर्गीय निज़ाम हैदराबाद जनाब "आसिफ़" का यह मतला है :—

वही है ख़ूबरू जो नेक ख़ू हो,
वही है फूल जिसमें रङ्गो बू हो।

नूह साहब फ़रमाते हैं :—

यह है तसलीम मुझको ख़ूबरू हो,
इसे मैं मानता हूँ ख़ुश गुलू हो।
मगर किस काम के जब जङ्ग जू हो,
वही है ख़ूबरू जो नेक ख़ू हो,
वही है फूल जिसमें रङ्गो-बू हो।

जनाब "ज़ौक़" के मशहूर शागिर्द हज़रत "ज़हीर" देहलवी की ग़ज़ल पर मिसरे मुलाहज़ा कीजिए—

शाना ज़ुल्फ़ों में किसने फेरा है,
कि जिगर चाक-चाक मेरा है।

—"ज़हीर"

सौ बलाओं ने मुझको घेरा है,
हर जगह तीरगी का डेरा है।
को देखें अभी सवेरा है
शाना ज़ुल्फ़ों में किसने फेरा है!
कि जिगर चाक-चाक मेरा है।
तेरे कूचे में तेरे वादे पर
दूसरा तीसरा यह फेरा है,

—"ज़हीर"

क्या मिसरे लगाए हैं :—

इस तरफ़ से उधर, उधर से इधर
मैं लगाता हूँ रात-दिन चक्कर,
आज भी दीजू सितम परवर,
तेरे कूचे में तेरे वादे पर।
दूसरा तीसरा यह फेरा है।

❀

हज़रत नूह ने दरबार देहली का क्या अच्छा नक़्शा शायरी में खींचा है :—

साक़ी मुझको चाय पिला दे
साक़ी मुझको और सिवा दे।
साक़ी मुझको शक्ल दिखा दे,
साक़ी मुझको मस्त बना दे।
उट्ठे काले-काले बादल,
भर देंगे पानी से जल-थल।
निकलेगी शाखों में कोंपल,
जङ्गल में भी होगा मङ्गल।
ख़ूब सजी है डाली-डाली,
हर पत्ती दिल लेने वाली।
रङ्ग अनोखा वज़्आ निराली,
प्यारी-प्यारी भोली-भाली।
नौबतख़ाने में है नै भी,
मैख़ाने में है जाइज़ मै भी।
मस्जिद में हू हक़ की लै भी,
मन्दिर में बम-बम जय-जय भी।
दिल्ली के दरबार को देखो,
दिल्ली के बाज़ार को देखो।
दिल्ली की सरकार को देखो,
दिल्ली की भरमार को देखो।
पाइप में पानी की कसरत,
टाइप में सामाने किताबत।
टेलीफ़ून में बेकी सुरअत,
फ़ोनों में पोशीदा हिकमत।
राजा आए नवाब आए,
अपनी-अपनी फ़ौजें लाए।
कैसे-कैसे लुत्फ़ उठाए,
रुतबा पाए तमग़े पाए।
इसके उसके मेरे तेरे,
हाथी घोड़े ख़ेमे डेरे।
सौ-सौ चक्कर सौ सौ फेरे,
आते-जाते शाम सवेरे।
झाड़ पे नख़्ले तूर काशक है,
ज़ाहिर बातिन एक चमक है।
फ़ानूसों में ख़ास झलक है,
बिजली की बिजली गाहक है।
आपस में बेबाकी देखी,
हुशियारी चालाकी देखी।
पोलो देखा, हॉकी देखी,
क्या-क्या शान ख़ुदा की देखो।

❀

अपने उस्ताद महाकवि "दाग़" के मर जाने पर जो मरसिया लिखा है, किस क़दर असर में, दर्द में डूबा हुआ है :—

न रही अब वह शान दिल्ली की,
जिस्म से निकली जान दिल्ली की।
है कहाँ इसमें वह मताए सख़ुन,
क्या चलेगी दुकान दिल्ली की।
चल बसे ज़ौक़ो ग़ालिबो मोमिन,
गई साथ इनके आन दिल्ली की।
एक थे "दाग़" वह भी रह न गए,
ख़त्म है दास्तान दिल्ली की।
ताज़ियत कर रहे हैं यह कह कर,
आज दोनों जहान दिल्ली की।
क्या कहें किस क़दर मलाल हुआ,
हज़रते "दाग़" का विसाल हुआ।
दाग़ का ग़म भुलाएगा अब कौन,
दाग़ उनका मिटाएगा अब कौन।
क्यों न शागिर्द उनके ग़मगीं हों,
इनकी बिगड़ी बनाएगा अब कौन।
इस तरह की सनद हमें देकर,
दिल हमारा बढ़ाएगा अब कौन।
नारे आने को हमसे कहते थे,
मगर अफ़सोस आएगा अब कौन।
नूह दिल में लगी हुई है आग,
इस लगी को बुझाएगा अब कौन।
क्या कहें किस क़दर मलाल हुआ,
हज़रते दाग़ का विसाल हुआ।

हिन्दू-मुस्लिम एकता के आप बड़े ज़बरदस्त हामी हैं। देखिए फ़रमाते हैं :—

हिन्द की आन-बान हैं दोनों,
तन है एक और जान हैं दोनों।
ख़ल्क़ इस पर ज़रा निगाह करे,
अपने ख़ालिक़ की शान हैं दोनों।
बार अपना उठा नहीं सकते,
इस क़दर नातवान हैं दोनों।
फ़र्ज़ है इन पर इसकी रखवाली,
मुल्क के पासबान हैं दोनों।
न हरम है न अब वह बुतख़ाना,
टूटे-फूटे मकान हैं दोनों।
तीर औरों पे क्या लगाएँगे,
ख़ुद यह उतरी कमान हैं दोनों।
कोई सूरत नहीं सफ़ाई की,
दिल में यूँ बदगुमान हैं दोनों को।
फिर पढ़ो "नूह" तुम वही मिसरा,
हिन्द की आन-बान हैं दोनों।

❀

अब मैं कुछ हास्य-रस की कविता के नमूने पाठकों के सामने रखता हूँ। इसमें भी हज़रत "नूह" ने कमाल कर दिखाया है :—

बदले वह सब तरीक़े यारों ने ज़िन्दगी के,
शरबत पे ख़ाक डाली होटल में चाय पीके।
इसलाह औरतों की मरदों के बाद होगी,
साए की भी मरम्मत लाज़िम है कोट सीके।

हैट को मिलने लगी सर पर जगह,
ख़ैर माँगे शेख़ जी दस्तार की।
पहले लेते थे ख़बर अख़बार से,
अब वह लेते हैं ख़बर अख़बार की।

❀

ए-बी जो न कहते बने वी-वो कहाइए,
वाइन जो न कहते बने विहसकी कहाइए।
कम भी हो कोई हर्फ़ तो कुछ हर्ज नहीं,
नकटाई न कहते बने नकटी कहाइए।
डण्डे से न खेलेगा कोई बैट के आगे,
क्या क़द्र है कनटोप की अब हैट के आगे।

❀

हर वक़्त हमें सूझती है बात नई,
गो होते एक काम में नुक़सान कई।
क्या कीजिए महरूमिये क़िस्मत का गिला,
बिसकुट न मिला और चपाती भी गई।

❀

क्योंकर निभेगी शेख़ से लेडी की रस्मो राह,
मोटा सा है वह बाँस यह पतली सी केन है।

❀

ख़र्च गो सारी कमाई होगई,
लाट साहब तक रसाई होगई।
कौन जाए अब कलब को छोड़ कर,
लेडियों से आशनाई होगई।
हमने यूँ जी खोल कर चन्दे दिए,
माले दौलत की सफ़ाई होगई।
पास आया के जो मैं आया-गया,
ख़ानसामाँ से लड़ाई होगई।

❀

नौकरी मिलने में आसानी नहीं,
पास हो जाना बहुत आसान है।
सर जो टेबुल से कभी उठता नहीं,
क्या किसी अङ्गरेज़ का एहसान है।
"नूह" ईसाई न होते हों कहीं,
आज गिरजा में बड़ा सामान है।

❀

ग़रज़ यह कि पाठक समझ गए होंगे कि हज़रत "नूह" को शायरी में क्या कमाल हासिल है। इस समय उर्दू शायरी में उनका दम ग़नीमत है। जिस क़दर भी नूह साहब की तारीफ़ की जाय, कम है। आप अपने वतन नारा में जब रहते हैं, तो सात बजे से ग्यारह बजे तक अपने शागिर्दों की कविताओं का संशोधन करते हैं। बात की बात में कविता देखते हैं। जो लफ़्ज़ रख देते हैं, वह अपनी जगह पर नगीना का काम देता है। उस्तादी इसी का नाम है। उदाहरण के तौर पर मैं अपने दो-एक शेर नीचे लिखता हूँ। देखिए, उस्ताद साहब शेर को संशोधन करके कितना रोचक कर दिया है :—

तीरे निगाहे यार ख़ुदा की तुझे क़सम—
दिल में लहू रहे न जिगर में लहू रहे।

इसलाह फ़रमाते हैं—

तीरे निगाहे यार अदा की तुझे क़सम
दिल में लहू रहे न जिगर में लहू रहे,

ख़ुदा के शब्द को काट कर अदा रख दिया, तीर के लिए अदा का शब्द लाजवाब है और अपनी जगह नगीना है, यह उस्तादी नहीं तो

(शेष मैटर ३७वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द जी विरूपाक्ष]

देखते-देखते लोगों ने हिजली-काण्ड को तिल का ताड़ बना दिया और इस ज़रा सी बात के लिए ऐसा गुल-गपाड़ा मचाया कि बेचारी नौकरशाही का शिशिरारम्भ का मज़ा ही किरकिरा हुआ चाहता है।

❀

भला बङ्गाल के इस बूढ़े कवीन्द्र को देखो, विश्व-प्रेम का नीरव-निरापद प्रचार छोड़ कर 'हाय हिजली' 'हाय हिजली' कर रहे हैं और शिशिर-वर्णन का सरस कार्य छोड़ कर नीरस 'मर्सियाख़्वानी' में लग गए हैं। दो नवयुवकों के मर जाने से व बीस के घायल हो जाने से ऐसा कौन सा आसमान फट पड़ा था, जिसके लिए लँगड़े भी दीवार फाँदने को उद्यत हो रहे हैं!

❀

अपने राम तो जनाब, इस सम्बन्ध में चिरञ्जीव 'स्टेट्समैन' की दलील के क़ायल हैं कि मानसिक उत्तेजना के समय ऐसा हो ही जाता है। इसमें बेचारे सन्तरियों का कोई अपराध नहीं है, इसलिए इसके लिए उन्हें दण्ड देना ब्रिटिश न्यायशीलता के मुख पर कालिख पोत देना है। हमें आशा ही नहीं, विश्वास भी है कि बङ्गाल की सुशीला सरकार रानी हमारे चिरञ्जीव की बात न टालेंगी।

❀

कुछ बाल की खाल निकालने वाले कठदलीलियों का कहना है कि अगर मानसिक उत्तेजना के समय किसी को मार डालना अपराध नहीं है तो ख़ूनियों को फाँसी क्यों हो जाती है? क्या ख़ून करने के समय उनमें मानसिक उत्तेजना नहीं हुआ करती? हुआ करती है भाई साहब, परन्तु इन सब बातों का सम्बन्ध मनुष्य और मनुष्यत्व है और यहाँ इन दोनों में से कुछ भी नहीं। क्यों, क्या समझे?

❀

हिजली के कैम्प-जेल में जो क़ैद थे, वे राजबन्दी थे, जिन्होंने उन पर मानसिक उत्तेजना के कारण गोलियाँ दाग़ी थीं, वे सरकार के कर्मचारी हैं। ये बने हैं, मारने के लिए और उनकी सृष्टि हुई है मरने के लिए। दोनों ने अपने-अपने कर्तव्यों का पालन किया है। कुछ काले मर गए तो अच्छा ही हुआ।

❀

हमारे उपर्युक्त चिरञ्जीव चूँकि दया और करुणा की पिटारी हैं, इसलिए हिजली-काण्ड की सरकारी रिपोर्ट में सन्तरियों के विरुद्ध अभिमत देख कर बेचारे विचलित हो रहे हैं और डर रहे हैं कि बङ्गालियों के हो-हल्ला मचाने के कारण इस महँगी के ज़माने में श्रीमती सरकार भावावेश में आकर उन पर कुछ दो-चार रुपए जुर्माना आदि न कर दें। इसीसे बेचारे अभी से उन्हें सत्पथ पर लाने की साधु-चेष्टा में लग गए हैं। वास्तव में चिरञ्जीव बड़े दूरन्देश हैं।

❀

इसके अलावा, इधर कवीन्द्र ने और उधर महात्मा गाँधी ने भी इस ज़रा सी बात के लिए श्रीमती सरकार की न्यायपरता को ललकार डाला है। ऐसी हालत में चिरञ्जीव का चौकन्ना हो जाना तो अत्यावश्यक ही ठहरा। क्योंकि कुल-मर्यादा की रक्षा तो होनी ही चाहिए।

❀

'राजबन्दी' नामधारी वे अभागे युवक! हिजली में किस अपराध के कारण क़ैद थे, यह तो शायद अल्लाह मियाँ को भी मालूम न होगा, परन्तु इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि जिस तरह मौ० शौकत से लेकर अम्बेदकर तक सरकार द्वारा 'मनोनीत' भारत के प्रतिनिधि हैं, उसी तरह वे युवक भी सरकार की पुलिस द्वारा 'मनोनीत' (?) सरकार के शत्रु हैं। ऐसी दशा में सन्तरियों ने उन्हें मार कर और घायल करके सरकार का उपकार ही किया है। फलतः वे पुरस्कार के पात्र हैं, न कि तिरस्कार के।

❀

अच्छे रहे, चटगाँव-काण्ड के चतुर जाँचकर्त्ता, जिन्होंने अभी तक अपनी रिपोर्ट ही नहीं दाख़िल की। बेचारों ने सचमुच बड़ी दूरन्देशी से काम लिया है और चिरञ्जीव 'स्टेट्समैन' का काम भी हलका कर दिया है। क्योंकि आख़िर चटगाँव के उपकारियों की चिन्ता भी तो बेचारे को इसी समय करनी पड़ती। और आश्चर्य नहीं कि दोतरफ़ी चिन्ता की गरमी से दया का कुण्डह ही सूख जाता।

❀

कुछ आँखों के अन्धे, पर नाम नयनसुखों का कहना है कि लण्डन की गोरखधन्धा कॉन्फ़्रेन्स विफल हो गई, परन्तु भगवती विजया की कृपा से हिज़ होलीनेस को मालूम हो गया है कि इस कॉन्फ़्रेन्स में बी-ब्रितानियाँ की एकदम पौ बारह रहेगी और ऐसी सफलता प्राप्त होगी कि जैसी मि० जॉनबुल के बाप ने भी कभी प्राप्त न की होगी।

❀

अब तक तो बूढ़े भारत की सद्गति के लिए केवल 'दाढ़ी-चोटी-सम्मेलन' करा कर ही सन्तोष कर लिया जाता था, परन्तु अब बी-कॉन्फ़्रेन्स की सफलता की बदौलत 'चोटी-चोटी'-सम्मेलन भी हुआ करेगा। अर्थात्—आवश्यकता पड़ने पर 'अम्बेदकरी दल' भी अखाड़े में उतारा जाएगा। बी-ब्रितानियाँ हैं कि कोई खेलवाड़ हैं। उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाने वाली हैं। यार लोग ताकते ही रह गए और बीबी ने बाज़ी मार ली।

❀

रङ्ग गहरा गँठा है जनाब, भारत के साथ ही लगे हाथ मध्य एशिया की छाती पर भी अनादि काल तक बालडान्स की व्यवस्था हो रही है। बक़ौल डॉक्टर सय्यद महमूद, अरब के जेरुसलम में बी-ब्रितानियाँ के आँचल की छाया में कोई ख़िलाफ़त क़ायम होगी, हमारे मोटे-मोटे मौलाना डिप्टी ख़लीफ़ा होकर अपनी नवीन लीला आरम्भ करेंगे और मध्य एशिया के 'पेट्रोल-क्षेत्रों' पर बी साहबा का अधिकार रहेगा।

❀

एक तो ठाले का दिन, दूसरे ख़िलाफ़त न रहने से ख़िलाफ़त के नाम पर कोई कुछ देता नहीं, अथच मौलाना की मूज़ी की क़ब्र सी तोंद को माले-मुफ़्त दिले बेरहम का चसका लग चुका है, इसलिए ख़िलाफ़त क़ायम करने के लिए उन्हें भी बी-ब्रितानियाँ की मदद की आवश्यकता है। उधर पुराने ख़लीफ़ा भी फ़्रान्स के 'कुफ़्रिस्तान' में विगत ख़िलाफ़त के मज़े की याद कर-करके होंठ चाट रहे हैं। तात्पर्य यह कि ठठेरे-ठठेरे बदलौअल का पूरा तार है।

❀

बड़ा मज़ा रहेगा, भारत की भावी व्यवस्थापिका सभाओं में फ़ी सैकड़ा डेढ़ सौ जगहें ब्रितानियाँ के अल्प-संख्यक लाड़लों (अर्थात् मुसलमान, एँग्लो-इण्डियन और अछूत आदि) को मिलेंगी। बीबी साहबा मेथेमेटिक्स की एक नवीन 'थ्यूरी' संसार के सामने उपस्थित करेंगी, संसार के हिसाबियों को चाहिए कि अभी से मुँह बाकर इस थ्यूरी के इन्तज़ार में लग जाएँ।

❀

जिस तरह श्रीमती एनी बेसेण्ट ने मद्रासी कुमार मि० कृष्णमूर्ति को जगद्गुरु बना कर ही दम लिया था, उसी तरह मौ० शौकतअली भी निज़ाम-कुमार को ख़लीफ़ा बनाने की फ़िक्र में लग गए हैं। बिस्मिल्ला हो चुकी है—उद्योग-पर्व आरम्भ है। भावी ख़लीफ़ा, भूत ख़लीफ़ा के घर—नीस (फ़्रान्स) पहुँच गए हैं। सम्भवतः कोर्टशिप आरम्भ है। मुबारक! मुबारक!!

❀

(नाख़ुदाए सख़ुन हज़रत 'नूह' नारवी)

(३९वें पृष्ठ का शेषांश)

फिर क्या है। अब शेर कहाँ से कहाँ पहुँच गया। और सुनिए। मेरा शेर है—

जब बगूला दश्त में उठ कर कहीं ऊँचा हुआ,
क़ैस यह समझा कि बस लैला इसी महमिल में है।

इस शेर को यूँ बनाया और ख़ूब बनायाः—

जब बगूला दश्त में उठ कर ज़रा ऊँचा हुआ,
क़ैस यह समझा कि बस लैला इसी महमिल में है।

कहीं की जगह पहले मिसरे में ज़रा कर दिया। क्या से क्या शेर बन गया।

आप अपने शागिर्दों को बहुत मानते भी हैं, उनसे बिलकुल बेतकल्लुफ़ रहते हैं। हिन्दू और मुसलमान, दोनों आपके शागिर्दी में दाख़िल हैं। तअस्सुब तो आप में नाम को भी नहीं है। बड़े ज़िन्दा-दिल और मिलनसार हैं। एक मामूली शायर की कविता सुन कर आप बेहद तारीफ़ करते हैं। उस्ताद वह जो अपने शागिर्द को शायरी में उस्ताद बनाए। लेख तूल हो जाने के भय से अब मैं ख़तम करता हूँ और ईश्वर से दुआ करता हूँ कि हज़रत "नूह" नूह की उमर पावें!

❀ ❀

दिल्ली से ख़बर आई है कि श्रीमान वायसरॉय महोदय के भ्रमणार्थ कन्जूस कमिटी (फ़ायनेन्स कमिटी) ने उन्हें एक व्योमयान प्रदान करने की सलाह दी है। कमिटी का कहना है कि इससे वायसरॉय के भ्रमण का ख़र्च बहुत कम हो जायगा। ख़ैर, वायसरॉय महोदय की स्पेशल ट्रेन की मरम्मत में प्रायः पौन लाख स्वाहा हो जाने से यह विचरण-ख़र्च में कमी की सूझ समयोचित ही कही जायगी।

❀

इससे व्योम-विहार भी होगा और थोड़े ख़र्च में वायसरॉय महोदय यात्रा भी कर सकेंगे। परन्तु सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि हमारे वायसरॉय कमबख़्त डायनों की नज़र लगने से बचे रहेंगे। इसलिए श्रीजगद्गुरु का विमल अन्तःकरण इस सद्युक्ति के लिए श्रीमती कन्जूस कमिटी को धन्यवाद देने के लिए बाध्य है।

❀

मगर जनाब आली, थोड़े ख़र्च में उड़ने का सुन्दर साधन—जैसा कि अपने राम का युग-युगान्तर का अनुभव है—विजय-व्यवहार के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। पिस्ता, बादाम, गोलमिर्च और गुजराती इलायची के साथ ठिकाने से घुटी हुई विजया का एक बनारसी पुरवा जमा लीजिए, न कहीं आने-जाने की ज़रूरत, न उठने-बैठने की—बस, लेटे ही लेटे, और कुल ढाई घण्टे में, भूः भुवः और स्वः आदि सातों लोकों की सैर कर लीजिए।

❀

इसलिए हमारी राय है कि अगर उपर्युक्त कन्जूस-कमिटी ने शासन-व्यय घटा कर भारत को निहाल कर देने का मुसम्मिम इरादा कर लिया है (जैसा कि उसकी आज तक की कार्रवाइयों से विदित हो चुका है) तो उसे हिज़ होलीनेस के इस कम ख़र्च बाला-नशीन नुसख़े की एक बार अवश्य आज़माइश करनी चाहिए।

❀

भगवती विजया अपने 'छनक्कड़ों' अर्थात् उपासकों पर कृपा भी वैसी ही रखती हैं, जैसी सखी नौकरशाही सम्प्रदायवादियों पर रखती हैं। नज़र लगना तो दर-किनार, अगर छनक्कड़ चाहें तो एक यमराज को भी अँगूठा दिखा दें।

❀

सुनते हैं, भारत-सचिव सर सेमुअल होर ने अपने मन की बात चुपके से दादा सप्रू के कान में बता दी है। ख़बरों से मालूम होता है कि श्रीमती ब्रिटिश सरकार ने एकदम थैली खोल दी है और भारतवासियों को सर्वस्व दे देना चाहती है। केवल सौभाग्य-चिन्ह (जैसे काजल, सिन्दूर, चूड़ी और रङ्गीन साड़ी) स्वरूप अर्थ-प्रबन्ध, मुद्रा, सेना और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था, बस यही चार चीज़ें अपने लिए रक्खेंगी। ठीक ही है, अहिवाती गृहस्थिन के लिए कम से कम ये चीज़ें तो चाहिए ही।

❀

फिर अबोध बालकों के हाथ में रुपया-पैसा दे देना कोई बुद्धिमानी तो नहीं है। कहीं खेल-कूद में खो दें या दीवाली के छक्के-पौके फेर में हार बैठें तो बेचारी की सात पुश्तों की कमाई हुई रक़म डूब जाय। आख़िर उन्हें भी तो बुढ़ौती निभाना है कि नहीं। इस कलियुग में आयु की कोई मर्यादा नहीं। ईश्वर न करे, कहीं क़िस्मत ने धोका दिया और वैधव्य का सामना करना पड़ा तो चार पैसे पल्ले रहेंगे तो वक़्त पर काम दे जाएँगे।

❀

सेना, हथियार—छुरी-कटारी—कोई हँसी-खेल की चीज़ें नहीं हैं। कहीं ठाँव-कुठाँव लग गया तो हल्दी-चूना ढूँढ़ते फिरो। इसी से चतुरा गृहिणियाँ बाल-बच्चे वाले घरों में इन ख़तरनाक चीज़ों से हमेशा सावधान रहती हैं। फिर जब बचुआ, बड़े होकर हथियार पकड़ना सीख लेंगे तो बेचारी अपने आप सब कुछ सौंप देंगी। और क्या, धन-दौलत, हाथी-घोड़ा और तलवार-बन्दूक़ अपने साथ चिता पर थोड़े ही लेती जाएँगी।

❀

पड़ोसी एक से एक बढ़ कर चघड़ हैं बाबा! कोई बोलशेविज़्म का फन्दा लिए फिरता है और कोई ख़तना कर डालने के लिए छुरी तेज़ कर रहा है। अबोधों को फुसला, माल ऐंठ लेते इन्हें देर ही क्या लगेगी? बस, रेवड़ी या बताशे का लालच देकर सारी जमा-पूँजी हड़प कर लेंगे। इसीलिए श्रीमती जी अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था अपने हाथ में रखना चाहती हैं। अन्यथा सांसारिक झमेलों से छुट्टी पाकर बुढ़ौती के स्वल्प समय को भगवद्चिन्तन में बिताने की अभिलाषा किसे नहीं होती।

❀

इसलिए सहयोगी 'आज' की राय से कोर्टशिप करके श्रीजगद्गुरु भी इसी सिद्धान्त पर पहुँचे हैं कि बूढ़े लँगोटी बाबा अब अपनी झोंपड़ी में लौट आवें और श्रीमती ब्रितानिया के अचल सौभाग्य के लिए सत्य और अहिंसा की माला फेरना आरम्भ कर दें। क्योंकि बाबा जी जब तक अपना प्रचुर तप-फल श्रीमती की अठखेलियों पर निछावर न कर देंगे, तब तक उनके हृदय की वात्सल्य-बाढ़ न रुकेगी।

❀

बात यह है कि उनकी उमर चाहे अधिक हो गई हो, परन्तु जवानी की वह चुलबुलाहट ज्यों की त्यों है, 'चहल साल उमरे अज़ीज़त गुज़श्त, मिज़ाजे तो अज़ हाल तिफ़्ली न गश्त'❀ की अवस्था है। वही अठखेलियाँ, वही अल्हड़पन, वही 'आँखमुदौअल' के वक़्त की लुका-छिपी और किसी की न सुन कर अपने मन की करते जाना! हाय रे तिफ़्ली (लड़कपन), कमबख़्त इस बूढ़े दढ़ियल को तो कभी का छोड़ कर चली गई, परन्तु सखी से चिपकी ही रह गई!

❀

ज़ोम में आकर गाँधी-इर्विन समझौते को जन्मते ही ऐसी ठोकर जमाई कि कमबख़्त रद्दी की टोकरी में पड़ा-पड़ा अन्तिम साँसें ले रहा है। उधर लण्डन में महात्मा गाँधी से समझौते की बातें हो रही हैं, इधर शिमला-शिखरस्थ वायसरॉय ऑर्डिनेन्स के अण्डे दे रहे हैं, जिनकी संख्या पौन दर्जन तक पहुँच चुकी है। मार, धर, जेल और जुर्माने के बाज़ार भी पूर्ववत् गर्म हैं। बीच-बीच में हिजली और चटगाँव काण्ड की भी सृष्टि हो जाती है। ग़र्ज़ कि बारहमासी ईद मची हुई है।

❀

इन लक्षणों से तो यही मालूम होता है कि अभी खेल तमाशे से उनका मन नहीं भरा है। जीवन के सारे दिन ऐशो-इशरत और उछल-कूद में ही व्यतीत कर देना चाहती हैं। न बदनामी का डर है, न लोक-लज्जा की परवाह। एक क्षण भी चैन से बैठना मन्ज़ूर नहीं। फलतः श्रीजगद्गुरु को तो अब यह निर्भ्रान्त धारणा हो गई है कि:—

ठोकरें खिलवाएगी यह चाल इठलाई हुई।

❀

❀ उमर के चालीस बरस बीत गए, परन्तु अभी तक लड़कपन नहीं गया।

बातचीत

एजेण्टों से—

आवश्यक सूचना

एजेण्टों को सूचित किया जाता है कि वह अक्टूबर मास की बिक्री का रुपया तुरन्त ही भेज दें। रुपया न मिलने के कारण कॉपियाँ भेजने में असुविधा होती है। एजेण्टों को रुपया भेजने की ओर अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

अब बिल भेजने का नियम उठा दिया गया है, एजेण्ट स्वयम् हिसाब बना कर रुपया भेजा करें। जिनका रुपया नहीं रहेगा, हम 'भविष्य' की प्रतियाँ बिना किसी सूचना के भेजना बन्द कर देंगे, यह बात एजेण्टों को स्मरण रखनी चाहिए।

निम्न-लिखित एजेण्टों का रुपया हमें २६-१०-३१ से ५-११-३१ तक के सप्ताह में बिक्री के हिसाब में मिला है :—

१—श्रीयुत चिं० ला० जी, रायपुर ... ५०)
२—श्री० आर० एच० वर्मा, कल्याण ... ३)
३—श्री० एम० टी० हुसैन, मुँगेर ...११॥=)
४—श्री० ब० ला० माली, दरभङ्गा ... ११।–)
५—श्री० ही० ला०, खण्डवा ... १०)
६—श्री० ला० मो०, सुल्तानपुर ... १४–)
७—श्री० म० प्र० खत्री, बलरामपुर ... २५)
८—श्री० मि० ला०, चन्दौसी ... ३॥=)
९—श्री० ब० रा० दास, फ़ैज़ाबाद ... १०)
१०—मेसर्स सिंहल कं०, अलीगढ़ ... १०)
११—श्री० बा० रा० गोयल, रुड़की ... १०)
१२—मेसर्स ई० ली० जोशी, हापुड़ ... ७=)
१३—मेसर्स गौ० शं० रा० गो०, शाहजहाँपुर ११॥–)

ग्राहकों से—

निम्नाङ्कित ग्राहकों का पता बदल दिया गया है :—
२६३७, ३१४६, १२२४, २३१४, २५०६, ६२६ और १०५४।

निम्नाङ्कित ग्राहकों को नीचे लिखे अङ्क दुबारा भेजे गए हैं :—

५२ वाँ—२२७१ और १३६८
५३ वाँ—२२२८
५४ वाँ—२१४०, २२२८, २६०२, २६६८ और २३७६। ४७,४८,४९ और ५० वाँ—२५५३

गत सप्ताह में २९ अक्टूबर से ५ नवम्बर तक निम्न-लिखित 'भविष्य' के नवीन ग्राहक हुए हैं। जिन-जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ है, उनका नाम तथा ग्राहक-नम्बर के साथ चन्दे की रक़म नीचे दी जा रही है। ग्राहकों से प्रार्थना है कि वे अपना ग्राहक-नम्बर स्मरण रक्खें तथा पत्र-व्यवहार के समय इसे लिखना न भूलें, ताकि उचित कार्यवाही करने में किसी भाँति का विलम्ब न हो।

३२४१—बा० कुञ्जबिहारी सिंह, पुसड (यवतमहाल) ... ... १२)
३२४२—श्री० कालूराम जी सेठ, जयपूर स्टेट ... ६॥)
३२४३—श्री० सेक्रेटरी जैन स्वेताम्बर पब्लिक लायब्रेरी, लखनऊ ... ... १०)
३२४४—पं० सागरमल शर्मा, बहावलपूर स्टेट ... ६॥)
३२४५—श्री० मोतीचन्द्र ढढिडया, जयपूर ... १२)
३२४६—ठा० बिहारी सिंह, जी बलिया ... ३॥)
३२४७—पं० मोतीराम हसीपाव (बर्मा) ... ६॥)
३२४८—सेठ रामगोपाल प्रबन्धकर्ता, मेरठ ... ३॥)

गत सप्ताह में 'भविष्य' के निम्न-लिखित पुराने ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ। जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त हुआ है, उनका ग्राहक-नम्बर तथा चन्दे की रक़म नीचे दी जा रही है :—

ग्राहक नं०	प्राप्त रक़म
२१८०	६)
२५२२	६॥)
२५९९	६॥)
२९५४	३॥)
२६४८	३॥)
२६५३	६॥)
२६००	६॥)
३०२९	६॥)
२६६२	६॥)
२९५२	३॥)
२६६३	६॥)
६२९	१२)

❀

आर० एल० बर्मन कम्पनी की

सुप्रसिद्ध पुस्तकें हमसे मँगाइए !

पुस्तक	मूल्य
चीना सुन्दरी	१।।।)
जर्मन षड़यन्त्र	१।।)
ताया का ख़ून	।)
भक्त सूरदास	१)
वीर चरितावली	१)
जेल-रहस्य	१।।।)
भीषण भण्डाफोड़	।।)
राजर्षि प्रह्लाद	१।।
काला साँप	।=)
काला कुत्ता	।।)
ख़ूनी औरत	१।)
बालक श्रीकृष्ण	१।)
वीर अभिमन्यु	१)
दारोग़ा का ख़ून	१।)
घटना-चक्र	२।)
जासूस की डायरी	१।)
जर्मन जासूस	१।।)
ख़ूनी सरपञ्च	।।।)
शिशुपाल बध	२।।)
चण्डाल चौकड़ी	१।।।)
सोहराब रुस्तम	१।)
जासूसी चक्कर	२।।)
धन-कुबेर	१।।।)
पिशाचिनी	१।।।)
गुलाब में काँटा	१।।।)
चोर चौकड़ो पर	।-)
अदल-बदल	।)
चित्रकाव्य (राजसंस्करण)	२।।)
कीचक बध	।।=)
नया महल	१)
जासूस के घर ख़ून	१।।)
राजसिंह	२।)
आर्य-महिला-रत्न	२)
कोहेनूर	१।।)
जासूसी पिटारा	।।।)
सचित्र बालरामायण	।।।)
चित्रकाव्य (साधारण)	२।।)
महाराष्ट्र वीर	१)
जासूसी कुत्ता	१।।)
आत्महत्या	।।।)
नक़ली रानी	१।)
बनवीर	१।।)
जासूसी कहानियाँ	।।=)
नवरत्न	१।।)
सती सीता	।।=)
गोपालन शिक्षा	।।)
लाल क्रान्ति	२।।)
विजय किसकी ?	१।।)
आख़िरी दुश्मन	१।।।)
बोलशेविक रहस्य	१।।)
कापालिक डाकू	१।।)
सती शकुन्तला	।।=)
नराधम	१=)
सुन्दरी अमेलिया	१।।।)
विचित्र वाराङ्गना	१=)
टर्की का क़ैदी	१।।।)
शीश महल	२)
सती दमयन्ती	।।-)
क़ैदी की करामात	१।।)
डॉक्टर साहब	१।।
जवाहरात का गोला	।।)
गाँधी-गीता	२)
दुर्गादास	१।।)
रणभूमि का रिपोर्टर	१।।।)
वीर व्रतपालक	२।)
सती सावित्री	।।≡)
शिव सती	।।=)
राजा साहब	।।)
अरब सरदार	।।)
घर का भेदिया	।।)
सच्चा मित्र	।।=)
अङ्गरेज़ डाकू	१=)
भीषण डकैती	१।।)
हवाई क़िला	१।।)
दुरङ्गी दुनिया	=)
भीषण भूल	।=)
मुस्लिम महिला-रत्न	२।)
अमीरअली ठग	।।।=)
योगिनी	।।)
चतुर जासूस	।।।)
हवाई जहाज़	१।।।)
लोकमान्य तिलक	१)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय,
चन्द्रलोक—इलाहाबाद

यदि धन और ज़ेवर सुरक्षित नहीं

हैं तो आज ही हमारे कारख़ाने का अङ्गरेज़ी सूचीपत्र मँगाइए। इस कारख़ाने में हर तरह की, हर साइज़ की और हर दाम की लोहिया तिजोरी, अलमारी, टैंक्स् (ऑइल इञ्जिन) के लिए तथा घरू काम के मिलते हैं, मज़-बूत ताला-चाबी भी मिलता है। यह तिजोरी ऐसी है कि चोर लाख कोशिश करे, मगर तोड़ नहीं सकता, न आग में जल सकती है।

जी० घोष एण्ड को, ६४ हरीसन रोड, कलकत्ता
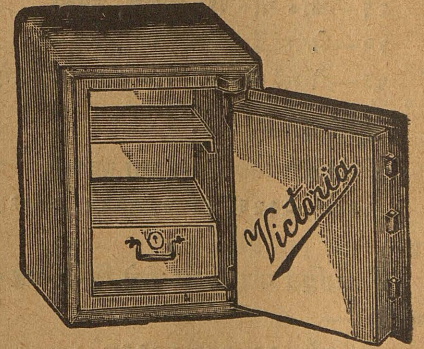
चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं रही !
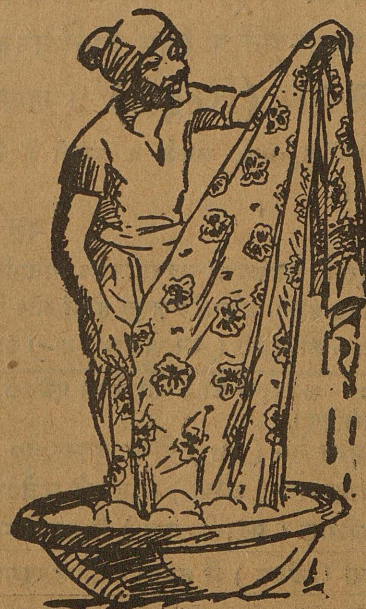
आप "निरमोलिन" से अपने रेशमी, ऊनी आदि सब प्रकार के रङ्गीन और मुलायम कपड़े आसानी से धो सकते हैं। इसमें किसी प्रकार की हानिकारक वस्तु नहीं मिली हुई है !

हर जगह मिल सकती है।

कलकत्ता सोप-वर्क्स
(हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी सोप-फ़ैक्टरी)
बालीगञ्ज, कलकत्ता

लन्दन-प्रवासी जिन डॉक्टर धनीराम प्रेम की कहानियों को पढ़ने के लिए 'चाँद' और 'भविष्य' के पाठक उत्सुक रहते हैं, जिनकी पहली ही कहानी 'डोरा' ने कहानी-संसार में हलचल मचा दी थी, 'बल्लरी' उन्हीं की ग्यारह सरस सुन्दर कहानियों का संग्रह है। इसकी 'डोरा' कहानी में जहाँ आप करुणा की आहत सिसकियों से तड़प उठेंगे, 'कहानी-लेखक' में हास्य और कौतूहल का सामञ्जस्य देख कर अवाक् रह जायँगे, वहीं 'वेश्या का हृदय' और 'वह मुस्कान' में अन्तर के घात-प्रतिघातों का चित्र देख कर आपको स्तम्भित रह जाना पड़ेगा। 'चाँद' और 'भविष्य' में छपी हुई कई कहानियों के अतिरिक्त इसमें 'वह मुस्कान', 'गीत' और 'डोरा का रूमाल' आदि कई नई कहानियाँ भी हैं। जिन्होंने डोरा नाम की कहानी पढ़ी है, वे यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि 'डोरा के रूमाल' का क्या हुआ। यह बात पाठकों को 'डोरा का रूमाल' कहानी पढ़ने पर ही मालूम होगी और यह कहानी इसी पुस्तक में पढ़ने को मिल सकेगी।

अञ्जलि

तेजरानी पाठक बी.ए.

यह उन अनमोल कहानियों का संग्रह है, जो आज तक हिन्दी-संसार में अप्राप्य थीं। इसकी प्रत्येक कहानी अत्यन्त रोचक, मधुर एवं अमूल्य है। जिस विषय को लेकर देवी जी ने कहानी प्रारम्भ की है, उसका सजीव चित्र दिखला दिया है। किसी कहानी में दीनता की करुण पुकार है, तो किसी में वीर-रस की धारा प्रवाहित हो रही है। किसी में दाम्पत्य प्रेम का स्वर्गीय आनन्द उमड़ रहा है, तो किसी में मातृ-भूमि का आर्तनाद एवं उसकी दयनीय विवशता देख कर हृदय छटपटा उठता है और देशभक्ति की उमङ्ग से मनुष्य पागल-सा हो उठता है। अधिक प्रशंसा न कर, हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी कहानियाँ आपने आज तक न पढ़ी होंगी। भाषा ऐसी सरल एवं मधुर है कि एक छोटा सा बच्चा भी आनन्द उठा सकता है। पुस्तक छप रही है, शीघ्र ही प्रकाशित होगी। अभी से ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा लीजिए!

व्यवस्थापक—'चाँद' कार्यालय,
चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—2085

उपन्यास-प्रेमियों के लिए एक नूतन उपहार !

[अत्यन्त मनोहर, मौलिक, सामाजिक उपन्यास]

सांसारिक आपत्तियों में डूबे हुए मनुष्यों के लिए यह उपन्यास ईश्वरीय सन्देश है। विपत्ति-काल में मनुष्य को किस प्रकार स्थिर-चित्त, शान्त, सहिष्णु, धैर्यवान तथा धर्मनिष्ठ होना चाहिए; शत्रुओं के प्रहार सहते हुए उनके प्रति कैसे पवित्र भाव रखने चाहिए; दीनता का ताण्डव-नृत्य होने पर भी प्रसन्नतापूर्वक त्याग-व्रत लेकर किस प्रकार लोक-सेवा तथा परोपकार के लिए उद्यत रहना चाहिए; और इसके फल-स्वरूप किस प्रकार सारी आपत्तियाँ स्वर्ग-सुख में परिणत हो जाती हैं, इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन आपको इसमें मिलेगा। जो मनुष्य किसी समय एक दीन-हीन व्यक्ति के ख़ून का प्यासा था, दैवी संयोग से वह किस

छपाई-सफ़ाई अत्यन्त सुन्दर व दर्शनीय ! मूल्य केवल लागत मात्र !

पुस्तक छप रही है ! अभी से ऑर्डर रजिस्टर्ड करा लीजिए !

प्रकार अपना सारा वैभव उसके चरणों में अर्पण करके संन्यास ग्रहण कर लेता है तथा आपत्तियों का क्रीड़ास्थल—एक दरिद्र की कुटी किस प्रकार विवाह-मन्दिर बन जाती है, इसका अद्भुत रहस्य पुस्तक पढ़ने से ही मालूम होगा।

स्त्रियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। अपर्णा देवी का चरित्र पढ़ कर प्रत्येक स्त्री अपना जीवन सफल बना सकती है। उसका आदर्श पति-प्रेम, सेवा-भाव एवं दारुण परिस्थिति में सर्वदा प्रसन्न रहते हुए, पति को धैर्य एवं साहस प्रदान कर, क्षण-मात्र के लिए भी दुखी न होने देना वे अलौकिक गुण हैं, जिन्हें प्रत्येक भारतीय रमणी को हृदयङ्गम करना चाहिए। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल है, जिसे छोटा सा बच्चा भी समझ सकता है। वर्णन-शैली अत्यन्त मनोहर है। पुस्तक छप रही है; शीघ्र ही प्रकाशित होगी। अभी से ऑर्डर रजिस्टर्ड करा लीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक—इलाहाबाद

Edited, Printed and Published by Shrimati Lakshmi Devi, at The Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.